بسم اللہ الرحمٰن الرحیم نحمدہٗ ونصلی علیٰ رسولہ الکریم وعلیٰ عبدہ المسیح الموعود

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ

साप्ताहिक
बदर
क़ादियान
Weekly Badar Qadian
HINDI

विशेष अंक : सीरतुन्नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

अल्लाह तआला का आदेश

قُلْ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنِّيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ جَمِيْعًا الَّذِيْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ الَّذِيْ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَكَلِمٰتِهٖ وَاتَّبِعُوْهُ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ﴿۱۵۹﴾ (سورۃ الاعراف:159)

अनुवाद : आप कह दीजिए कि हे लोगो! निश्चय ही मैं तुम सबकी ओर अल्लाह का रसूल हूँ। उसी के अधिकार में आसमानों और ज़मीन की बादशाहत है। उसके सिवा कोई भी पूज्य नहीं है। वही जीवन देता है और वही मृत्यु देता है। इसलिए अल्लाह पर और उसके उम्मी नबी रसूल पर ईमान लाओ, जो अल्लाह और उसके सभी कलिमात (वचनों) पर ईमान रखते हैं, और उन्हीं का अनुसरण करो, ताकि तुम हिदायत पा सको।

संपादक : शेख मुजाहिद अहमद | उप संपादक : सय्यद मोहियुद्दीन फ़रीद | वर्ष- 11 | अंक -30-31 | 08-15 सफ़र 1448 हिज्री कमरी, 23-30 वफ़ा 1405 हिज्री शम्सी, 23-30 जुलाई 2026 ई.

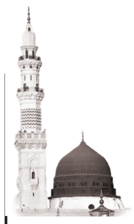

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वाणी

विश्वासघात करना मुनाफ़िक़ (कपटी) की निशानियों में से एक निशानी है

عَنْ زِيَادٍ، قَالَ سَمِعْتُ الْمُغِيرَةَ بْنَ شُعْبَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ يَقُولُ: قَامَ النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَتّٰى تَوَرَّمَتْ قَدَمَاهُ فَقِيلَ لَهُ غَفَرَ اللّٰهُ لَكَ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِكَ وَمَا تَأَخَّرَ، قَالَ أَفَلَا أَكُونُ عَبْدًا شَكُورًا

अनुवाद: हज़रत मुगीरा बिन शुबा रज़ि. से रिवायत है। उन्होंने फ़रमाया कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम रात में (इबादत के लिए) इतनी देर तक क़ियाम करते थे कि आपके दोनों मुबारक पाँव सूज जाते थे। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से अर्ज़ किया गया, "अल्लाह तआला ने तो आपके पहले और बाद के सभी गुनाह माफ़ फ़रमा दिए हैं, फिर आप इतनी कठिन मेहनत क्यों करते हैं?" आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "तो क्या मैं अल्लाह का शुक्रगुज़ार बंदा न बनूँ?" (सहीह बुख़ारी, किताबुत-तफ़्सीर, बाब: लियग़फ़िरा लकल्लाहु मा तक़द्दमा, हदीस संख्या 4837)

हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम इमाम मेहदी - मसीह मौऊद का उपदेश

नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की समस्त नबियों पर श्रेष्ठता मेरे ईमान का सबसे बड़ा हिस्सा है

उस समय तक बहुत-से नबी गुज़र चुके थे। यदि वे सब के सब एक साथ इकट्ठे होकर वह कार्य और वह सुधार करना चाहते, जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने किया, तो भी वे हरगिज़ उसे पूरा नहीं कर सकते थे। उनमें वह दिल और वह शक्ति नहीं थी, जो हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को प्रदान की गई थी। यदि कोई कहे कि यह नबियों के बारे में (मआज़ल्लाह) बेअदबी है, तो वह नासमझ व्यक्ति मुझ पर झूठा आरोप लगाएगा। मैं नबियों की इज़्ज़त और सम्मान करना अपने ईमान का एक हिस्सा समझता हूँ, लेकिन नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की समस्त नबियों पर श्रेष्ठता मेरे ईमान का सबसे बड़ा हिस्सा है और यह बात मेरे रग-रग में बसी हुई है। यह मेरे वश में नहीं कि मैं इसे अपने दिल से निकाल दूँ।

बदनसीब और सत्य को न देखने वाला विरोधी जो चाहे कहे, लेकिन हमारे नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने वह कार्य किया है, जो न कोई नबी अकेले कर सकता था और न सब मिलकर कर सकते थे। और यह अल्लाह तआला का अनुग्रह है। "ज़ालिका फ़ज़्लुल्लाहि यु'तीहि मय्यशा" (यह अल्लाह का अनुग्रह है, जिसे वह चाहता है प्रदान करता है।) (मलफ़ूज़ात, जिल्द 2, पृष्ठ 174)

तौहीद (एकेश्वरवाद) की स्थापना के लिए रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शिक्षा

हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहिब, ख़लीफ़तुल मसीह द्वितीय रज़ि. फ़रमाते हैं:

तौहीद (एकेश्वरवाद) की स्थापना के लिए रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सबसे पहले जो बात प्रस्तुत की, वह ऐसा महत्वपूर्ण सिद्धांत है, जिसके बारे में आज भी दुनिया पूरी तरह नहीं समझ सकी कि उसका तौहीद से क्या संबंध है। वह सिद्धांत यह है कि रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अल्लाह तआला से ज्ञान प्राप्त करके यह घोषणा की कि पूरी दुनिया में अलग-अलग समय पर नबी आते रहे हैं। ऊपरी तौर पर देखने से यह बात तौहीद से जुड़ी हुई दिखाई नहीं देती, लेकिन वास्तव में इस बात को स्वीकार किए बिना तौहीद सिद्ध ही नहीं हो सकती। जब तक यह न माना जाए कि मिस्र, ईरान, भारत, चीन, जापान, यूरोप और अमेरिका में भी अल्लाह तआला ने नबी भेजे, तब तक पूर्ण तौहीद स्थापित नहीं हो सकती। रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस बात पर बहुत अधिक ज़ोर दिया है। इसलिए क़ुरआन में आता है: "इन् मिन उम्मतिन् इल्ला ख़ला फ़ीहा नज़ीर।" (सूरह फ़ातिर: 25)अर्थात कोई भी ऐसी क़ौम नहीं गुज़री जिसमें अल्लाह का कोई चेतावनी देने वाला (नबी) न आया हो।

फिर अल्लाह तआला फ़रमाता है: "व-लक़द बअस्ना फ़ी कुल्लि उम्मतिर रसूला।" (सूरह अन-नहल: 37) अर्थात हमने हर क़ौम में एक रसूल भेजा।

इसके साथ ही तौहीद का उल्लेख करते हुए अल्लाह तआला फ़रमाता है: "अनिअबुदुल्लाह वज्तनिबुत-तागूत।"

अर्थात हमने रसूल इसलिए भेजे कि वे लोगों को सिखाएँ कि केवल अल्लाह की इबादत करो और अल्लाह के सिवा जिनकी पूजा की जाती है, उनसे बचो।

इस प्रकार रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दुनिया के सामने यह सिद्धांत प्रस्तुत किया कि यह कहना गलत है कि केवल हमारे ही बीच सत्य आया और बाकी पूरी दुनिया को अल्लाह ने छोड़ दिया था। सच्चाई यह है कि कोई भी ऐसी क़ौम नहीं गुज़री जिसमें नबी और रसूल न आए हों।

(भाषण: हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद, ख़लीफ़तुल मसीह द्वितीय रज़ि., दिनांक 2 जून 1929, जलसा सीरतुन्नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम, क़ादियान)

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनसिहिल अज़ीज़ सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़ज़्ल नाज़िल करता रहे। आमीन

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सीरत-ए-नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ईमान बढ़ाने वाले उल्लेख

संपादकीय

सीरत-ए-नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ईमान बढ़ाने वाले उल्लेख

ख़िलाफ़त-ए-ख़ामिसा (पाँचवीं ख़िलाफ़त) का यह मुबारक दौर, सरवर-ए-कायनात हज़रत मुहम्मद अरबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आपके सहाबा-ए-किराम रज़वानुल्लाहि अलैहिम अजमईन के सुंदर उल्लेखों के दृष्टिकोण से अत्यंत महत्वपूर्ण है। पिछले कई वर्षों से हुज़ूर अक़्दस, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा के ईमान बढ़ाने वाले घटनाओं का वर्णन करते आ रहे हैं। उनकी कुर्बानियों के हृदयस्पर्शी उल्लेखों के माध्यम से यह समझाते आ रहे हैं कि हम अहमदी भी अपने जीवन में आध्यात्मिक परिवर्तन उत्पन्न करें और सहाबा-ए-किराम के पदचिह्नों पर चलने का प्रयास करें।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणियों के अनुसार हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का यह दौर भी सहाबा का दौर है। हुज़ूर अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

"अल्लाह तआला ने इस जमाअत को, जो मसीह मौऊद के साथ है, यह दर्जा प्रदान किया है कि वह सहाबा की जमाअत से मिलने वाली है। 'व आख़रीन मिन्हुम लम्मा यल्हक़ू बिहिम' के बारे में मुफस्सिरीन ने स्वीकार किया है कि इससे मसीह मौऊद की जमाअत ही अभिप्रेत है और यह मानो सहाबा की ही जमाअत होगी।"

इसी प्रकार आपने फ़रमाया:

"सहाबा की जमाअत केवल वही न समझो जो पहले गुज़र चुके हैं, बल्कि एक और समूह भी है, जिसका उल्लेख अल्लाह तआला ने क़ुरआन शरीफ़ में किया है। वह भी सहाबा में शामिल है, जो अहमद के बुरूज़ (प्रतिरूप) के साथ होंगे।"

(तफ़्सीर, बयान फ़रमूदा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम, सूरह अल-जुमुआ, पृष्ठ 140)

हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपने मुबारक समय में इन सहाबा की आध्यात्मिक शिक्षा और परवरिश की। आपके बाद आपके ख़ुलफ़ा-ए-इज़ाम भी यह दायित्व निभाते चले आ रहे हैं। और खिलाफ़त-ए-ख़ामिसा के इस बरकत वाले दौर में, जबकि मसीह मौऊद के ज़माने से दूरी बढ़ती जा रही है, हज़रत अक़्दस ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा की बेमिसाल कुर्बानियों का उल्लेख करके हमारे अंदर भी वही भावना और वही रूह पैदा करने का प्रयास कर रहे हैं।

हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

"आयत 'आख़रीन मिन्हुम' में यह भी संकेत है कि जिस प्रकार यह जमाअत मसीह मौऊद की, सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम की जमाअत से मिलती-जुलती है, उसी प्रकार जो व्यक्ति इस जमाअत का इमाम है, वह भी प्रतिबिंब (ज़िल्ली) के रूप में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से समानता रखता है, जैसा कि स्वयं आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने महदी मौऊद के बारे में फ़रमाया कि वह आपसे मिलता-जुलता होगा।" (अय्यामुस्सुल्ह, हवाला: तफ़्सीर बयान फ़रमूदा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम, तफ़्सीर सूरह अल-जुमुआ, पृष्ठ 132)

सैय्यदना हज़रत अक़्दस अमीरुल मोमिनीन अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने सहाबा-ए-किराम रज़वानुल्लाहि अलैहिम अजमईन के बारे में 9 मार्च 2018 के जुमा के ख़ुत्बे में फ़रमाया। उस ख़ुत्बे में हुज़ूर अनवर ने उनकी कुर्बानियों का उल्लेख करते हुए फ़रमाया:

"सच्चाई, वफ़ादारी, इख़्लास और मुरव्वत दिखाने वालों के ऐसे नमूने हमें इस शान से दिखाई देते हैं कि इंसान हैरान रह जाता है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की क़ुव्वत-ए-क़ुद्सिया ने न केवल उनकी मुहब्बतों का रुख़ बदल दिया। पहले उनकी मुहब्बतें किसी और दिशा में थीं, फिर उन्हें दुनिया से हटाकर अल्लाह की ओर कर दिया, बल्कि उन मुहब्बतों के स्तर को ऐसी ऊँचाई प्रदान की, जिसकी मिसाल पहले दुनिया में नहीं मिलती थी। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने कितनी सुंदरता से इस ऊँचाई का उदाहरण दिया है कि उनके इस स्तर की प्रेमपूर्ण कुर्बानी की मिसाल पहले नबियों के जीवन में भी नहीं मिलती। और जहाँ तक दूसरे नबियों के मानने वालों का प्रश्न है, उनकी स्थिति तो सहाबा की तुलना में बहुत निम्न थी। ये सहाबा अपनी सभी सांसारिक इच्छाओं से पाक थे। वे निर्मल हृदय और केवल अल्लाह तआला की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए अपना जीवन बिताने वाले थे। और जब ऐसी स्थिति होती है, तो फिर अल्लाह तआला भी उन्हें बहुत अधिक नवाज़ता है। हम सहाबा के जीवन में यह सब स्पष्ट रूप से देखते हैं।"(बदर, 5/12 अप्रैल 2018)

हज़रत अक़्दस अमीरुल मोमिनीन अय्यदहुल्लाहु तआला पिछले कई वर्षों से सहाबा-ए-किराम के जीवन का वर्णन कर रहे हैं और इसका उद्देश्य यही है कि अल्लाह तआला ने हमें सहाबा का प्रतिरूप बनाया है। इसलिए हमारे अंदर भी वही इख़्लास और वही कुर्बानी की भावना होनी चाहिए जो सहाबा में थी। हमारे दिलों में भी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिए वही प्रेम और वही समर्पण होना चाहिए जो सहाबा के दिलों में था और जिसकी प्रेरणा से वे अल्लाह की राह में अपने प्राणों तक की कुर्बानी दे दिया करते थे।

अल्हम्दुलिल्लाह! अहमदिया जमाअत में बहुत-से ऐसे लोग हैं जो सहाबा-ए-किराम के पदचिह्नों पर चलते हुए अपने इमाम की आवाज़ पर "लब्बैक" कहते हैं और कुर्बानी की ऐसी अमिट और बेमिसाल यादगारें छोड़ रहे हैं।

हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

"'आख़रीन मिन्हुम' कहकर जब अल्लाह तआला इस जमाअत को सहाबा से मिलाता है, तो उनमें भी सहाबा जैसा इख़्लास, वफ़ादारी और समर्पण होना चाहिए। सहाबा ने क्या किया? जिस प्रकार उन्होंने अल्लाह तआला की महिमा का प्रकट होना देखा, उसी मार्ग को उन्होंने अपनाया। यहाँ तक कि उन्होंने इस मार्ग में अपनी जानें तक दे दीं। वे जानते थे कि उनकी पत्नियाँ विधवा हो जाएँगी, बच्चे अनाथ हो जाएँगे और लोग उनका मज़ाक उड़ाएँगे, लेकिन उन्होंने इसकी तनिक भी परवाह नहीं की। उन्होंने सब कुछ सह लिया, परन्तु उस ईमान के प्रकट करने से पीछे नहीं हटे जो वे अल्लाह और उसके रसूल पर लाए थे। वास्तव में उनका ईमान अत्यंत दृढ़ था, जिसकी कोई मिसाल नहीं मिलती।" (अल-हकम, जिल्द 6, संख्या 40, 10 नवम्बर 1902, पृष्ठ 3)

(हवाला: तफ़्सीर बयान फ़रमूदा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम, तफ़्सीर सूरह अल-जुमुआ, पृष्ठ 150)

अतः आवश्यक है कि हम हज़रत अक़्दस अमीरुल मोमिनीन अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के इन ख़ुत्बों को ध्यानपूर्वक पढ़ें और सुनें, जिनमें आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा की कुर्बानियों के हृदयस्पर्शी घटनाओं का वर्णन किया गया है, ताकि हम भी अपने भीतर वही आदर्श उत्पन्न कर सकें। क्योंकि मसीह मौऊद पर ईमान लाकर हम सहाबा की जमाअत में शामिल हैं, इसलिए वही कुर्बानियाँ हमें भी पुकार रही हैं। और संसार भर में हमारे अनेक भाई खिलाफ़त की छाया में ऐसी ही कुर्बानियाँ प्रस्तुत भी कर रहे हैं।

अल्लाह तआला हम सबको भी इसकी तौफ़ीक़ प्रदान करे। आमीन।

मसीह-ए-वक़्त अब दुनिया में आया,
ख़ुदा ने अहद का दिन है दिखाया।
मुबारक वह जो अब ईमान लाया,
सहाबा से मिला जब मुझको पाया।
वही मय उनको साक़ी ने पिला दी,
फ़सुब्हानल्लज़ी अख़ज़ल-अअ दी।

★ ★ ★

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें
नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा)
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web.www.alislam.org
www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

दुआ की दरख़्वास्त

जनाब सुहैल अहमद साहब अपनी ओर से तथा अपने वालिदैन और समस्त परिवार की ओर से सभी अहबाब से दुआ की दरख़्वास्त करते हैं।

अल्लाह तआला सबको अपनी हिफ़ाज़त में रखे, ईमान, सेहत, में बरकत अता फ़रमाए। आमीन।

जनाब सुहैल अहमद साहब
जमाअत: आद्रा | ज़िला: पुरुलिया, पश्चिम बंगाल

ख़ुत्बः जुमअः

सय्यदना अमीरुल मौ'मेनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 05 जून 2026 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) की विनम्रता और नम्र स्वभाव की घटनाएँ तथा अपनी जमाअत को विनम्रता अपनाने की नसीहत

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ.
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ. بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ. اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ. إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ إِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ.
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ. صِرَاطَ الَّذِيْنَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ. غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَا الضَّآلِّيْنَ

पिछले ख़ुत्बे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की विनम्रता और नम्र स्वभाव से संबंधित कुछ घटनाएँ तथा आपकी नसीहतें बयान की गई थीं। आज भी इसी संबंध में कुछ और घटनाएँ और आपकी नसीहतें प्रस्तुत करूँगा।

हज़रत शेख़ मुहम्मद इस्माईल साहिब (रज़ि.) बयान करते हैं कि:

"हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उत्तम आचरण का यह हाल था कि क़ादियान के वे लोग, जो हर समय आपके विरोध और दुश्मनी में लगे रहते थे और कोई अवसर हाथ से नहीं जाने देते थे, जब भी आपके दरवाज़े पर आते और दस्तक देते, तो मैंने देखा कि आप नंगे पाँव ही बाहर आ जाते। उन्हें देखते ही बड़े प्यार और दयालुता से उनके सलाम का जवाब देते और पूछते, 'आप ख़ैरियत से हैं?' फिर उनके पूरे परिवार का हाल पूछते और फ़रमाते, 'आप किस काम से आए हैं?' जब वह अपनी ज़रूरत बताते तो आप पूछते, 'कितनी ज़रूरत है?' फिर उनकी ज़रूरत से भी अधिक देकर फ़रमाते, 'अगर और ज़रूरत हो तो और ले जाइए।'"

(रिवायात असहाब-ए-अहमद, जिल्द 2, पृष्ठ 395-396)

दुश्मनों के साथ भी आपका व्यवहार अत्यंत अच्छा था और आप हमेशा उनके साथ भी विनम्रता से पेश आते थे। आपने कभी अहंकार नहीं दिखाया।

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब (रज़ि.) बयान करते हैं कि उन्होंने यह रिवायत मुंशी ज़फ़र अहमद साहिब (रज़ि.) से सुनी, जिन्हें मौलवी शेर अली साहिब (रज़ि.) ने सुनाई थी कि:

"एक बार मीराँ बख़्श सूदाई, जो मानसिक रूप से अस्वस्थ और कुछ विकलांग व्यक्ति था, बड़ी मस्जिद से लौटते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को नाम लेकर पुकारने लगा। उसने बहुत बदतमीज़ी से कहा, 'ओए ग़ुलाम अहमदा!' उसमें समझ नहीं थी, इसलिए उसने ऐसे ही पुकारा। आप उसी समय रुक गए और फ़रमाया, 'जी?' आपने बुरा नहीं माना। फिर फ़रमाया, 'जी, क्या कहते हो?' उसने कहा, 'पहले सलाम तो किया करो।' वह अपने आप को बड़ा अधिकारी समझता था। इस पर आपने फ़रमाया, 'अस्सलामु अलैकुम।' फिर उसने कहा, 'मामला अदा करो।' उस क्षेत्र के ज़मींदार सरकार को जो कर देते थे, उसे 'मामला' कहा जाता था। हज़ूर ने यह सुनकर अपनी जेब से रूमाल निकाला, जिसमें से चार या आठ आने निकालकर उसे दे दिए। वह ख़ुश होकर चला गया और प्रशंसा के गीत गाने लगा।"**

(सीरतुल महदी, जिल्द 1, पृष्ठ 734, रिवायत संख्या 805)

'घोड़ियाँ' प्रशंसा के गीत होते हैं।

मानसिक रूप से अस्वस्थ व्यक्ति की बातों का भी आपने कभी बुरा नहीं माना और उसके लिए भी खड़े हो जाते थे।

मास्टर नज़ीर हुसैन साहिब बयान करते हैं कि जब भी मैं अपने पिता के साथ क़ादियान हज़ूर (अलैहिस्सलाम) के पास आया और यह सूचना दी गई कि हकीम मरहम ईसा साहिब आए हैं, तो मैंने हमेशा यही देखा कि हज़ूर सूचना मिलते ही तुरंत बाहर आ जाते और उसी समय कुछ न कुछ खाने के लिए भी पेश करते। कई बार ऐसा भी होता कि आप स्वयं जाकर खाना लेकर आते।

वे लिखते हैं कि: "हज़ूर मेहमानों से इतनी सादगी से मिलते थे कि मैंने कई बार आपको ऐसी अवस्था में देखा कि आपके हाथ में कलम होती थी और कई बार आप नंगे पाँव ही बाहर आ जाते थे।"

यदि आप घर के कमरे में बैठे होते और दरवाज़े पर दस्तक होती, तो उसी अवस्था में बाहर आ जाते। यदि कभी आप मस्जिद में होते और कोई मेहमान आता, तो प्रायः उठकर उससे हाथ मिलाते। यदि आप किसी और से बात कर रहे होते और उसी समय कोई व्यक्ति आकर हाथ मिलाता, तो आप तुरंत उसी की ओर ध्यान करते और उसका हाल-चाल पूछते।

संक्षेप में, हज़ूर अत्यंत विनम्रता के साथ अपने पास आने वालों का स्वागत किया करते थे।

(रिवायात असहाब-ए-अहमद, जिल्द 3, पृष्ठ 173, मास्टर नज़ीर हुसैन साहिब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की रिवायत)

हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद सादिक़ साहिब (रज़ि.) कहते हैं: "मुझे याद है कि एक बार मैं लाहौर से क़ादियान आया था। शायद यह 1897 या 1898 की बात है। हज़रत साहिब ने मुझे मस्जिद मुबारक में बिठाया। उस समय मस्जिद छोटी थी। आपने फ़रमाया, 'आप बैठिए, मैं आपके लिए खाना लाता हूँ।' यह कहकर आप अंदर चले गए। मुझे लगा कि किसी सेवक के हाथ खाना भिजवा देंगे, लेकिन कुछ ही मिनट बाद जब खिड़की खुली तो मैंने देखा कि आप स्वयं एक बड़ी थाली में खाना सजाकर मेरे लिए ला रहे हैं। मुझे देखकर फ़रमाया, 'आप खाना खाइए, मैं पानी लाता हूँ।'"

वे कहते हैं: "यह देखकर मेरी आँखों से अपने आप आँसू निकल पड़े कि जब हमारे मार्गदर्शक और नेता स्वयं हमारी इतनी सेवा करते हैं, तो हमें भी एक-दूसरे की कितनी अधिक सेवा करनी चाहिए।"

(ज़िक्र-ए-हबीब, हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद सादिक़ साहिब रज़ि., पृष्ठ 258)

आपकी सादगी और विनम्रता की एक और घटना हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब (रज़ि.) ने माई भोली और माई जीवाँ के हवाले से बयान की है। उन्होंने कहा:

"एक बार हज़ूर हमारे गाँव आए तो मैं नई गेहूँ भूनकर ले गई। आपने अपने साथियों में बाँट दी। स्वयं भी चखी और प्रसन्न हुए। जब भी हज़ूर सैर के लिए आते तो हमारी कच्ची मस्जिद में आकर इशराक की नमाज़ पढ़ते। हम लोग साग और रोटी पेश करते तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम कभी बुरा नहीं मानते थे और न ही कोई घृणा प्रकट करते थे, बल्कि बड़ी प्रसन्नता से हमारी मेहमाननवाज़ी स्वीकार करते थे।"

(सीरतुल महदी, जिल्द 2, पृष्ठ 202, रिवायत संख्या 1318)

हज़रत मुंशी ज़फ़र अहमद साहिब कपूरथलवी (रज़ि.) एक घटना बयान करते हैं:

"हज़रत साहिब कभी खुले दरवाज़े के सामने बैठा नहीं करते थे, बल्कि हमेशा अंदर से दरवाज़ा बंद करके बैठते थे। हज़रत साहिबज़ादा मियाँ महमूद अहमद साहिब थोड़ी-थोड़ी देर बाद आकर कहते, 'अब्बा, कुंडी खोलो।' और हज़रत उठकर दरवाज़ा खोल देते।"

वे आगे कहते हैं: "एक बार मैं हाज़िर हुआ। हज़ूर बोरी पर बैठे थे। मुझे देखकर आपने चारपाई उठाई और अंदर ले जाकर रख दी। मैंने कहा, 'हज़ूर, मैं उठा लेता हूँ।' आपने फ़रमाया, 'यह भारी है, आपसे नहीं उठेगी।' फिर फ़रमाया, 'आप चारपाई पर बैठ जाइए। मुझे नीचे बैठने में आराम मिलता है।' पहले मैंने इंकार किया, लेकिन आपने फ़रमाया, 'नहीं, आप बिना संकोच बैठ जाइए।' तब मैं बैठ गया। मुझे प्यास लगी थी। मैंने घड़ों की ओर देखा, पर वहाँ पानी पीने का कोई बर्तन नहीं था। आपने मेरी ओर देखकर पूछा, 'क्या आपको प्यास लगी है? मैं पानी लाता हूँ।' आप नीचे घर के हिस्से में गए और गिलास लेकर आए। फिर फ़रमाया, 'ज़रा ठहरिए।' फिर नीचे गए और वहाँ से दो बोतलें शरबत की ले आए, जो किसी ने मणिपुर से भेजी थीं। फ़रमाया, 'इन बोतलों को रखे हुए बहुत दिन हो गए हैं, क्योंकि हमने नीयत की थी कि पहले किसी दोस्त को पिलाएँगे, फिर स्वयं पिएँगे। आज मुझे याद आ गया।' फिर आपने गिलास में शरबत बनाकर मुझे दिया।"

वे कहते हैं: "मैंने कहा, 'पहले हज़ूर थोड़ा-सा पी लें, फिर मैं पियूँगा।' आपने एक घूँट पिया और गिलास मुझे दे दिया। मैंने शरबत पी लिया और उसकी बहुत तारीफ़ की। तब आपने फ़रमाया, 'एक बोतल आप ले जाइए और दूसरी बाहर दोस्तों को पिला दीजिए।' आपने उन दोनों बोतलों में से केवल वही एक घूँट पिया था। मैं आपके आदेश के अनुसार दोनों बोतलें लेकर चला आया।"(असहाब-ए-अहमद, जिल्द 4, पृष्ठ 168-169)

इसी प्रकार हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब (रज़ि.) बयान करते हैं कि आयशा साहिबा, पुत्री अहमद जान साहिब ने बताया:

"1906 में जब मेरी माता का देहांत हो गया, तो अम्माँ जी, जो हज़रत ख़लीफ़ा-ए-अव्वल (रज़ि.) की पत्नी थीं, मुझे अपने घर ले गईं। उन्होंने मुझे नाश्ता कराया। चार-पाँच दिन बाद हज़रत उम्मुल मोमिनीन (रज़ि.) मुझे अपने घर ले आईं। जहाँ आज ऊपर रसोई है, वहीं अम्माँ जान मेरे सिर को धुलवा रही थीं। एक महिला मेरे सिर पर पानी डाल रही थी और हज़रत उम्मुल मोमिनीन स्वयं साबुन से मेरा सिर मल-मलकर धो रही थीं। वह महिला ज़्यादा पानी डाल देती थी। उसी समय हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम वहाँ टहल रहे थे। आपने यह देखा तो उस महिला से लोटा लेकर स्वयं मेरे सिर पर धीरे-धीरे पानी डालना शुरू कर दिया, जबकि अम्माँ जान कंघी करती जा रही थीं। हज़ूर फ़रमा रहे थे, 'इस तरह जुएँ निकल जाएँगी।'"

(सीरतुल महदी, जिल्द 2, पृष्ठ 285, रिवायत संख्या 1509 से उद्धृत)

संभव है कि उसके सिर में जुएँ पड़ गई हों, क्योंकि उसकी माता लंबे समय से बीमार थीं और फिर उनका देहांत हो गया था। उसकी देखभाल करने वाला कोई नहीं था। या उन क्षेत्रों में उस समय सामान्य रूप से भी जुएँ हो जाती थीं। बहरहाल, आपने फ़रमाया कि इस प्रकार सिर धोओ और इस तरह कंघी करो, तो जुएँ निकल जाएँगी।

घर के कामों में भी सहायता करने में आपको कभी कोई संकोच नहीं होता था।

मुफ़्ती मुहम्मद सादिक़ साहिब कहते हैं:

"एक बार मैं वुज़ू के लिए पानी ढूँढ़ रहा था। हाथ में लोटा लिए उस दरवाज़े से अंदर गया जो मस्जिद मुबारक से हज़रत साहिब के घर की ओर जाता था, ताकि किसी सेवक को लोटा देकर अंदर से पानी मँगवा लूँ। संयोग से उसी समय हज़रत साहिब अंदर से बाहर आए। मुझे खड़ा देखकर फ़रमाया, 'क्या आपको पानी चाहिए?' मैंने अर्ज़ किया, 'जी हाँ, हज़ूर।' आपने मेरे हाथ से लोटा ले लिया और फ़रमाया, 'मैं लाता हूँ।' फिर स्वयं अंदर जाकर उसमें पानी भरकर लाए और मुझे दे दिया।"

(ज़िक्र-ए-हबीब, हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद सादिक़ साहिब रज़ि., पृष्ठ 257-258)

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब (रज़ि.) बयान करते हैं कि मराद खातून साहिबा, मरहूम डॉक्टर ख़लीफ़ा रशीदुद्दीन साहिब (रज़ि.) की पत्नी ने बताया:

"एक बार हज़रत उम्मुल मोमिनीन (रज़ि.) और अन्य महिलाओं ने मिलकर आम खाए। आम का मौसम था और उस समय चूसकर खाने वाले आम अधिक होते थे। आँगन में आम के छिलकों और गुठलियों के दो-तीन ढेर लग गए। बहुत-सी महिलाएँ बैठी थीं, इसलिए वहाँ बहुत-सी मक्खियाँ भी आने लगीं। महिलाएँ आपस की बातों में व्यस्त हो गईं और उस समय सफ़ाई का ध्यान नहीं रहा। मैं भी वहीं बैठी थी और कुछ सेविकाएँ भी मौजूद थीं। इसी दौरान हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम आए। आपने यह दृश्य देखा तो स्वयं एक लोटे में फ़िनाइल मिलाकर आँगन में पड़े छिलकों के ढेरों पर अपने हाथ से डाला, ताकि मक्खियाँ हट जाएँ, गंदगी साफ़ हो जाए और बदबू न आए।"

(सीरतुल महदी, जिल्द 2, पृष्ठ 261, रिवायत संख्या 1470 से उद्धृत)

किसी को कुछ कहने के बजाय आपने अपने आचरण से ही यह शिक्षा दे दी कि गंदगी की सफ़ाई तुरंत कर देनी चाहिए। इसमें जहाँ आपकी विनम्रता दिखाई देती है, वहीं स्वास्थ्य और स्वच्छता के प्रति आपकी विशेष सावधानी भी स्पष्ट दिखाई देती है।

लाहौर के कुछ प्रतिष्ठित व्यक्तियों का एक प्रतिनिधिमंडल, जिसमें डॉक्टर अल्लामा इक़बाल और सर शहाबुद्दीन आदि भी शामिल थे, हज़रत अक़दस (अलैहिस्सलाम) से मुलाक़ात के लिए आया। इस मुलाक़ात का हाल बयान करते हुए बाबू गुलाम मुहम्मद साहिब (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) कहते हैं:

"रात को खाना खाने के बाद जब चारपाइयाँ बाँटी गईं तो मैंने एक मज़बूत और बड़ी चारपाई ले ली। लेकिन चौधरी शहाबुद्दीन साहिब (जो बाद में सर शहाबुद्दीन कहलाए) ने मेरा बिस्तर उस पर से उठाकर मेरी चारपाई पर अपना अधिकार कर लिया। इतने में हज़रत साहिब (अलैहिस्सलाम) तशरीफ़ लाए। आपने हर व्यक्ति से पूछा, 'आपको कोई तकलीफ़ तो नहीं है?' सबने कहा, 'हज़ूर! हमें कोई तकलीफ़ नहीं है।' लेकिन जब आप मेरे पास पहुँचे तो मैं परेशान खड़ा था, क्योंकि मेरी चारपाई पर चौधरी शहाबुद्दीन साहिब ने कब्ज़ा कर लिया था। मैंने अर्ज़ किया, 'हज़ूर! मेरी चारपाई चौधरी शहाबुद्दीन ने ले ली है और मैं सोच रहा हूँ कि अब कहाँ सोऊँ।' आपने फ़रमाया, 'ठहरिए, मैं आपके लिए दूसरी चारपाई लाता हूँ।'"

वे कहते हैं: "हज़रत साहिब अंदर चले गए। काफ़ी देर बीत गई, लेकिन चारपाई नहीं आई। तब मैंने हज़ूर के मकान के आँगन के दरवाज़े से अंदर झाँककर देखा तो क्या देखता हूँ कि एक व्यक्ति जल्दी-जल्दी चारपाई बुन रहा है और हज़ूर उसके पास बैठकर हाथ में दिया (लालटेन) लेकर उसे रोशनी दिखा रहे हैं।"

"हज़ूर की यह अवस्था देखकर मुझे बहुत शर्म आई। मैं आगे बढ़ा और अर्ज़ किया, 'हज़ूर! यह दिया मुझे दे दीजिए।' लेकिन हज़ूर ने फ़रमाया, 'अब तो बस एक ही फेरा बाकी है।'"

"हज़ूर के इन उच्च आचरण का मुझ पर इतना गहरा प्रभाव पड़ा कि मेरी आँखों से आँसू निकल आए। उस समय मैं हज़ूर के मुबारक चेहरे को देखकर मन ही मन कह रहा था कि ऐसा चेहरा किसी झूठे व्यक्ति का हरगिज़ नहीं होसकता।"

(लाहौर तारीख़-ए-अहमदियत, पृष्ठ 217-218)

"आपके सेवक मिर्ज़ा इस्माईल बेग मरहूम की गवाही है कि जब हज़रत अक़दस (अलैहिस्सलाम) अपने आदरणीय पिता के आदेश के अनुसार अपनी पैदाइशी दावे से पहले मुकदमों की पैरवी के लिए जाया करते थे, तो साथ में सवारी के लिए घोड़ा भी होता था और मैं भी प्रायः साथ होता था। लेकिन जब आप चलना शुरू करते तो स्वयं पैदल चलते और मुझे घोड़े पर बैठा देते।"

जो सेवक था, उसे घोड़े पर बैठा देते और स्वयं पैदल चलते।

वे कहते हैं: "मैं बार-बार इंकार करता और अर्ज़ करता, 'हज़ूर! मुझे शर्म आती है।' आप फ़रमाते, 'हमें पैदल चलने में शर्म नहीं आती, तो तुम्हें घोड़े पर बैठनेमें क्यों शर्म आती है?' जब हज़रत क़ादियान से निकलते तो हमेशा पहले मुझे घोड़े पर बैठाते। जब आधे से कुछ कम या अधिक रास्ता तय हो जाता, तब मैं उतर जाता और आप सवार होते। इसी तरह जब अदालत से लौटते तो भी पहले मुझे घोड़े पर बैठाते और बाद में स्वयं सवार होते। जब आप सवार होते तो घोड़े को उसी चाल से चलने देते, ताकि मैं साथ-साथ पैदल चल रहा हूँ तो मुझे तकलीफ़ न हो।"

(हयात-ए-तय्यिबा, अब्दुल क़ादिर साहिब, पूर्व सौदागर मल, पृष्ठ 16)

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब (रज़ि.) बयान करते हैं कि मौलवी शेर अली साहिब (रज़ि.) ने मुझे बताया:

"जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को मौलवी मुहम्मद अली साहिब से कोई बात पूछनी होती थी, तो उन्हें अपने पास बुलाने के बजाय स्वयं मौलवी साहिब की छोटी-सी कोठरी में चले जाया करते थे।"

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब (रज़ि.) लिखते हैं:

"हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के जीवनकाल में मौलवी मुहम्मद अली साहिब आपके मकान के एक भाग में रहते थे। हज़रत मसीह मौऊद ने अपने घर का एक कमरा उन्हें दिया हुआ था और उनका कार्यालय उसी छोटी-सी कोठरी में था, जो मस्जिद मुबारक के पूर्वी भाग में स्थित है।"

(सीरतुल महदी, जिल्द 1, पृष्ठ 357, रिवायत संख्या 394)

वहाँ हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम स्वयं उनके पास चले जाया करते थे। अफ़सोस की बात यह है कि मौलवी साहिब ने हज़ूर की विनम्रता से जो शिक्षा लेनी चाहिए थी, वह नहीं ली और अंत में अहंकार ने उन्हें नुकसान पहुँचाया।

अख़बार 'अल-हकम' के संपादक हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) की सादगी के बारे में लिखते हैं:

"जब आप सैर के लिए निकलते थे, तो कोई रोक-टोक नहीं होती थी कि कोई आगे न बढ़े। बल्कि कई बार प्रतिष्ठित साथियों के मन में यह विचार आता था कि रास्ते की धूल उड़ रही है और हज़रत अक़दस पीछे चल रहे हैं। उस समय कच्ची सड़कें थीं। लेकिन हज़रत हुज्जतुल्लाह ने कभी इस बात का विचार भी नहीं किया। अक्सर ऐसा होता था कि पीछे से चलते हुए किसी व्यक्ति का पैर लग जाता, या आपकी जूती निकल जाती, या छड़ी गिर जाती, लेकिन कभी किसी ने नहीं देखा या सुना कि आपने कोई नाराज़गी जताई हो या किसी विशेष सम्मान की इच्छा प्रकट की हो। आपने यह भी नहीं कहा कि तुम्हें ध्यान नहीं रहता।"

"मस्जिद में कई बार ऐसा हुआ कि आप सहाबा के बीच बैठे हुए हैं और कोई अनजान व्यक्ति आया। उसने आगे बढ़कर पहले मौलाना मौलवी अब्दुल करीम साहिब या हज़रत हकीमुल उम्मत से हाथ मिलाया और उन्हें ही हज़रत मसीह मौऊद समझ लिया। तब वे बुज़ुर्ग उसे बताते कि 'हज़रत साहिब तो ये हैं।'"

संक्षेप में, आपने अपने स्वामी हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आचरण को ही हमेशा अपना आदर्श बनाया और वही उदाहरण प्रस्तुत किया।

(मलफ़ूज़ात, जिल्द 2, पृष्ठ 270, हाशिया, संस्करण 2022)

डॉक्टर बशारत अहमद साहिब की एक रिवायत है:

"जब मालेरकोटला के नवाब मुहम्मद अली ख़ाँ साहिब (रज़ि.) की बेगम साहिबा का इंतक़ाल हो गया, तो हज़रत अक़दस (अलैहिस्सलाम) जनाज़े के साथ क़ब्रिस्तान गए। आपने स्वयं नमाज़-ए-जनाज़ा पढ़ाई। उस समय क़ब्र अभी तैयार नहीं हुई थी। मैं भी जनाज़े के साथ था। लोग क़ब्र देखने में लगे हुए थे। मैं भी उसी ओर चला गया। थोड़ी देर बाद देखा कि हज़रत साहिब वहाँ नहीं हैं। मैं घबरा गया और इधर-उधर

देखा तो बाग़ के एक कोने में आप अकेले ज़मीन पर बैठे दिखाई दिए। मैंने जल्दी से एक पेड़ के नीचे सफ़ेद चादर बिछाई और अर्ज़ किया, 'हज़ूर! यहाँ धूप है, कृपया पेड़ की छाया में आ जाइए।'"

"आपने फ़रमाया, 'हाँ, यह ठीक है।' फिर आप पेड़ की छाया में उस चादर पर बैठ गए। मैं भी पास ही बैठ गया। थोड़ी देर में लोगों ने देखा कि हज़रत साहिब पेड़ के नीचे बैठे हैं, तो वे भी वहीं आने लगे। जो भी आता, हज़रत अक़दस उससे फ़रमाते, 'आइए, आइए, यहाँ बैठिए।' और स्वयं पीछे सरक जाते तथा आने वाले को चादर पर बैठा लेते। लोग आते गए और हज़रत साहिब पीछे हटते गए, यहाँ तक कि थोड़ी ही देर में मैंने देखा कि हज़रत साहिब स्वयं मिट्टी पर बैठे हुए हैं और सभी मुरीद चादर पर बैठे हुए हैं।"

"आने वालों को तो ज़ियारत और मुलाक़ात के उत्साह में यह ध्यान ही नहीं रहा कि क्या हो रहा है। लेकिन मैं यह सब देख रहा था और मन ही मन सोच रहा था। साथ ही मेरा ईमान और बढ़ रहा था कि अल्लाह ने इन्हें कितना ऊँचा दर्जा दिया है और फिर भी इनके अंदर कितनी अधिक विनम्रता और नम्रता है।"

(मुजद्दिद-ए-आज़म, डॉक्टर बशारत अहमद, भाग द्वितीय, पृष्ठ 1293-1294)

जब अमृतसर में अब्दुल्लाह आथम के साथ बहस चल रही थी, उन दिनों की एक घटना मुंशी ज़फ़र अहमद साहिब (रज़ि.) बयान करते हैं।

वे कहते हैं: "शायद हम करीम बख़्श नामक एक प्रतिष्ठित व्यक्ति की कोठी में ठहरे हुए थे। उसी समय कर्नल अल्ताफ़ अली ख़ान हमारे साथ हो लिए। उन्होंने मुझसे कहा कि मैं हज़रत साहिब से अकेले में मिलना चाहता हूँ। कर्नल साहिब कोट-पैंट पहने हुए थे और उनकी दाढ़ी-मूँछ साफ़ मुंडी हुई थी। मैंने कहा, 'आप अंदर चले जाइए, हम बाहर से किसी को अंदर नहीं आने देंगे।' इसलिए कर्नल साहिब अंदर चले गए और लगभग आधे घंटे तक हज़रत साहिब के साथ अकेले रहे। जब वे बाहर आए तो उनकी आँखों में आँसू थे। मैंने पूछा, 'आपने ऐसी कौन-सी बातें की हैं कि आपकी यह हालत हो गई है?' उन्होंने कहा, 'जब मैं अंदर गया तो हज़रत साहिब अपनी समझ में बोरी पर बैठे हुए थे, लेकिन वास्तव में बोरी पर केवल आपका एक घुटना था और शरीर का बाकी हिस्सा ज़मीन पर था। मैंने कहा कि हज़ूर तो ज़मीन पर बैठे हैं। हज़ूर ने समझा कि शायद मैं बोरी पर बैठना पसंद नहीं करता। इसलिए आपने अपना साफ़ा खोलकर बोरी पर बिछा दिया और फ़रमाया, 'आप यहाँ बैठ जाइए। शायद आप बोरी पर नहीं बैठना चाहते।'"

"यह देखकर मेरी आँखों से आँसू निकल पड़े। मैंने अर्ज़ किया, 'यद्यपि मैं विलायत में बपतिस्मा लेकर ईसाई बन चुका हूँ, लेकिन इतना भी बेईमान नहीं हुआ कि हज़ूर के साफ़े पर बैठ जाऊँ।' हज़ूर ने फ़रमाया, 'कोई बात नहीं, कोई हर्ज़ नहीं। आप बिना संकोच बैठ जाइए।' लेकिन मैंने साफ़े को हाथ से हटाकर बोरी पर ही बैठना पसंद किया।"

"फिर मैंने अपना हाल सुनाना शुरू किया कि मैं बहुत शराब पीता हूँ और दूसरे भी कई पाप करता हूँ। मुझे ख़ुदा और रसूल का भी ज्ञान नहीं है। लेकिन मैं इस समय आपके सामने ईसाई धर्म से तौबा करके मुसलमान होता हूँ। इन सब बुराइयों के बावजूद मैं ईसाई बन गया था, लेकिन अब आपकी यह हालत देखकर और आपकी बातें सुनकर मुसलमान बनता हूँ। हाँ, जो बुरी आदतें मुझमें आ गई हैं, उन्हें छोड़ना मेरे लिए कठिन लगता है।"

हज़ूर (अलैहिस्सलाम) ने फ़रमाया:

"इस्तिग़फ़ार पढ़ा करो और पाँचों वक़्त की नमाज़ पढ़ने की आदत डालो। यही इसका इलाज है। यदि बुराइयाँ पैदा हो गई हैं और इंसान दीन से दूर हो गया है, तो उसे बहुत अधिक इस्तिग़फ़ार करना चाहिए और नमाज़ों की पाबंदी करनी चाहिए।"

वे कहते हैं कि जब तक मैं हज़ूर (अलैहिस्सलाम) के पास बैठा रहा, मेरी हालत बदलती रही। मैं रोता रहा और उसी हालत में यह वादा करके कि मैं ज़रूर इस्तिग़फ़ार पढ़ूँगा और नमाज़ अदा किया करूँगा, आपकी इजाज़त लेकर वापस आ गया। उस मुलाक़ात का प्रभाव आज तक मेरे दिल पर है।

ये वही कर्नल साहिब थे जो इसी बहस (मुनाज़रा-ए-आथम) में शामिल हुए थे और ईसाइयों की ओर बैठते थे। लेकिन उनका स्वभाव अच्छा था। अल्लाह तआला ने उन पर असर किया और उन्होंने दोबारा इस्लाम स्वीकार कर लिया।

(असहाब-ए-अहमद, जिल्द 4, पृष्ठ 150-151 से उद्धृत)

मौलवी अब्दुल करीम साहिब सियालकोटी (रज़ि.) बयान करते हैं:

"(यह घटना संभवतः 1896 की है, क्योंकि आपने इसे 1900 में प्रकाशित किया था।)"

अर्थात वे चार वर्ष पहले की घटना सुना रहे थे।

वे कहते हैं: "आपके घर के लोग लुधियाना गए हुए थे। जून का महीना था। मकान नया-नया बना था। मैं दोपहर के समय वहाँ बिछी हुई चारपाई पर लेट गया। हज़रत टहल रहे थे।"

"एक बार मेरी आँख खुली तो देखा कि आप मेरी चारपाई के नीचे फ़र्श पर लेटे हुए हैं। मैं आदर के कारण घबराकर उठ बैठा। आपने बड़े प्रेम से पूछा, 'आप क्यों उठ गए?' मैंने अर्ज़ किया, 'हज़ूर! आप नीचे लेटे हुए हैं, मैं ऊपर कैसे सो सकता हूँ?' आप मुस्कुराकर फ़रमाने लगे, 'मैं तो आपकी रखवाली कर रहा था। बच्चे शोर करते थे, उन्हें रोकता था ताकि आपकी नींद में कोई बाधा न आए।'"

(सीरत हज़रत मसीह मौऊद, हज़रत शेख़ याक़ूब अली इरफ़ानी साहिब (रज़ि.), पृष्ठ 147)

हज़रत मुंशी इमामुद्दीन साहिब (रज़ि.) ने अपनी बैअत के समय का दृश्य बयान करते हुए कहा:

"मैंने 1894 में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मुबारक हाथ पर बैअत की। मगरिब की नमाज़ के समय मेरे बड़े भाई मुंशी अब्दुल अज़ीज़ साहिब (रज़ि.) और भाई जमालुद्दीन साहिब (रज़ि.) सीखवानी मेरे साथ थे। नमाज़ के बाद मुंशी साहिब ने मेरी ओर इशारा करके हज़रत अक़दस (अलैहिस्सलाम) की सेवा में अर्ज़ किया, 'हज़ूर! इनकी बैअत ले लीजिए।' हज़ूर ने फ़रमाया, 'अंदर आ जाइए।'"

"जब मैं अकेला बैतुल-फ़िक्र में गया तो हज़ूर चारपाई के पायताने की ओर बैठ गए और मुझे चारपाई के सिरहाने बैठने का आदेश दिया। पहले तो मैं झिझका, लेकिन जब हज़ूर ने दोबारा फ़रमाया तो मैं बैठ गया और हज़ूर ने मेरी बैअत ली।"

"हज़ूर का यह व्यवहार देखकर मैं हैरान रह गया। कहाँ वे पीर, जिनके बराबर कोई बैठ भी नहीं सकता, और कहाँ अल्लाह तआला के मसीह मौऊद, जो एक साधारण सेवक को चारपाई के सिरहाने बैठाते हैं।"

चारपाई के सम्मान वाले हिस्से पर बैठाया।

"मेरे बड़े भाई मुंशी अब्दुल अज़ीज़ साहिब (रज़ि.) कमरे के अंदर तो नहीं आए थे, लेकिन बाहर से यह दृश्य देख रहे थे।" (असहाब-ए-अहमद, जिल्द 1, पृष्ठ 112)

हज़रत मुंशी ज़फ़र अहमद साहिब (रज़ि.) फ़रमाते हैं:

"एक बार मैं और स्वर्गीय मुंशी अरोड़ा साहिब (रज़ि.) ने लुधियाना में हज़ूर की सेवा में अर्ज़ किया कि कभी कपूरथला भी तशरीफ़ लाइए। उन दिनों कपूरथला तक रेल नहीं पहुँची थी। हज़ूर ने वादा किया कि हम अवश्य कभी आएँगे।"

इसके कुछ समय बाद बिना किसी सूचना के एक दिन हज़ूर कपूरथला तशरीफ़ ले आए। ताँगे से उतरकर फ़तह वाली मस्जिद, जो एक्के-खाने के पास थी, वहाँ चले गए। हाफ़िज़ हामिद अली साहिब भी साथ थे।

मस्जिद से हज़ूर ने वहाँ के एक गैर-अहमदी मुल्ला को भेजा और कहा कि मुंशी अरोड़ा साहिब या मुंशी ज़फ़र अहमद साहिब को हमारे आने की सूचना दे दो।

वे कहते हैं: "मैं और मुंशी अरोड़ा साहिब कचहरी में काम कर रहे थे। हम शॉर्टहैंड लेखक थे। मुल्ला आकर कहने लगा कि मिर्ज़ा साहिब मस्जिद में तशरीफ़ लाए हैं और उन्होंने मुझे आपको सूचना देने के लिए भेजा है।"

मुंशी अरोड़ा साहिब ने आश्चर्य और नाराज़गी के स्वर में पंजाबी में कहा:

"देखो तो सही, क्या मिर्ज़ा साहिब तुम्हारी मस्जिद में आकर ठहरेंगे? यह कैसे हो सकता है? झूठ मत बोलो।"

मैंने कहा, "चलकर देख तो लेना चाहिए।"

फिर मुंशी साहिब ने जल्दी से अपनी पगड़ी बाँधी और मेरे साथ चल पड़े।

मस्जिद में जाकर देखा कि हज़ूर फ़र्श पर लेटे हुए हैं और हाफ़िज़ हामिद अली साहिब आपके पैर दबा रहे हैं। पास ही एक कटोरा और चम्मच रखा था, जिससे लगता था कि शायद आपने दूध पिया है या उसमें रोटी भिगोकर खाई है।

मुंशी अरोड़ा साहिब ने अर्ज़ किया:

"हज़ूर! आपको इस तरह नहीं आना चाहिए था। हमें पहले सूचना दे देते। हम करतारपुर स्टेशन पर आपकी प्रतीक्षा करते।"

हज़ूर ने उत्तर दिया: "सूचना देने की क्या ज़रूरत थी? हमने आपसे वादा किया था, उसे पूरा करना था। इसलिए हम आ गए।"

(असहाब-ए-अहमद, जिल्द 4, पृष्ठ 141-142 से उद्धृत)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं: "मेरा तो यह हाल है कि यदि किसी को दर्द हो और मैं नमाज़ में व्यस्त हूँ, और उसकी आवाज़ मेरे कान में पहुँच जाए, तो मैं चाहता हूँ कि यदि नमाज़ तोड़कर भी उसका कुछ भला कर सकता हूँ, तो उसकी सहायता करूँ और जहाँ तक संभव हो, उसके साथ हमदर्दी करूँ।"

"यह अच्छे आचरण के विरुद्ध है कि किसी भाई की मुसीबत और तकलीफ़ में उसका साथ न दिया जाए। यदि तुम उसके लिए कुछ भी नहीं कर सकते, तो कम से कम उसके लिए दुआ ही करो। अपने लोगों की तो बात ही अलग है, मैं तो यह कहता हूँ कि परायों और हिंदुओं के साथ भी ऐसा ही अच्छा व्यवहार करो और उनसे हमदर्दी रखो। कभी भी लापरवाह स्वभाव नहीं होना चाहिए।"

यह केवल नसीहत नहीं थी, बल्कि जितनी भी घटनाएँ सुनाई गई हैं, उनमें स्वयं आपका यही व्यवहार था।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम आगे लिखते हैं:

"एक बार मैं बाहर सैर के लिए जा रहा था। एक पटवारी अब्दुल करीम मेरे साथ था। वह थोड़ा आगे था और मैं पीछे। रास्ते में लगभग सत्तर या पचहत्तर वर्ष की एक बूढ़ी औरत मिली। उसने एक पत्र उस पटवारी को पढ़ने के लिए दिया, लेकिन उसने उसे डाँटकर भगा दिया।"

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

"इस बात से मेरे दिल को बहुत चोट पहुँची। मैं आगे बढ़ा। उसने वही पत्र मुझे दिया। मैं वहीं रुक गया, पत्र पढ़ा और उसे अच्छी तरह समझा दिया। इस पर उस पटवारी को बहुत शर्मिंदगी हुई, क्योंकि उसे भी रुकना पड़ा और वह इस नेकी के सवाब से भी वंचित रह गया।"

(मलफ़ूज़ात, जिल्द 1, पृष्ठ 415-416, संस्करण 2022)

यदि वह विनम्रता से पत्र पढ़ देता तो बहुत अच्छा होता।

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब (रज़ि.) बयान करते हैं:

"यह ख़ाकसार अर्ज़ करता है कि हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) जब किसी से मिलते थे तो मुस्कुराकर मिलते थे। आपकी मुस्कान देखते ही मिलने वाले की सारी परेशानियाँ दूर हो जाती थीं। हर अहमदी यह महसूस करता था कि आपकी सभा में जाकर दिल के सारे ग़म धुल जाते हैं। बस आपके मुस्कुराते हुए चेहरे पर नज़र पड़ती और पूरे शरीर में ख़ुशी की एक लहर दौड़ जाती।"

"आपकी आदत थी कि छोटे से छोटे व्यक्ति की बात भी पूरे ध्यान से सुनते थे और बड़े प्रेम से उत्तर देते थे। हर व्यक्ति यही समझता था कि हज़रत साहिब सबसे अधिक प्रेम उसी से करते हैं।"

"कई बार ऐसे साधारण लोग, जो रसूलों की सभा के आदाब से परिचित नहीं होते थे, देर-देर तक अपनी असंबंधित बातें सुनाते रहते थे और हज़रत साहिब शांति से बैठकर सुनते रहते थे। आपने कभी किसी से यह नहीं कहा कि अब बस करो।"

(सीरतुल महदी, जिल्द 1, पृष्ठ 227, रिवायत संख्या 247)

"एक व्यक्ति हज़रत की सेवा में आया। उसने सिर झुकाकर आपके चरणों पर रखना चाहा। हज़रत ने अपने हाथ से उसका सिर हटाया और फ़रमाया, 'यह तरीका जायज़ नहीं है। अस्सलामु अलैकुम कहना चाहिए और हाथ मिलाना चाहिए।'"

(मलफ़ूज़ात, जिल्द 9, पृष्ठ 168, संस्करण 2022)

हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद सादिक़ साहिब (रज़ि.) लिखते हैं:

"कश्मीर का एक अहमदी, जो लंबा कद और बहुत ग़रीब था, बड़े प्रेम और निष्ठा के साथ अपने गाँव से क़ादियान तक पूरा रास्ता पैदल चलकर आया करता था। उसका नाम शायद अकलू था। एक बार वह क़ादियान आया हुआ था। एक सुबह जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम सैर के लिए बाहर तशरीफ़ लाए, तो वह कश्मीरी चौक में खड़ा था। जैसे ही उसने हज़रत साहिब को देखा, अत्यधिक प्रेम में रोता हुआ आपके चरणों पर सिर रख दिया।"

"आपने झुककर उसे उठाया और फ़रमाया, 'यह जायज़ नहीं है। इंसान को सज्दा नहीं करना चाहिए।'"

(ज़िक्र-ए-हबीब, हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद सादिक़ साहिब, पृष्ठ 162)

अर्थात किसी भी व्यक्ति को कभी सज्दा नहीं करना चाहिए। किसी के चरणों में नहीं झुकना चाहिए।

इसी प्रकार हज़रत मौलवी अब्दुल करीम साहिब सियालकोटी (रज़ि.) लिखते हैं:

"एक बार एक व्यक्ति, जो दुनिया के फ़क़ीरों और सज्जादा-नशीनों का बहुत भक्त था और उनकी सभाओं में बैठने का आदी था, हमारी मस्जिद में आया। उसने लोगों को हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) से खुले रूप से बातचीत करते देखा तो हैरान रह गया। उसने हज़रत से कहा, 'आपकी मस्जिद में तो कोई अदब ही नहीं है। लोग बिना किसी डर और झिझक के आपके सामने बैठे हैं और आपसे बातें कर रहे हैं।'"

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया: "मेरा तरीका यह नहीं है कि मैं इतना कठोर और डरावना बनकर बैठूँ कि लोग मुझसे ऐसे डरें जैसे किसी जंगली जानवर से डरते हैं। मैं स्वयं मूर्ति बनने से सख़्त नफ़रत करता हूँ। मैं तो मूर्ति-पूजा को मिटाने के लिए आया हूँ, न कि स्वयं मूर्ति बन जाऊँ और लोग मेरी पूजा करें। अल्लाह तआला अच्छी तरह जानता है कि मैं अपने आपको दूसरों पर तनिक भी श्रेष्ठ नहीं समझता। मेरी नज़र में घमंडी व्यक्ति से बढ़कर कोई मूर्ति-पूजक और बुरा इंसान नहीं है। घमंडी किसी ख़ुदा की इबादत नहीं करता, बल्कि अपनी ही पूजा करता है।"

(सीरत हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम, हज़रत याक़ूब अली इरफ़ानी साहिब (रज़ि.), पृष्ठ 314)

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब (रज़ि.) मुंशी ज़फ़र अहमद साहिब (रज़ि.) की एक रिवायत बयान करते हैं। वे कहते हैं:

"एक बार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम दिल्ली से लौटते समय अमृतसर उतरे। हज़रत उम्मुल मोमिनीन (रज़ि.) भी साथ थीं। हज़ूर ने एक छोटे साहबज़ादे, जो शायद मियाँ बशीर अहमद साहिब थे, को गोद में उठाया और दूसरी बाँह में एक भारी बैग उठा लिया। फिर मुझसे फ़रमाया, 'आप पानदान उठा लीजिए।'"

मैंने अर्ज़ किया, "हज़ूर! यह बैग मुझे दे दीजिए।"

आपने फ़रमाया, "नहीं।"

मैंने एक-दो बार फिर कहा, लेकिन हज़ूर ने वही उत्तर दिया। तब मैंने पानदान उठा लिया और हम चल पड़े।

इसी बीच स्टेशन पर खड़े दो-तीन अंग्रेज़ नौजवानों ने मुझसे कहा, "हज़ूर से कहो कि ज़रा ठहर जाएँ।"

मैंने हज़ूर से अर्ज़ किया। हज़ूर रुक गए। उन अंग्रेज़ों ने उसी अवस्था में आपकी तस्वीर खींच ली। उस समय आपकी गोद में बच्चा भी था और दूसरी ओर सामान भी था। वे आपकी तस्वीर लेना चाहते थे। इतनी सादगी के बावजूद वे आपकी महान हस्ती से इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने कहा कि हम इस बुज़ुर्ग की तस्वीर लेना चाहते हैं।

(सीरतुल महदी, जिल्द 2, पृष्ठ 58-59, रिवायत संख्या 1073)

हज़रत मलिक मौला बख़्श साहिब (रज़ि.) बयान करते हैं:

"अमृतसर में हमारे घर के सामने मियाँ जान मुहम्मद नाम के एक व्यक्ति रहते थे। वे बहुत बातूनी थे। हज़रत अक़दस (अलैहिस्सलाम) की पुस्तक 'सुरमा चश्म-ए-आर्य' उन्हें लगभग पूरी याद थी। पढ़े-लिखे न होने के बावजूद वे आर्यों से अच्छी बहस किया करते थे। बाद में उन्हें 'मिराक' (मानसिक बीमारी) हो गई।"

उन्हें बेचैनी और मानसिक असंतुलन के दौरे पड़ते थे। जो भी मिलता, उसे देर तक रोककर अपनी बीमारी की लंबी कहानी सुनाते रहते। लोग तंग आ जाते और उनकी बातें सुनने से बचते।

किसी ने उनसे कहा, "तुम क़ादियान जाओ और (हज़रत) मौलवी हकीम नूरुद्दीन साहिब (रज़ि.) से इलाज कराओ।"

उन्होंने कहा, "वे इतने बड़े आदमी हैं, मेरी इतनी लंबी कहानी कब सुनेंगे?"

उस व्यक्ति ने कहा, "नहीं, वे बहुत अच्छे स्वभाव के इंसान हैं। वे तुम्हारी बात अवश्य सुनेंगे।"

वे क़ादियान आ गए। संयोग से जब वे ताँगे से उतरे, उसी समय हज़रत अक़दस (अलैहिस्सलाम) अपने साथियों के साथ सैर से लौट रहे थे।

ताँगे वाले ने कहा, "वो रहे मिर्ज़ा साहिब।"

वे तुरंत ताँगे से उतरे, आगे बढ़कर हाथ मिलाया और अपनी बीमारी की लंबी कहानी सुनानी शुरू कर दी। वे अपनी घबराहट की हालत में लगातार बोलते रहे।

उनकी कहानी इतनी लंबी हो गई कि सब लोग तंग आ गए, लेकिन हज़रत अक़दस (अलैहिस्सलाम) शांति से खड़े होकर उनका हाथ पकड़े सब कुछ सुनते रहे।

आख़िर में मियाँ जान मुहम्मद ने स्वयं कहा,

"अब मेरा मुँह सूख गया है। मैं अब और नहीं बोल सकता। मैं इतनी देर से बोल रहा हूँ और आप लगातार सुनते जा रहे हैं।"

इस पर हज़ूर ने फ़रमाया,

"बहुत अच्छा। अब आप मेहमानख़ाने में जाइए, कुछ खाइए-पीजिए, फिर मौलवी साहिब (अर्थात हज़रत हकीम नूरुद्दीन साहिब रज़ि.) को अपने हाल सुनाकर उनसे दवा ले लीजिए।"

वे ताज़ा दम होकर हज़रत हकीम नूरुद्दीन साहिब (रज़ि.) के पास पहुँचे और फिर वही लंबी कहानी शुरू कर दी।

हज़रत मौलवी नूरुद्दीन साहिब (रज़ि.) ने तुरंत दवा का नुस्ख़ा लिख दिया और कहा, "मुझे आपकी बीमारी मालूम हो गई है।" उन्होंने पूरी कहानी नहीं सुनी।

उन्होंने दवा तो ले ली, लेकिन कहा, "लोग कहते थे कि मौलवी नूरुद्दीन साहिब बहुत अच्छे स्वभाव के हैं, लेकिन उनके आचरण की हज़रत मिर्ज़ा साहिब (अलैहिस्सलाम) के आचरण से क्या तुलना!'"

इस घटना का उन पर इतना गहरा प्रभाव पड़ा कि उन्होंने बैअत कर ली। इससे पहले उन्होंने बैअत नहीं की थी।

वे आगे कहते हैं: "यह घटना डॉक्टर इबादुल्लाह साहिब मरहूम (रज़ि.) ने स्वयं उनकी मौजूदगी में मुझे सुनाई थी और उन्होंने इसकी पुष्टि भी की थी।"

(असहाब-ए-अहमद, जिल्द 1, पृष्ठ 143-144)

इसी प्रकार हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब (रज़ि.) लिखते हैं कि मास्टर

अल्लाह दत्ता साहिब ने लिखित रूप में बयान किया:

"एक बार लाहौर अहमदिया बिल्डिंग्स में हज़ूर (अलैहिस्सलाम) ठहरे हुए थे कि शरकपुर भैनी से मुस्तक़ीम नाम का एक बहुत वृद्ध और कमज़ोर व्यक्ति आपकी ज़ियारत के लिए आया। साथियों की भीड़ के कारण वह हज़ूर तक नहीं पहुँच सका और ऊँची आवाज़ में बोला, 'हज़ूर! मैं तो आपकी ज़ियारत के लिए आया हूँ।'"

हज़ूर ने फ़रमाया, "बाबा जी को आगे आने दो।" लेकिन वे अच्छी तरह चल नहीं पा रहे थे। इस पर हज़ूर ने फ़रमाया, "बाबा जी को तकलीफ़ है।" फिर हज़ूर स्वयं उठकर उनके पास जाकर बैठ गए।

(सीरतुल महदी, जिल्द 1, पृष्ठ 672, रिवायत संख्या 740)

इसी प्रकार हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब (रज़ि.) डॉक्टर मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब (रज़ि.) की रिवायत बयान करते हैं:

"जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम कुछ साथियों के साथ डेरा बाबा नानक में बाबा साहिब का चोला देखने गए, तो वहाँ एक बरगद के पेड़ के नीचे कपड़े बिछाकर जमाअत के लोग हज़ूर के साथ बैठ गए। मौलवी मुहम्मद अहसन साहिब भी साथ थे। गाँव के लोग हज़ूर के आने की ख़बर सुनकर वहाँ जमा होने लगे। उनमें से जो कुछ लोग पहले आए, उन्होंने मौलवी मुहम्मद अहसन साहिब को ही मसीह मौऊद समझ लिया और उनसे हाथ मिलाकर बैठ गए। तीन-चार व्यक्तियों के हाथ मिलाने के बाद महसूस हुआ कि उन्हें ग़लतफ़हमी हुई है। इसके बाद मौलवी मुहम्मद अहसन साहिब जब भी कोई व्यक्ति उनसे हाथ मिलाता, तो उसे हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की ओर इशारा करके बताते, 'हज़रत मसीह मौऊद तो ये हैं।'"

(सीरतुल महदी, जिल्द 1, पृष्ठ 307, रिवायत संख्या 401)

हज़रत शेख़ अब्दुल क़ादिर साहिब (रज़ि.) लिखते हैं कि:

"आपके बड़े बेटे हज़रत मिर्ज़ा सुल्तान अहमद साहिब मरहूम कहा करते थे कि 'मेरे वालिद साहिब ने अपनी पूरी ज़िंदगी किसी मुग़ल अमीर की तरह नहीं, बल्कि एक फ़क़ीर की तरह बिताई।'"

क़ादियान के कनहैया लाल सर्राफ़ का बयान है:

"एक बार हज़रत मिर्ज़ा साहिब को बटाला जाना था। आपने मुझसे फ़रमाया कि एक ताँगा करवा दो। जब हज़ूर नहर तक पहुँचे तो आपको याद आया कि घर में कोई चीज़ रह गई है। आपने ताँगे वाले को वहीं छोड़ा और स्वयं पैदल वापस चले आए। इस बीच ताँगे वाले को पुल पर दूसरे यात्री मिल गए और वह बटाला चला गया। हज़रत मिर्ज़ा साहिब शायद पैदल ही बटाला गए।" वे कहते हैं, "मैंने ताँगे वाले को बुलाकर डाँटा और मारा भी। मैंने कहा, 'बदनसीब! अगर मिर्ज़ा निज़ामुद्दीन होते तो चाहे तुम्हें तीन दिन तक वहीं बैठना पड़ता, तुम बैठे रहते। लेकिन चूँकि यह एक नेक और दरवेश स्वभाव के इंसान हैं, इसलिए तुम इन्हें छोड़कर चले गए।'" जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को इसकी जानकारी हुई तो आपने मुझे बुलाकर फ़रमाया, "वह मेरी वजह से कैसे बैठा रहता? उसे मज़दूरी मिल गई, इसलिए वह चला गया। तुमने उस पर ज़ुल्म क्यों किया?"(हयात-ए-तय्यिबा, पृष्ठ 15-16)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम नसीहत करते हुए फ़रमाते हैं:

"हर व्यक्ति को चाहिए कि तहज्जुद की नमाज़ पढ़ने की कोशिश करे और पाँचों वक़्त की नमाज़ों में क़ुनूत भी पढ़े। हर उस बात से तौबा करे जो अल्लाह तआला को नाराज़ करने वाली हो। तौबा का अर्थ यह है कि इंसान सभी बुरे कामों और अल्लाह की नाराज़गी के कारण बनने वाली बातों को छोड़कर अपने जीवन में सच्चा परिवर्तन लाए, आगे बढ़े और तक़वा अपनाए। अपने चरित्र और आचरण को अच्छा बनाए। इसमें भी अल्लाह का विशेष रहम होता है। अपनी आदतों को सुधारो। क्रोध को छोड़ दो। उसकी जगह विनम्रता और नम्र स्वभाव अपनाओ। अच्छे आचरण के साथ-साथ अपनी सामर्थ्य के अनुसार सदक़ा (दान) देने की भी आदत डालो।"

(मलफ़ूज़ात, जिल्द 1, पृष्ठ 192, संस्करण 2022)

यह सब बातें हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) ने अपनी जमाअत को नसीहत के रूप में फ़रमाईं।

फिर आप (अलैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं:

"अहल-ए-तक़वा (परहेज़गार लोगों) के लिए यह शर्त थी कि वे सादगी, गरीबी और विनम्रता के साथ अपना जीवन बिताएँ। यह तक़वा की एक शाखा है। इसी के द्वारा हमें अनुचित क्रोध का मुकाबला करना है। बड़े-बड़े आरिफ़ों (अल्लाह को पहचानने वालों) और सिद्दीक़ों (सच्चे और नेक लोगों) के लिए सबसे कठिन और अंतिम पड़ाव भी क्रोध से बचना ही होता है।"

"घमंड और अपने ऊपर अभिमान, क्रोध से पैदा होता है और कई बार स्वयं क्रोध भी घमंड और अहंकार का परिणाम होता है। क्योंकि क्रोध उसी समय आता है जब इंसान अपने आपको दूसरे से बड़ा समझता है।"

"मैं नहीं चाहता कि मेरी जमाअत के लोग आपस में एक-दूसरे को छोटा या बड़ा समझें, या एक-दूसरे पर घमंड करें, या किसी को तुच्छ समझकर देखें। अल्लाह ही जानता है कि वास्तव में बड़ा कौन है और छोटा कौन है। किसी को छोटा समझना भी एक प्रकार का अपमान है। और जिसके दिल में दूसरों के लिए तुच्छता होती है, डर है कि यह तुच्छता बीज की तरह बढ़ती जाएगी और अंत में उसी की बर्बादी का कारण बन जाएगी।"

"कुछ लोग बड़े लोगों से तो बहुत आदर के साथ मिलते हैं, लेकिन वास्तव में बड़ा वही है जो किसी साधारण और ग़रीब व्यक्ति की बात भी विनम्रता से सुने, उसका दिल रखे, उसकी बात का सम्मान करे और उसके सामने ऐसी कोई बात न कहे जिससे उसे दुःख पहुँचे।"

अल्लाह तआला फ़रमाता है:

وَلَا تَنَابَزُوْا بِالْاَلْقَابِ ؕ بِئْسَ الِاسْمُ الْفُسُوْقُ بَعْدَ الْاِيْمَانِ ۚ وَمَنْ لَّمْ يَتُبْ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ

(सूरह अल-हुजुरात: 12)

इसका अर्थ है: "एक-दूसरे को बुरे नामों से न पुकारो। ईमान लाने के बाद ऐसा करना बहुत बुरा पाप है। और जो तौबा नहीं करेगा, वही अत्याचारी लोगों में से होगा।"

इस आयत की व्याख्या करते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

"तुम एक-दूसरे के लिए चिढ़ाने वाले नाम मत रखो। यह काम फ़ासिक़ों और बुरे लोगों का है। जो व्यक्ति किसी दूसरे को चिढ़ाता है, वह स्वयं भी उसी प्रकार की मुसीबत में पड़े बिना नहीं मरेगा।"

"अपने भाइयों को तुच्छ मत समझो। जब तुम सब एक ही स्रोत का पानी पीते हो, तो कौन जानता है कि किसके भाग्य में अधिक पानी लिखा है। सम्मान और महानता दुनिया के नियमों से तय नहीं होती। अल्लाह के निकट वही बड़ा है जो सबसे अधिक परहेज़गार (तक़वा वाला) है।"

اِنَّ اَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللّٰهِ اَتْقٰىكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ خَبِيْرٌ (सूरह अल-हुजुरात: 14)

अर्थात: "निश्चय ही अल्लाह के निकट तुममें सबसे अधिक सम्मानित वही है जो सबसे अधिक तक़वा रखने वाला है। निस्संदेह अल्लाह सब कुछ जानने वाला और हर बात की पूरी ख़बर रखने वाला है।"

(मलफ़ूज़ात, जिल्द 1, पृष्ठ 30-31, संस्करण 2022)

अल्लाह तआला हमें सच्चे अर्थों में विनम्रता और नम्र स्वभाव अपनाने की तौफ़ीक़ प्रदान करे। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत में आकर हम सच्चे इस्लाम की शिक्षा पर चलने वाले बनें और उसके अधिकार को पूरा करने वाले हों।

अख़बार बदर खुद भी पढ़ें और अपने मित्रों व परिचितों को भी इसे पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करें

हमारे मार्गदर्शक हज़रत खलीफ़तुल मसीह पंचम (अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़) ने अख़बार बदर के दिसंबर 2014 के विशेषांक के लिए अपना संदेश भेजते हुए फ़रमाया:

"अख़बार बदर के प्रबंधन और पाठकों को यह बात सदैव याद रखनी चाहिए कि इस अख़बार का प्रकाशन जमाअत के सदस्यों की आध्यात्मिक सुधार और प्रगति के लिए किया गया था। हमारे बुजुर्गों ने प्रतिकूल परिस्थितियों के बावजूद, पूर्ण लगन के साथ इसे निरंतर जारी रखने का प्रयास किया और उनकी प्रार्थनाओं पवित्र प्रयासों के आशीर्वाद से ही यह आज तक प्रकाशित हो रहा है। यह बात इस मांग को जन्म देती है कि अधिक से अधिक अहमदी इसे पढ़ें और इससे लाभ उठाएं। अल्लाह तआला अपनी कृपा से भारत के अहमदियों को विशेष रूप से और दुनिया भर में रहने वाले अहमदियों को सामान्य रूप से, इसके अध्ययन और इससे जुड़े आशीर्वादों को प्राप्त करने की सामर्थ्य प्रदान करे। आमीन।"

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के इस अत्यंत महत्वपूर्ण और ज्ञानवर्धक उपदेश को ध्यान में रखते हुए, अहमदिया जमाअत के सदस्यों से विनम्र निवेदन है कि प्रत्येक घर में अख़बार बदर के अध्ययन को सुनिश्चित करना अत्यावश्यक है। अख़बार बदर में कुरआन व हदीस और हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) के उच्च वचनों के अतिरिक्त, हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के जुमअः के उपदेश, भाषणों, साथ ही साथ हज़ूर अनवर के विभिन्न देशों की पवित्र यात्राओं की अत्यंत रोचक और ईमान बढ़ाने वाली रिपोर्टें नियमित रूप से प्रकाशित होती हैं, जिनका अध्ययन प्रत्येक अहमदी के लिए आवश्यक है। अल्लाह तआला की कृपा और हमारे मार्गदर्शक हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की दया से अब यह अख़बार उर्दू के अतिरिक्त हिंदी, बांग्ला, तमिल, तेलुगू, मलयालम, उड़िया और कन्नड़ भाषाओं में भी प्रकाशित हो रहा है। जिन अहमदी साथियों ने अभी तक अख़बार बदर अपने नाम से जारी नहीं करवाया है, उनसे अनुरोध है कि अख़बार बदर अपने नाम से जारी करवाकर स्वयं भी इसका अध्ययन करें और अपने बच्चों और घर के अन्य सदस्यों को भी इसे पढ़ने का अवसर प्रदान करें। अल्लाह तआला हमें हमारे हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के उपदेशों पर, उनकी वास्तविक भावना के अनुसार, पूर्ण रूप से अमल करने की सामर्थ्य प्रदान करे। आमीन।

अख़बार बदर के समय पर न पहुंचने, चंदे की अदायगी, या किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए कृपया कार्यालय प्रबंधक, साप्ताहिक अख़बार बदर से संपर्क करें। (प्रबंधन)

ख़ुत्बः जुमअः

सय्यदना अमीरुल मौ'मेनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 12 जून 2026 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बेमिसाल उदारता और दानशीलता

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

اَلَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ بِالَّيْلِ وَ النَّهَارِ سِرًّا وَّ عَلَانِيَةً فَلَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَ لَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ۔ (البقرہ:275)

وَ فِيْٓ اَمْوَالِهِمْ حَقٌّ لِّلسَّآئِلِ وَ الْمَحْرُوْمِ۔ (الذّاريات:20)

पहली आयत जो मैंने पढ़ी है, वह सूरह अल-बक़रह की है। उसका अनुवाद यह है: "जो लोग अपना माल रात और दिन, छिपकर भी और खुलकर भी, अल्लाह की राह में खर्च करते रहते हैं, उनके लिए उनके रब के पास उनका प्रतिफल सुरक्षित है। उन्हें न कोई डर होगा और न वे दुःखी होंगे।"

और दूसरी आयत सूरह अज़-ज़ारियात की है। अल्लाह तआला फ़रमाता है:

"और उनके माल में माँगने वालों का भी हक़ था और उनका भी जो माँग नहीं सकते थे।"

आज मैं हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की उदारता और दानशीलता के आदर्श के बारे में कुछ रिवायतें (हदीसें) प्रस्तुत करूँगा।

इन रिवायतों से पता चलता है कि आपने इस विषय में किस प्रकार बार-बार मोमिनों का ध्यान दिलाया और स्वयं भी इसका सर्वोत्तम उदाहरण प्रस्तुत किया। जिन आयतों का मैंने तिलावत की है, जैसा कि मैंने बताया, उनमें भी और क़ुरआन की बहुत-सी दूसरी आयतों में भी अल्लाह तआला ने अल्लाह के अधिकार (हुक़ूक़ुल्लाह) और बंदों के अधिकार (हुक़ूक़ुल इबाद) अदा करने, दीन की ज़रूरतों को पूरा करने और ज़रूरतमंदों की सहायता करने की ओर ध्यान दिलाया है।

इसी आदेश के अनुसार हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सच्चे मोमिनों को भी इस ओर ध्यान दिलाया और सबसे बढ़कर स्वयं अपना आदर्श प्रस्तुत किया। आपने अपने आचरण के द्वारा हमें अल्लाह तआला के आदेशों की जीवित तस्वीर दिखा दी।

इसलिए केवल एक गुण ही नहीं, बल्कि आपकी ज़िंदगी का हर पल क़ुरआन करीम के अनुसार था। इसी कारण हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने आपके चरित्र के बारे में फ़रमाया:

كَانَ خُلُقُهُ الْقُرْآنُ "आपका चरित्र पूरी तरह क़ुरआन के अनुसार था।"

(मुस्नद अहमद बिन हंबल, जिल्द 8, पृष्ठ 144, हदीस संख्या 25108, मक्तबा आलमुल कुतुब, बैरूत, 1998)

अर्थात आपके नैतिक गुण क़ुरआन करीम के बिल्कुल अनुरूप थे। इसलिए कोई भी गुण ले लीजिए, उसमें आप सर्वोच्च उदाहरण थे, जिससे बढ़कर कोई दूसरी मिसाल पेश नहीं की जा सकती।

बहरहाल, जैसा कि मैंने कहा, आज मैं विशेष रूप से आपकी उदारता और दानशीलता के संबंध में कुछ रिवायतें प्रस्तुत करूँगा।

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इन दुआ के शब्दों के साथ दुआ किया करते थे:

اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْبُخْلِ وَالْكَسَلِ وَأَرْذَلِ الْعُمُرِ وَعَذَابِ الْقَبْرِ وَفِتْنَةِ الْمَحْيَا وَالْمَمَاتِ

"ऐ अल्लाह! मैं तुझसे कंजूसी, आलस्य, निकृष्ट बुढ़ापे, क़ब्र के अज़ाब और जीवन तथा मृत्यु के फ़ितने से तेरी पनाह माँगता हूँ।"

(सहीह मुस्लिम, अनुवाद (उर्दू), जिल्द 14, पृष्ठ 79, किताबुज़-ज़िक्र वद्दुआ वत्तौबा, बाबुत-तअव्वुज़ मिनल-अज्ज़ि वल-कसल..., हदीस संख्या 4865, नूर फ़ाउंडेशन)

इसी विषय में एक और दुआ भी है। हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु ही से रिवायत है। वे कहते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम यह दुआ किया करते थे:

اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْهَمِّ وَالْحَزَنِ وَالْعَجْزِ وَالْكَسَلِ وَالْجُبْنِ وَالْبُخْلِ وَضَلَعِ الدَّيْنِ وَغَلَبَةِ الرِّجَالِ

"ऐ अल्लाह! मैं चिंता और ग़म से, असमर्थता और आलस्य से, कायरता और कंजूसी से, अधिक कर्ज़ के बोझ से और लोगों के दबाव व अल्लाह तआलात्व से तेरी पनाह चाहता हूँ।"

(सहीह अल-बुख़ारी, अनुवाद, जिल्द 15, पृष्ठ 109, किताबुद-दआवात, बाबुल इस्तिआज़ह मिनल-जुब्न..., हदीस संख्या 6369, प्रकाशित: नज़ारत इशाअत)

इसी प्रकार अल्लाह तआला की राह में खर्च करने और लोगों की सहायता करने के संबंध में आपने मोमिनों को यह नसीहत भी फ़रमाई।

हज़रत अस्मा रज़ियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझसे फ़रमाया: "अपनी थैली का मुँह बाँधकर मत रखा करो। उसे खुला रखो, नहीं तो तुम पर भी रोक लगा दी जाएगी।" अर्थात जिस थैली में तुमने अपना धन रखा है, उसका मुँह बंद मत रखो। ज़रूरत के अनुसार खर्च करती रहो और दूसरों की सहायता करती रहो।

एक दूसरी रिवायत में यह शब्द हैं: "गिन-गिन कर मत खर्च किया करो, नहीं तो अल्लाह तआला भी तुम्हें गिन-गिन कर ही देगा।"

(सहीह अल-बुख़ारी, अनुवाद, जिल्द 3, पृष्ठ 55–56, किताबुज़-ज़कात, बाबुत-तहरीज़ अला-स्सदक़ह..., हदीस संख्या 1433, प्रकाशित: नज़ारत इशाअत)

अर्थात यदि अल्लाह तआला ने तुम्हें नेमतें दी हैं, तो उसका शुक्र अदा करो। और उसका शुक्र अदा करने का तरीका यह है कि दूसरों की सहायता करो। तब अल्लाह तआला तुम्हें और अधिक देगा।

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "दानशील व्यक्ति अल्लाह के क़रीब होता है, जन्नत के क़रीब होता है, लोगों के क़रीब होता है और जहन्नम की आग से दूर होता है। जबकि कंजूस अल्लाह से दूर होता है, जन्नत से दूर होता है, लोगों से दूर होता है और आग के क़रीब होता है। और एक दानशील अज्ञानी, अल्लाह तआला के निकट एक कंजूस इबादत करने वाले से अधिक प्रिय है।"

(जामिअ अत-तिर्मिज़ी, अबवाबुल बिर्र वस्सिलह अन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम, बाब मा जा-अ फ़िस्सख़ा, हदीस संख्या 1961)

अर्थात यदि कोई कंजूस व्यक्ति बहुत इबादत करने वाला भी हो, तब भी उसके मुकाबले में एक ऐसा व्यक्ति जो अधिक ज्ञान नहीं रखता, लेकिन उदार और दानी है, अल्लाह तआला को अधिक प्रिय है।

इसी प्रकार हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने बयान किया कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "जन्नत में न धोखा देने वाला प्रवेश करेगा, न कंजूस और न वह व्यक्ति जो अपने उपकार बार-बार जताता है।"

(जामिअ अत-तिर्मिज़ी, अबवाबुल बिर्र वस्सिलह अन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम, बाब मा जा-अ फ़िल-बुख़्ल, हदीस संख्या 1963)

ये तीन प्रकार के लोग हैं—धोखा देने वाला, कंजूस और वह जो किसी पर अपने एहसान बार-बार जताता रहता है। ऐसे लोग जन्नत में प्रवेश नहीं करेंगे।

इसी प्रकार एक और रिवायत है। हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "मोमिन सरल स्वभाव और उदार होता है, जबकि फ़ाजिर (पापी) धोखा देने वाला और नीच होता है।"

(जामिअ अत-तिर्मिज़ी, अबवाबुल बिर्र वस्सिलह अन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम, बाब मा जा-अ फ़िल-बुख़्ल, हदीस संख्या 1964)

यहाँ "सरल स्वभाव" से यह अर्थ नहीं है, जैसा कि हमारी भाषा में कुछ लोग समझते हैं कि सरल स्वभाव का मतलब कम बुद्धि वाला होता है। जबकि मोमिन के बारे में तो यह बताया गया है कि वह बहुत अधिक दूरदर्शी और समझदार होता है।

(जामिअ अत-तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल क़ुरआन, बाब व मिन सूरतिल हिज्र, हदीस संख्या 3127)

मोमिन की दूरदर्शिता का बहुत महत्व है और उससे सावधान रहना चाहिए। यहाँ अर्थ यह है कि वह झगड़ों से बचने वाला, उदार, खुले दिल वाला, लोगों में प्रिय और

सम्मान के योग्य होता है।

यही एक सच्चे मोमिन की पहचान है और यही हमारे लिए अपने आत्मनिरीक्षण का एक मापदंड है।

एक रिवायत में मुतर्रिफ़ अपने पिता से बयान करते हैं: मैं नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आया तो आप "अल्हाकुमुत-तकासुर" की तिलावत कर रहे थे। फिर आपने फ़रमाया: "इंसान कहता है: मेरा माल, मेरा माल।" अर्थात धनवान व्यक्ति बार-बार कहता है कि यह मेरा माल है, यह मेरा माल है। फिर आपने फ़रमाया: "ऐ आदम के बेटे! वास्तव में तेरा माल तो वही है जिसे तूने खा लिया और समाप्त कर दिया, या पहनकर पुराना कर दिया, या अल्लाह की राह में सदक़ा कर दिया और उसे अपने आगे (आख़िरत के लिए) भेज दिया।"

(सहीह मुस्लिम, अनुवाद, जिल्द 15, पृष्ठ 155, किताबुज़-ज़ुहद वर्रक़ाइक़, बाब अद-दुन्या सिजनुलिल-मोमिन व जन्नतुलिल-काफ़िर, हदीस संख्या 5244, प्रकाशित: नूर फ़ाउंडेशन)

इसलिए आपने सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाया कि वास्तव में तुम्हारा माल वही है जो तुमने अल्लाह की राह में खर्च किया। लेकिन सबसे अच्छा माल वह है जिसे तुमने सदक़ा कर दिया, अल्लाह तआला की बारगाह में पेश कर दिया, उसके बंदों के अधिकार पूरे करने के लिए ख़र्च कर दिया और उसकी राह में लगा दिया। यही माल तुम्हें अगले जहान (आख़िरत) में कई गुना होकर मिलेगा।

इसीलिए अल्लाह तआला ने फ़रमाया है कि ऐसे लोगों को न कोई डर होगा और न वे दुःखी होंगे, जैसा कि पहले पढ़ी गई आयत में बताया गया था। क्योंकि जो कुर्बानियाँ उन्होंने दी हैं, जो उदारता और दानशीलता उन्होंने दिखाई है, जो अपना धन उन्होंने दूसरों पर ख़र्च किया है, उसका बदला उन्हें आख़िरत में मिलेगा।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "सिर्फ़ दो बातों में ही ईर्ष्या (रश्क) करना उचित है। एक उस व्यक्ति पर जिसे अल्लाह ने धन दिया हो और उसे सही समय पर खुलकर खर्च करने की तौफ़ीक़ भी दी हो। और दूसरा उस व्यक्ति पर जिसे अल्लाह ने हिकमत (बुद्धि और समझ) दी हो, वह उसके अनुसार फ़ैसले करता हो, स्वयं उस पर अमल करता हो और दूसरों को भी सिखाता हो।"

(सहीह अल-बुख़ारी, अनुवाद, जिल्द 1, पृष्ठ 144–145, किताबुल इल्म, बाबुल इग़्तिबात फ़िल इल्म वल हिक्मह, हदीस संख्या 73, प्रकाशित: नज़ारत इशाअत)

फिर एक अवसर पर नसीहत करते हुए आपने सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाया।

हज़रत अबू उमामा रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "ऐ आदम के बेटे! अपनी ज़रूरत से अधिक धन को खर्च करना तेरे लिए बेहतर है।" अर्थात जो धन अल्लाह तआला ने तुम्हें दिया है, उससे अपनी ज़रूरतें पूरी करो। लेकिन जो धन ज़रूरत से अधिक है, उसे अल्लाह की राह में खर्च करो। और यदि तुम उसे रोककर रखोगे तो यह तुम्हारे लिए बुरा है। हाँ, अपनी आवश्यकता के अनुसार धन अपने पास रखने पर तुम्हें कोई दोष नहीं दिया जाएगा। जितना धन तुमने अपनी ज़रूरतों के लिए रखा, उसके बारे में तुमसे यह नहीं पूछा जाएगा कि तुमने वह क्यों रखा।

फिर आपने फ़रमाया: "खर्च करने की शुरुआत उन लोगों से करो जिनकी परवरिश की ज़िम्मेदारी तुम्हारे ऊपर है।"

अर्थात तुम्हारी संतान, तुम्हारी पत्नी और बच्चे, तुम्हारे निर्धन रिश्तेदार या वे लोग जिनकी देखभाल की ज़िम्मेदारी तुम्हें दी गई है, वे सबसे पहले तुम्हारे धन से सहायता पाने के अधिकारी हैं।

फिर आपने फ़रमाया: "ऊपर वाला हाथ नीचे वाले हाथ से बेहतर है।"

अर्थात देने वाला हाथ लेने वाले हाथ से श्रेष्ठ है।

(सहीह मुस्लिम, अनुवाद, जिल्द 4, पृष्ठ 209, किताबुज़-ज़कात, बाब बयान अन्नल यदल उलया ख़ैरुम मिनल यदिस्सुफ़ला..., हदीस संख्या 1704, प्रकाशित: नूर फ़ाउंडेशन)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

"तुममें से ऐसा कौन है जिसे अपने वारिस का माल, अपने माल से अधिक प्रिय हो?"

अर्थात क्या कोई ऐसा व्यक्ति है जो यह कहे कि जो धन मैं अपने वारिसों के लिए छोड़कर जा रहा हूँ, वह मुझे उस धन से अधिक प्रिय है जो मैंने स्वयं अपने लिए रखा है या अपने ऊपर खर्च किया है?

लोगों ने अर्ज़ किया, "ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! हममें से कोई भी ऐसा नहीं है जिसे अपना माल अधिक प्रिय न हो।"

तब आपने सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाया: "तो फिर वास्तव में उसी का माल वही है जो उसने आगे (आख़िरत के लिए) भेज दिया, और उसके वारिस का माल वह है जो वह पीछे छोड़ गया।"

(सहीह अल-बुख़ारी, अनुवाद, जिल्द 15, पृष्ठ 206–207, किताबुर रिक़ाक़, बाब मा क़द्दमा मिन मालिहि फ़हुवा लहू, हदीस संख्या 6442, प्रकाशित: नज़ारत इशाअत)

अर्थात जो धन तुमने अल्लाह की राह में खर्च कर दिया, ग़रीबों की सहायता में लगा दिया, वही सबसे अच्छा है। उसका प्रतिफल तुम्हें आख़िरत में मिलेगा, जैसा कि अल्लाह तआला ने क़ुरआन करीम में फ़रमाया है।

अल्लाह पर भरोसा और खुलकर खर्च करने का आपका अपना आदर्श

इस संबंध में हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु के पास गए। उनके पास खजूरों का एक ढेर रखा हुआ था।

आपने सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पूछा: "बिलाल! यह क्या है?"

हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया: "ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! यह मैंने आपके और आपके मेहमानों के लिए जमा करके रखा है।"

आपने सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाया: "क्या तुम्हें इस बात का डर नहीं कि इस जमा किए हुए माल पर जहन्नम की गर्म लपटें आ जाएँ?"

फिर आपने हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु को नसीहत करते हुए फ़रमाया: "ऐ बिलाल! खर्च करते जाओ और अर्श के मालिक अल्लाह के होते हुए गरीबी और भूख से मत डरो।"

(अल-मुअजमुल कबीर लित्तबरानी, भाग 1, पृष्ठ 340, हदीस संख्या 1020, बाबुल बा, अब्दुल्लाह बिन मसऊद अन बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हुमा, मक्तबा इब्न तैमिय्या, काहिरा)

फिर इस संबंध में आपके अपने आदर्श का एक और उदाहरण है।

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं कि उन्होंने एक बकरी ज़बह करवाई। उसका मांस ग़रीबों में बाँट दिया और थोड़ा-सा घर में खाने के लिए रख लिया।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पूछा: "कितना मांस बचा है?"

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने उत्तर दिया: "सिर्फ़ एक अगली टांग बची है।"

यह सुनकर नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

"उस टांग को छोड़कर तो सारा मांस बच गया है, क्योंकि जो तुमने बाँट दिया वही वास्तव में बचा है। जो हमारे खाने के लिए रखा है, वह तो समाप्त हो जाएगा। आख़िरत में काम तो वही आएगा जो तुमने अल्लाह की राह में खर्च कर दिया।"

(जामिअ अत-तिर्मिज़ी, किताब सिफ़तुल क़ियामह..., बाब 33, हदीस संख्या 2470)

हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक भाषण में कहा:

मैंने नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना:

"मैं तो केवल बाँटने वाला हूँ, देने वाला तो केवल अल्लाह है।"

(सहीह अल-बुख़ारी, किताबुल इल्म, बाब मन युरिदिल्लाहु बिहि ख़ैरन युफ़क़्क़िहहु फ़िद्दीन, हदीस संख्या 71)

नुबुव्वत से पहले भी आपकी उदारता

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पवित्र व्यक्तित्व में उदारता और दानशीलता का गुण नुबुव्वत से पहले भी पूरी तरह मौजूद था।

जैसा कि हम पढ़ते हैं, इसकी गवाही आपकी पवित्र पत्नी हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा ने उस समय दी थी, जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर पहली वह्य (अल्लाह तआलीय प्रकाशना) उतरी और आप घबराए हुए घर आए।

तब हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा ने कहा: "घबराने की कोई ज़रूरत नहीं। अल्लाह की क़सम! अल्लाह आपको कभी अपमानित नहीं करेगा। आप रिश्तेदारों के साथ अच्छा व्यवहार करते हैं, असहाय लोगों का बोझ उठाते हैं, वे नेक काम करते हैं जो लोग छोड़ चुके हैं, मेहमानों की सेवा करते हैं और सच्ची मुसीबतों में लोगों की सहायता करते हैं।"

(दायरा-ए-मआरिफ़ सीरत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम, जिल्द 11, पृष्ठ 48, बज़्म-ए-इक़बाल, लाहौर; सहीह अल-बुख़ारी, किताब बद्उल वह्य, बाब कैफ़ काना बद्उल वह्य इला रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम, हदीस संख्या 3)

फिर एक और रिवायत है।

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "दो आदतें किसी मोमिन में एक साथ नहीं हो सकतीं—कंजूसी और बुरा स्वभाव।"

(जामिअ अत-तिर्मिज़ी, किताबुल बिर्र वस्सिलह, बाब मा जा-अ फ़िल बुख़्ल, हदीस संख्या 1962)

अर्थात सच्चे मोमिन में न कंजूसी होगी और न ही बुरा व्यवहार। यह भी अपने आपको परखने का एक मापदंड है।

कंजूसी से बचने की शिक्षा

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "ज़ुल्म से बचो, क्योंकि क़ियामत के दिन ज़ुल्म अंधेरों का कारण बनेगा। और कंजूसी तथा लालच से भी बचो, क्योंकि इन्हीं ने तुमसे पहले लोगों को नष्ट कर दिया था। इसी कंजूसी और लालच ने उन्हें उकसाया, तो उन्होंने ख़ून बहाया और हराम चीज़ों को भी हलाल बना लिया।"

(सहीह मुस्लिम, अनुवाद, जिल्द 13, पृष्ठ 242, किताबुल बिर्र वस्सिलह..., बाब तहरीमुज़-ज़ुल्म, हदीस संख्या 4661, प्रकाशित: नूर फ़ाउंडेशन)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "किसी बंदे के भीतर कभी अल्लाह की राह की धूल और जहन्नम का धुआँ एक साथ इकट्ठा नहीं हो सकते। और न ही किसी बंदे के दिल में लालच, कंजूसी और ईमान एक साथ रह सकते हैं।"

(सुनन अन-नसाई, किताबुल जिहाद, बाब फ़ज़्लु मन अमिला फ़ी सबीलिल्लाह, हदीस संख्या 3112)

जैसा कि पहले भी एक रिवायत में बताया जा चुका है कि लालची, लोभी और कंजूस व्यक्ति कभी सच्चा मोमिन नहीं हो सकता।

इसलिए यही मापदंड हैं। यदि मोमिन बनना है तो लालच से भी बचना होगा, लोभ से भी बचना होगा और कंजूसी से भी बचना होगा।

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "ऐसा कोई दिन नहीं होता जब सुबह के समय दो फ़रिश्ते न उतरते हों। उनमें से एक दुआ करता है: 'ऐ अल्लाह! ख़र्च करने वाले को उसका बदला अता फ़रमा।' और दूसरा दुआ करता है: 'ऐ अल्लाह! कंजूस के माल को नष्ट कर दे।'"

(सहीह अल-बुख़ारी, अनुवाद, जिल्द 3, पृष्ठ 66, किताबुज़-ज़कात, बाब क़ौलिल्लाह तआला: फ़अम्मा मन अअता वत्तक़ा..., हदीस संख्या 1442, प्रकाशित: नज़ारत इशाअत)

अर्थात जो व्यक्ति अल्लाह की राह में ख़र्च करता है, अल्लाह उसे उसके बदले में और अधिक देता है। और जो कंजूसी करता है, उसका धन नष्ट हो जाता है। इस दुनिया में भी उसके धन में बरकत नहीं रहती। हम यही देखते हैं। बहुत से लोग इसका अनुभव भी बताते हैं। और आख़िरत में भी वह धन उसके किसी काम नहीं आएगा। अल्लाह तआला ने एक स्थान पर फ़रमाया है कि जो लोग उसकी मोहब्बत में उसकी राह में ख़र्च करते हैं, वह उन्हें उसका प्रतिफल देता है।

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि "रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम लोगों में सबसे अधिक सुंदर, सबसे अधिक उदार और सबसे अधिक बहादुर थे।"

(सहीह मुस्लिम, अनुवाद, जिल्द 12, पृष्ठ 217, किताबुल फ़ज़ाइल, बाब फ़ी शजाअतिन्नबी अलैहिस्सलाम व तक़द्दुमिहि लिल-हरब, हदीस संख्या 4252, नूर फ़ाउंडेशन)

इसी प्रकार एक और रिवायत है। हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

"क्या मैं तुम्हें सबसे बड़े दानी के बारे में न बताऊँ?"

फिर आपने सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाया: "अल्लाह सभी दान करने वालों से बढ़कर दान देने वाला है, और मैं आदम की संतान में सबसे अधिक दान देने वाला हूँ।"

(मजमउज़-ज़वायद, जिल्द 8, पृष्ठ 409, किताब अलामातुन्नुबुव्वह, बाब फ़ी जूदिहि सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम, हदीस संख्या 14178, दारुल कुतुब अल-इल्मिय्या, बैरूत, 2001)

अर्थात संसार में मनुष्यों में सबसे अधिक उदार मैं हूँ।

इसी प्रकार हज़रत इब्न अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भलाई करने में सभी लोगों से अधिक उदार थे। और रमज़ान के महीने में आपकी उदारता सबसे अधिक होती थी। हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम हर वर्ष रमज़ान में आपसे मिलते रहते थे, यहाँ तक कि रमज़ान समाप्त हो जाता था। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उन्हें क़ुरआन सुनाते थे। और जब जिब्रील अलैहिस्सलाम आपसे मिलते, तो उस समय आप भलाई करने में तेज़ आँधी से भी अधिक उदार हो जाते थे।

(सहीह मुस्लिम, अनुवाद, जिल्द 12, पृष्ठ 218–219, किताबुल फ़ज़ाइल, बाब कानन्नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अजवदन्नास बिल-ख़ैर, हदीस संख्या 4254, नूर फ़ाउंडेशन)

अर्थात आप इस प्रकार ख़र्च करते थे जैसे तेज़ आँधी और तूफ़ान चल रहा हो।

इसी बात को हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक ख़ुत्बे में इस प्रकार बयान किया है:

"जब आप दान करते थे तो अत्यंत उदारता से करते थे। यहाँ तक कि सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम बयान करते हैं कि विशेष रूप से रमज़ान में आप इस प्रकार उदारता करते थे जैसे तेज़ आँधी चल रही हो। लेकिन साथ ही 'وَلَا تُبَذِّرْ تَبْذِيرًا' (फ़िज़ूलखर्ची न करो) के आदेश पर भी आपका पूरा अमल था। अर्थात आपकी उदारता कभी फ़िज़ूलखर्ची नहीं बनती थी और न ही आप अनुचित स्थान पर ख़र्च करते थे।"

आप उदार तो थे, लेकिन अल्लाह तआला का यह आदेश भी था कि फ़िज़ूलखर्ची नहीं करनी, बिना कारण धन को नष्ट नहीं करना। अल्लाह तआला ने फ़िज़ूलखर्ची से मना किया है।

"हातिम ताई की उदारता तो थी, लेकिन वह उचित स्थान पर नहीं थी।"

हातिम ताई को बहुत बड़ा दानी माना जाता है, लेकिन उसकी उदारता समय और परिस्थिति के अनुसार नहीं होती थी। वह बिना सोचे-समझे ख़र्च करता था।

"वह ऐसी उदारता थी जैसे किसी और के धन से दावत देना।"

यह एक मुहावरा है। अपना धन तो वह नहीं बाँट रहा था।

"उसे अपने पिता के धन को इस प्रकार बाँटने का क्या अधिकार था?"

हातिम ताई के बारे में आता है कि बचपन से ही उसकी प्रकृति में उदारता थी। अंत में उसके पिता ने देखा कि वह मेरा धन लुटा रहा है, इसलिए उसे ऊँटों की देखभाल के लिए बाहर भेज दिया।

एक दिन उसने देखा कि तीन व्यक्ति आए हैं। वे तीनों बड़े कवि थे। उसने उनकी मेहमाननवाज़ी के लिए तीन ऊँट ज़बह कर दिए।

उन्होंने कहा, "हम तो केवल तीन आदमी हैं, एक ऊँट ही काफ़ी है।"

उसने कहा, "यदि मैं केवल एक ऊँट ज़बह करूँ, तो बाकी दो मेहमान उसके सहारे हो जाएँगे।"

इस प्रकार उसने अपने पिता के धन से तीनों ऊँट ज़बह कर दिए। कुछ तो बच गए होंगे, लेकिन शेष मांस व्यर्थ चला गया होगा या किसी को दे दिया होगा। उसके पिता को भी बहुत बुरा लगा कि मेरा धन इस प्रकार लुटाया जा रहा है।

लेकिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास जो धन आता था, वह आपका अपना होता था और आप क़ुरआन की शिक्षा के अनुसार समय, स्थान और आवश्यकता को देखकर ख़र्च करते थे।

इन हदीसों का अर्थ भी यही है, जिनमें आपने फ़रमाया है कि बिना झिझक ख़र्च करो। अर्थात जहाँ आवश्यकता हो, वहाँ पूरी उदारता से ख़र्च करो। फिर किसी प्रकार की हिचकिचाहट नहीं होनी चाहिए। इसका अर्थ यह नहीं कि जंगल में केवल तीन मेहमान आए हों और उनके लिए तीन ऊँट ज़बह कर दिए जाएँ, फिर उनका अधिकांश मांस व्यर्थ नष्ट हो जाए। वहाँ खाने वाला कोई और तो था नहीं। यदि कोई और मिल भी गया हो तो कुछ ही लोग होंगे। फिर भी बहुत-सा मांस बच गया होगा जो नष्ट हो गया। उसका कोई लाभ नहीं हुआ।

इसलिए ख़र्च हमेशा समय, स्थान और आवश्यकता के अनुसार करना चाहिए। यदि अल्लाह की राह में उचित स्थान पर ख़र्च कर रहे हो, तो फिर निश्चिंत रहो, क्योंकि अल्लाह तआला ने स्वयं वादा किया है, जैसा कि आयत में फ़रमाया गया है कि ऐसे लोगों को न कोई चिंता होगी और न कोई दुःख।

बहरहाल, हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं:

"एक ओर तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इतने अधिक उदार थे कि जैसा मैंने बताया, सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम कहते हैं कि रमज़ान के दिनों में आपकी उदारता ऐसी होती थी जैसे तेज़ आँधी चल रही हो, लेकिन दूसरी ओर आप पूरी समझदारी से ख़र्च करने वाले थे।"

(ख़ुत्बात-ए-महमूद, जिल्द 18, पृष्ठ 641; माख़ूज़ अज़: बुलूग़ुल-अरब फ़ी मआरिफ़त अहवालिल-अरब, जिल्द 1, पृष्ठ 74, "हातिम ताई", दारुल कुतुब अल-इल्मिय्या, बैरूत, 2020)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

"यदि मेरे पास तहामा (अरब के समुद्री किनारे के पर्वतों) के बराबर सोना होता, तो मैं वह सब तुम्हारे बीच बाँट देता और तुम मुझे न झूठा पाते और न कंजूस।"

(सुबुलुल हुदा वर्रशाद, जिल्द 7, पृष्ठ 53, फ़ी करमिहि व जूदिहि सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम, दारुल कुतुब अल-इल्मिय्या, बैरूत, 1993)

एक और रिवायत है। हज़रत अबू ज़र रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं:

मैं नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ मदीना के मैदान में चल रहा था कि हमारे सामने उहुद पर्वत आ गया।

आपने सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाया: "अबू ज़र!"

मैंने अर्ज़ किया, "हाज़िर हूँ, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम!"

आपने फ़रमाया: "मुझे यह बात बिल्कुल पसंद नहीं कि मेरे पास इस उहुद पर्वत के बराबर सोना हो और तीसरी रात बीत जाए तथा उसमें से एक दीनार भी मेरे पास बचा रहे, सिवाय उस धन के जिसे मैंने कर्ज़ चुकाने के लिए अलग रखा हो। बल्कि मैं उसे अल्लाह के बंदों में इस तरह, इस तरह और इस तरह बाँट दूँ।"

यह कहते हुए आपने अपने दाएँ, बाएँ और पीछे की ओर इशारा किया।

फिर कुछ दूर चलकर आपने फ़रमाया: "जो लोग बहुत धनवान हैं, वही क़ियामत के दिन निर्धन होंगे।" अर्थात जो धन इकट्ठा करते रहते हैं और ज़रूरतमंदों तथा ग़रीबों पर खर्च नहीं करते, वे क़ियामत के दिन निर्धन होंगे।

"हाँ, वे लोग नहीं जो इस तरह, इस तरह और इस तरह खर्च करते हैं।"

अर्थात दाएँ, बाएँ और पीछे हर ओर अल्लाह की राह में खर्च करते हैं। ऐसे लोग क़ियामत के दिन निर्धन नहीं होंगे।

फिर आपने फ़रमाया: "ऐसे लोग बहुत कम हैं।" अर्थात जो धनवान होकर भी अल्लाह की राह में इस प्रकार खुलकर खर्च करते हैं, वे बहुत कम हैं। सच्चे मोमिन धनवान कंजूसी नहीं करते, बल्कि निडर होकर अल्लाह की राह में खर्च करते हैं और फिर अल्लाह तआला उन्हें और अधिक देता चला जाता है।

(सहीह अल-बुख़ारी, अनुवाद, जिल्द 15, पृष्ठ 211–212, किताबुर-रिक़ाक़, बाब क़ौलिन्नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम: मा यसुर्रुनी अन्न इंदी मिस्ल उहुद हाज़ा ज़हबन, हदीस संख्या 6444, नज़ारत इशाअत)

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि एक व्यक्ति ने नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से दो पहाड़ों के बीच जितनी बकरियाँ थीं, वे सब माँग लीं। आपने सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उसे सारी बकरियाँ दे दीं।

वह अपनी क़ौम के पास गया और कहा:

"ऐ मेरी क़ौम! इस्लाम स्वीकार कर लो। अल्लाह की क़सम! मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इतना देते हैं कि उन्हें गरीबी का कोई डर नहीं होता।"

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि कभी-कभी कोई व्यक्ति केवल दुनिया के लाभ के लिए इस्लाम स्वीकार करता था, लेकिन जैसे ही वह इस्लाम में प्रवेश करता, इस्लाम उसे दुनिया और उसकी सारी चीज़ों से भी अधिक प्रिय हो जाता।

(सहीह मुस्लिम, अनुवाद, जिल्द 12, पृष्ठ 223–224, किताबुल फ़ज़ाइल, बाब मा सु'इला रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम शैयअन क़त्तु फ़क़ाला ला, हदीस संख्या 4262, नूर फ़ाउंडेशन)

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं:

"नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अगले दिन के लिए कोई चीज़ बचाकर नहीं रखते थे।"

(शमाइलुन्नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम, पृष्ठ 148, बाब मा जा-अ फ़ी खुलुक़ि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम, हदीस संख्या 339, नूर फ़ाउंडेशन)

हज़रत उक़्बा बिन हारिस रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हमें अस्र की नमाज़ पढ़ाई। नमाज़ के बाद आप तुरंत घर गए और थोड़ी ही देर बाद वापस बाहर आ गए।

रिवायत करने वाले कहते हैं कि मैंने या किसी और ने पूछा कि ऐसा क्यों हुआ?

आपने सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाया:

"मैं घर में सदक़े के माल का सोने का एक टुकड़ा छोड़ आया था। मुझे यह पसंद नहीं था कि वह पूरी रात मेरे पास पड़ा रहे। इसलिए मैंने उसे बाँट दिया।"

(सहीह अल-बुख़ारी, अनुवाद, जिल्द 3, पृष्ठ 53–54, किताबुज़-ज़कात, बाब मन अहब्बा तअजीलस्सदक़ह, हदीस संख्या 1430, नज़ारत इशाअत)

हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मेरे पास आए और आपके चेहरे का रंग बदला हुआ था।

मैंने सोचा कि शायद किसी तकलीफ़ या दर्द के कारण ऐसा है।

मैंने अर्ज़ किया: "ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! मैं आपके चेहरे का रंग बदला हुआ देख रही हूँ। क्या किसी तकलीफ़ के कारण ऐसा है?"

आपने सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाया:

"नहीं। यह उन सात दीनारों के कारण है जो शाम को हमारे पास आए थे। रात बीत गई और हम उन्हें खर्च नहीं कर सके। मैं उन्हें बिस्तर के एक कोने में भूल गया था। जब मुझे याद आया तो मुझे इसकी बहुत चिंता हुई।"

(मुस्नद अहमद बिन हंबल, जिल्द 8, पृष्ठ 630–631, हदीस संख्या 27207, मक्तबा आलमुल कुतुब, बैरूत, 1998)

हज़रत उक़्बा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि उन्होंने कहा:

मैंने मदीना में नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पीछे अस्र की नमाज़ पढ़ी। आपने सलाम फेरा और तुरंत उठ खड़े हुए। लोगों के बीच से होकर अपनी पवित्र पत्नियों के कमरों में से एक की ओर चले गए। लोग आपकी इस जल्दी को देखकर हैरान हो गए।

फिर आप बाहर आए और देखा कि लोग आपकी जल्दी पर आश्चर्य कर रहे हैं।

तब आपने सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाया:

"मुझे याद आया कि मेरे पास कुछ सोना रखा है। मुझे यह पसंद नहीं था कि वह मुझे अल्लाह के ज़िक्र से ग़ाफ़िल करे। इसलिए मैंने उसे बाँट देने का आदेश दे दिया है।"

(सहीह अल-बुख़ारी, अनुवाद, जिल्द 2, पृष्ठ 252–253, किताबुल अज़ान, बाब मन सल्ला बिन्नास फ़ज़करा हाजतन फ़तख़त्ताहुम, रिवायत संख्या 851, नज़ारत इशाअत)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

"रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की यह अवस्था थी कि आपके पास जो कुछ भी होता, आप उसे दान कर देते थे। एक बार आपके घर में एक मुहर (सोने की अशर्फ़ी/सिक्का) थी। आपने उसे लेकर लोगों में बाँट दिया।"

(मलफ़ूज़ात, जिल्द 3, पृष्ठ 323, संस्करण 2022)

इसी घटना का उल्लेख करते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक स्थान पर इस प्रकार लिखा है:

"एक बार सदक़ात का कुछ धन आया। उसे बाँटते समय एक दीनार किसी कोने में गिर गया, जिसे उठाने का ध्यान न रहा। नमाज़ के बाद याद आया तो आप लोगों के बीच से जल्दी-जल्दी निकलते हुए अपने घर गए। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने पूछा, 'ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! क्या बात थी?' आपने फ़रमाया कि इस प्रकार एक दीनार बाँटना रह गया था। मैंने चाहा कि जितनी जल्दी हो सके, उसे भी बाँट दूँ।"

"संक्षेप में, धन-दौलत होने के बावजूद आपने ऐसी तृप्ति, संतोष और वैराग्य (बेनियाज़ी) का परिचय दिया कि देखकर आश्चर्य होता है। जो कुछ भी आपके पास आता, आप उसे अल्लाह तआला की राह में बाँट देते थे।"

(तफ़्सीर-ए-कबीर, जिल्द 7, पृष्ठ 478–479, संस्करण 2023)

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास बहरीन से बहुत-सा धन लाया गया। आपने फ़रमाया:

"इसे मस्जिद में रख दो।" यह सबसे अधिक धन था जो कभी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास लाया गया था।

फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम नमाज़ के लिए चले गए और आपने उस धन की ओर बिल्कुल ध्यान नहीं दिया, यहाँ तक कि उसकी तरफ़ देखा भी नहीं।

जब नमाज़ पूरी हो गई तो आप उस धन के पास आए और जिसे भी देखते, उसे उसमें से देते जाते।

इसी दौरान हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु आए और उन्होंने कहा:

"ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! मुझे भी दीजिए, क्योंकि बद्र के दिन मैंने अपना फ़िदया (मुक्ति-धन) भी दिया था और अकील का फ़िदया भी दिया था।"

(अकील बिन अबू तालिब, हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु के भतीजे थे।)

तब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनसे फ़रमाया:

"इसमें से ले लो।" उन्होंने दोनों हाथों से भर-भरकर अपने कपड़े में धन भर लिया। फिर उसे उठाने लगे, लेकिन उठा न सके।

उन्होंने कहा: "ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! किसी को आदेश दीजिए कि वह इसे उठाकर मेरे ऊपर रख दे।"

आपने फ़रमाया: "नहीं, ऐसा नहीं होगा।" उन्होंने कहा:

"तो फिर आप ही इसे उठाकर मेरे ऊपर रख दीजिए।"

आपने फ़रमाया: "नहीं।" तब उन्होंने उसमें से कुछ धन निकाल दिया और फिर उठाने लगे, लेकिन फिर भी उठा न सके।

उन्होंने दोबारा कहा: "ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! किसी को कह दीजिए कि वह इसे उठाकर मेरे ऊपर रख दे।"

आपने फिर फ़रमाया: "नहीं।" उन्होंने कहा: "तो फिर आप ही इसे मेरे ऊपर रख दीजिए।" आपने फिर फ़रमाया: "नहीं।" तब उन्होंने उसमें से कुछ और धन निकाल दिया। इसके बाद उसे अपने कंधे पर रखकर चल पड़े।

जब वे चले गए, तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम लगातार उन्हें देखते रहे, यहाँ तक कि वे नज़रों से ओझल हो गए।

हर अवसर पर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सहाबा को संतुलन और संयम की शिक्षा देते थे। अर्थात, ठीक है कि मैं तुम्हें दे रहा हूँ, लेकिन तुम भी उतना ही उठाओ जितनी आवश्यकता हो। चाहे वह निकट संबंधी ही क्यों न हो, हर काम में संतुलन होना चाहिए। जितनी ज़रूरत हो उतना ही लेना चाहिए, उससे अधिक नहीं।

इस हदीस के रावी ने अंत में यह भी लिखा है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को उनकी इस लालच पर आश्चर्य हो रहा था।

(सहीह अल-बुख़ारी, अनुवाद, जिल्द 1, पृष्ठ 517–518, किताबुस्सलात, बाबुल क़िस्मह व तअलीक़िल क़िनू फ़िल मस्जिद, हदीस संख्या 421, नज़ारत इशाअत)

यह रावी का अपना विचार है। यह भी संभव है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उन्हें इसलिए नहीं देख रहे थे कि उनकी लालच पर आश्चर्य कर रहे थे, बल्कि शायद आपको वह समय याद आ गया हो जब सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम अत्यंत ग़रीबी की अवस्था में थे। उन दिनों को याद करते हुए आप उन्हें दूर तक देखते रहे कि किस प्रकार उन्होंने अल्लाह की राह में महान बलिदान दिए, किस प्रकार उन्होंने कठिन गरीबी का समय बिताया और आज अल्लाह तआला हमें किस प्रकार अपनी नेमतों से नवाज़ रहा है।

विभिन्न हदीस-व्याख्याकारों (शारिहीन) ने भी इसे रावी का व्यक्तिगत विचार ही माना है। उनका कहना है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु की लालच पर आश्चर्य नहीं किया था, बल्कि आपके मन में अन्य विचार चल रहे थे।

(अल-इफ़्साह अ़न मआनिस्सिहाह, जिल्द 5, पृष्ठ 323, दारुल वतन)

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि

"ऐसा कभी नहीं हुआ कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से कोई चीज़ माँगी गई हो और आपने 'नहीं' कहा हो।"

(सहीह मुस्लिम, अनुवाद, जिल्द 12, पृष्ठ 222–223, किताबुल फ़ज़ाइल, बाब फ़ी मा सुइला रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम शैअन क़त्तु फ़क़ाला ला, व कसरतु अताइहि, हदीस संख्या 4260, नूर फ़ाउंडेशन)

हज़रत सहल बिन सअद रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि:

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बहुत अधिक शर्म-ओ-हया वाले थे। जब भी आपसे कोई कुछ माँगता, आप उसे दे देते थे।

(सुबुलुल हुदा वर्रशाद, जिल्द 7, पृष्ठ 50, फ़ी करमिहि व जूदिहि सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम, दारुल कुतुब अल-इल्मिय्या, बैरूत, 1993)

इब्न अबी ख़ैसमा, हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत करते हैं कि

जब हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के गुणों का वर्णन करते थे, तो फ़रमाते थे:

"देने के मामले में आप सभी लोगों से अधिक उदार थे।"

(सुबुलुल हुदा वर्रशाद, जिल्द 7, पृष्ठ 52, फ़ी करमिहि व जूदिहि सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम, दारुल कुतुब अल-इल्मिय्या, 1993)

हज़रत सहल बिन सअद रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि एक महिला एक बुर्दा (चादर का एक प्रकार) लेकर आई और उसने कहा:

"ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! मैंने यह अपने हाथ से बुनी है ताकि आप इसे पहनें।" नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने वह चादर स्वीकार कर ली, क्योंकि उस समय आपको उसकी आवश्यकता थी। फिर आप हमारे पास आए और वही चादर आपने कमर पर लपेट रखी थी। उसी समय लोगों में से एक व्यक्ति ने कहा: "ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! यह चादर मुझे पहनने के लिए दे दीजिए।" आपने फ़रमाया: "अच्छा।" फिर नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम कुछ देर तक सभा में बैठे रहे। उसके बाद अंदर गए, चादर को तह किया और उस व्यक्ति के पास भिजवा दी। फिर दूसरी चादर पहनकर बाहर आए। लोगों ने उस व्यक्ति से कहा: "तुमने अच्छा नहीं किया कि यह चादर माँग ली। तुम्हें मालूम है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम किसी माँगने वाले को कभी मना नहीं करते।" उस व्यक्ति ने कहा: "अल्लाह की क़सम! मैंने यह इसलिए माँगी है कि जब मेरी मृत्यु हो जाए तो यही मेरा कफ़न बने।" रिवायत में आता है कि हज़रत सहल रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा कि बाद में वही चादर वास्तव में उसके कफ़न के रूप में इस्तेमाल की गई।

(सहीह अल-बुख़ारी, अनुवाद, जिल्द 4, पृष्ठ 58–59, किताबुल बुई, बाबुन्नस्साज, हदीस संख्या 2093, नज़ारत इशाअत)

एक और रिवायत में हज़रत मिस्वर बिन मख़रमा रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कुछ क़बाएँ (ऊपरी वस्त्र) बाँटीं, लेकिन मख़रमा को कोई क़बा नहीं मिली। उनके पुत्र मिस्वर बयान करते हैं कि मख़रमा रज़ियल्लाहु अन्हु ने मुझसे कहा: "बेटे! मेरे साथ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास चलो।" मैं उनके साथ गया। उन्होंने कहा: "अंदर जाकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को मेरे पास बुलाओ।" रावी कहते हैं कि मैं उस समय छोटा था। मैं अंदर गया, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को बुलाया और बताया कि मेरे पिता आए हैं। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बाहर आए और आपके हाथ में एक क़बा थी। आपने फ़रमाया: "मैंने यह तुम्हारे लिए संभालकर रखी थी। तुम शिकायत लेकर आए थे न?" उन्होंने शिकायत प्रकट भी नहीं की थी कि उससे पहले ही आपने वह क़बा उन्हें दे दी और फ़रमाया: "मैंने इसे तुम्हारे लिए सुरक्षित रखा था।" रावी कहते हैं कि आपने मख़रमा की ओर देखा और फिर फ़रमाया: "यह क़बा तुम्हारे लिए है।" इस पर मख़रमा बहुत प्रसन्न हो गए।

(सहीह मुस्लिम, अनुवाद, जिल्द 4, पृष्ठ 229, किताबुज़-ज़कात, बाब इअता मन सअल बिफ़ुहूश व ग़िलज़ह, हदीस संख्या 1736, नूर फ़ाउंडेशन) (फ़त्हुल बारी, जिल्द 10, पृष्ठ 281, किताबुल लिबास, बाबुल क़बा व फ़ुर्रूज हरिर, रिवायत संख्या 5800, मक्तबतुल मलिक फ़हद, रियाद, 2001)

एक दूसरी रिवायत में है कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत मख़रमा रज़ियल्लाहु अन्हु की आवाज़ पहचान ली और स्वयं बाहर आ गए। बेटे को अंदर भेजने के बजाय आप स्वयं बाहर आए। आपके हाथ में एक क़बा थी। आप उसकी विशेषताएँ उन्हें दिखा रहे थे और बार-बार फ़रमा रहे थे: "मैंने इसे तुम्हारे लिए संभालकर रखा था। मैंने इसे तुम्हारे लिए संभालकर रखा था।"

(सहीह मुस्लिम, अनुवाद, जिल्द 4, पृष्ठ 229, किताबुज़-ज़कात, बाब इअता मन सअल बिफ़ुहूश व ग़िलज़ह, हदीस संख्या 1737, नूर फ़ाउंडेशन)

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि: मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ चल रहा था। आपने नज्रान की बनी हुई एक चादर ओढ़ रखी थी, जिसका किनारा खुरदरा था। एक देहाती आया और उसने आपकी चादर को इतनी ज़ोर से खींचा कि मैंने आपकी गर्दन के एक तरफ़ देखा तो उस खुरदरी चादर के किनारे का निशान आपकी गर्दन पर पड़ गया था। फिर उसने कहा: "ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! अल्लाह ने जो माल आपको दिया है, उसमें से मुझे भी देने का आदेश दीजिए।" रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उसकी ओर मुड़े, मुस्कुराए और उसे कुछ देने का आदेश दिया।

(सहीह मुस्लिम, अनुवाद, जिल्द 4, पृष्ठ 227–228, किताबुज़-ज़कात, बाब इअता मन सअल बिफ़ुहूश व ग़िलज़ह, हदीस संख्या 1735, नूर फ़ाउंडेशन)

इस घटना का एक स्थान पर अधिक विस्तार से वर्णन मिलता है।

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि: नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हमारे साथ बैठकर बातचीत किया करते थे। फिर जब आप उठते, तो हम भी उठ जाते, यहाँ तक कि आप अपनी किसी पत्नी के घर में प्रवेश कर जाते। एक दिन आप हमसे बातचीत कर रहे थे। जब आप उठे तो हम भी उठ गए। तभी हमने एक देहाती को देखा जिसने आपकी चादर पकड़कर आपको अपनी ओर ज़ोर से खींचा। इससे आपकी गर्दन लाल हो गई। हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वह चादर बहुत खुरदरी थी। फिर जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उसकी ओर मुड़े, तो उस देहाती ने कहा: "मेरे इन दोनों ऊँटों पर माल लदवा दीजिए, क्योंकि आप न तो अपने माल में से देंगे और न अपने पिता के माल में से।" उसने यह बात बहुत ही बदतमीज़ी से कही। रावी कहते हैं कि इस पर नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "नहीं! और मैं अल्लाह से क्षमा माँगता हूँ। नहीं! और मैं अल्लाह से क्षमा माँगता हूँ। नहीं! और मैं अल्लाह से क्षमा माँगता हूँ।" आपने इस्तिग़फ़ार भी किया और फिर फ़रमाया: "मैं अभी तुम्हें नहीं दूँगा, जब तक तुम मेरे साथ किए गए इस व्यवहार का बदला नहीं देते। तुमने मेरी चादर खींची और मेरी गर्दन पर निशान डाल दिया, पहले उसका बदला दो।" हर बार वह देहाती कहता रहा: "अल्लाह की क़सम! मैं इसका बदला नहीं दूँगा।" वह बार-बार यही कहता रहा। उसने कहा: "क्योंकि आप बुराई का बदला बुराई से नहीं लेते।" उसने यह बात चतुराई से कही। वह देहाती भी समझदार था। उसे मालूम था कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बुराई का बदला बुराई से नहीं देते। इसलिए उसने समझ लिया कि मुझसे बदला लेने का प्रश्न ही नहीं उठता। मैंने तो बुरा किया है, लेकिन आप मेरे साथ बुरा व्यवहार नहीं करेंगे। यह सुनकर नबी करीम

सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मुस्कुरा पड़े। फिर आपने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया: "इसके दोनों ऊँटों में से एक पर जौ और दूसरे पर खजूरें लाद दो।" दोनों ऊँट भर दिए गए। इस प्रकार आपने न केवल उसे माल दिया, बल्कि उसकी बदतमीज़ी और ज़्यादती को भी माफ़ कर दिया।

(सुनन अबू दाऊद, किताबुल अदब, बाब फ़िल हिल्म व अख़लाकिन्नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम, हदीस संख्या 4775)(शर्ह ज़रक़ानी अला अल-मवाहिब अल-लदुनिय्या, जिल्द 6, पृष्ठ 25, अल-फ़स्लुस्सानी: फ़ीमा अकरमहुल्लाहु तआला बिहि मिनल अख़लाकिज़्ज़किय्यह, दारुल कुतुब अल-इल्मिय्या, बैरूत, 1996)

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "यदि हमारे पास बहरीन का माल आ गया, तो मैं तुम्हें इस तरह, इस तरह और इस तरह दूँगा।" यह कहते समय आपने दोनों हाथों को मिलाकर संकेत किया। लेकिन बहरीन का माल आने से पहले ही नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का देहांत हो गया। बाद में वह माल हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु के पास आया। उन्होंने घोषणा करवाई:= "जिससे भी नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कोई वादा किया हो या जिस पर आपका कोई कर्ज़ हो, वह आ जाए।" इस पर मैं खड़ा हुआ और मैंने कहा: "रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझसे फ़रमाया था कि यदि बहरीन का माल आया, तो मैं तुम्हें इस तरह, इस तरह और इस तरह दूँगा।" इस पर हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने दोनों हाथों से एक भरकर मुझे दिया और कहा: "इसे गिनो।" मैंने गिना तो वह पाँच सौ दिरहम निकले। फिर उन्होंने फ़रमाया: "इसके बराबर दो गुना और ले लो।" हज़रत अला बिन हज़रमी रज़ियल्लाहु अन्हु, जिन्हें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बहरीन का प्रशासक नियुक्त किया था, उन्होंने ही बहरीन से यह धन भेजा था। और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के देहांत के बाद भी हज़रत अला उसी पद पर बने रहे।

(सहीह मुस्लिम, अनुवाद, जिल्द 12, पृष्ठ 224–225, किताबुल फ़ज़ाइल, बाब मा सु'इला रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम शैअन क़त्तु फ़क़ाला ला व कसरतु अताइहि, हदीस संख्या 4264, नूर फ़ाउंडेशन) (शर्ह ज़रक़ानी अला अल-मवाहिब अल-लदुनिय्या, जिल्द 4, पृष्ठ 556, फ़ी उमराइहि व रुसुलिहि..., दारुल कुतुब अल-इल्मिय्या, बैरूत, 1996)

हारून बिन रिआब रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि: एक बार नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास सत्तर हज़ार दिरहम आए। उस समय तक यह सबसे अधिक धन था जो आपके पास आया था। यह सारा धन एक चटाई पर रख दिया गया। फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उसे बाँटने के लिए खड़े हो गए। जो भी माँगने वाला आया, आप उसे खाली हाथ नहीं लौटाते थे, यहाँ तक कि पूरा धन बाँट दिया गया।

(अख़लाकुन्नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम व आदाबुहू, पृष्ठ 103–104, हदीस संख्या 97, मक्तबा दारुल लुअलुअह)

यह इस रिवायत में है। लेकिन बाद में इससे भी अधिक धन आपके पास आया। संभव है कि रावी के ज्ञान के अनुसार वही सबसे अधिक धन रहा हो, या जब यह घटना हुई उस समय तक वही सबसे अधिक धन रहा हो। क्योंकि इससे पहले जो बहरीन का धन आया था, वह इससे कहीं अधिक था।

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि: एक व्यक्ति नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित हुआ और उसने कुछ माँगा। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसके लिए आधा वसक अनाज उधार लेकर उसे दे दिया।(एक वसक लगभग साठ सा के बराबर होता है और एक सा लगभग ढाई सेर के बराबर होता है।) बाद में जिसने वह अनाज उधार दिया था, वह अपना उधार माँगने आया। आपने उसे पूरा एक वसक अनाज दिया और फ़रमाया: "इसका आधा तुम्हारे कर्ज़ की अदायगी है और आधा तुम्हारे लिए उपहार है।"

(अश-शिफ़ा बि-तअरीफ़ हुक़ूक़िल मुस्तफ़ा, क़ाज़ी अयाज़, पृष्ठ 77–78, फ़स्ल: व अम्मल जूदु वल करम..., दारुल कुतुब अल-इल्मिय्या, बैरूत, 2002)(लुग़ातुल हदीस, जिल्द 2, पृष्ठ 648; जिल्द 4, पृष्ठ 487)

यह कर्ज़ लौटाने का सबसे उत्तम तरीका है। उस व्यक्ति ने आधा वसक अनाज उधार दिया था, लेकिन आपने उसे पूरा एक वसक वापस दिया। यही कर्ज़ चुकाने का श्रेष्ठ तरीका है, न कि मूल कर्ज़ लौटाने में भी टालमटोल की जाए।

हज़रत सहल बिन सअद साइदी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिए काले रंग का एक ऊनी जुब्बा (लंबा ऊपरी वस्त्र) तैयार किया गया। एक दिन आप वही जुब्बा पहनकर सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम के बीच आए। आपने फ़रमाया: "क्या तुम नहीं देखते कि यह कितना सुंदर है?"एक देहाती ने अर्ज़ किया: "ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! मेरे माता-पिता आप पर कुर्बान हों। कृपया यह जुब्बा मुझे दे दीजिए।"और ऐसा कभी नहीं हुआ कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से कोई चीज़ माँगी गई हो और आपने "नहीं" कहा हो। इसलिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपना जुब्बा उतारकर उसे दे दिया।

(सुबुलुल हुदा वर्रशाद, जिल्द 7, पृष्ठ 53, फ़ी करमिहि व जूदिहि सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम, दारुल कुतुब अल-इल्मिय्या, बैरूत, 1993)

एक बहुत ही सुंदर रिवायत है। हज़रत इब्न उमर रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक कपड़ा बेचने वाले से चार दिरहम में एक कमीज़ खरीदी। वह कमीज़ पहनकर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बाहर आए। अंसार में से एक व्यक्ति ने कहा: "ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! यह कमीज़ मुझे दे दीजिए। अल्लाह तआला आपको जन्नत का वस्त्र पहनाए।" आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने वह कमीज़ उतारकर उसे दे दी। फिर आप दुकान पर गए और चार दिरहम में एक दूसरी कमीज़ खरीद ली। उस समय आपके पास दो दिरहम बच गए थे। शुरू में आपके पास कुल दस दिरहम थे। चार दिरहम में पहली कमीज़ खरीदी, फिर चार दिरहम में दूसरी कमीज़ खरीदी और दो दिरहम बच गए। जब आप वापस आ रहे थे तो रास्ते में एक दासी को रोते हुए देखा। आपने उससे रोने का कारण पूछा। उसने कहा: "ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! मेरे घरवालों ने मुझे दो दिरहम दिए थे ताकि मैं उनसे आटा खरीदकर लाऊँ, लेकिन वे रास्ते में कहीं गिर गए और खो गए।" नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने पास बचे हुए दोनों दिरहम उसे दे दिए। वह लौटने लगी, लेकिन फिर रोने लगी। आपने पूछा: "अब क्यों रो रही हो? तुम्हारे पास तो दो दिरहम हैं। जाओ और आटा खरीद लो।" उसने कहा: "मुझे डर है कि घर वाले मुझे मारेंगे कि इतनी देर कहाँ लगी?" तब आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम स्वयं उसके साथ उसके घर चले गए। आपने उनके घर पहुँचकर सलाम किया। उन्होंने आपकी आवाज़ पहचान ली, लेकिन उत्तर नहीं दिया और चुप रहे। आपने दूसरी बार सलाम किया, फिर भी वे चुप रहे। आपने तीसरी बार सलाम किया। तब उन्होंने सलाम का जवाब दिया। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पूछा: "क्या तुमने मेरा पहला सलाम नहीं सुना था?" उन्होंने कहा: "सुना था, लेकिन हम चाहते थे कि आप बार-बार हमें सलाम करें और हमारे लिए सलामती की दुआ करें।" यह सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम की चाहत थी। फिर उन्होंने पूछा: "ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! हमारे माँ-बाप आप पर क़ुर्बान हों। आप यहाँ कैसे तशरीफ़ लाए?" आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "यह बच्ची डर रही थी कि तुम इसे मारोगे।" उस दासी के मालिक ने कहा: "आपके इसके साथ आने की वजह से मैं इस दासी को अल्लाह की ख़ातिर आज़ाद करता हूँ।" नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें भलाई और जन्नत की शुभ सूचना दी और फिर फ़रमाया: "अल्लाह ने इन दस दिरहमों में बड़ी बरकत रखी है। इन्हीं से अल्लाह ने अपने नबी को भी कमीज़ पहनाई, एक अंसारी को भी कमीज़ पहनाई और एक दासी को भी आज़ादी दिला दी।"

(अल-मुअजमुल कबीर, तबरानी, जिल्द 12, पृष्ठ 441–442, हदीस संख्या 13607, मक्तबा इब्न तैमिय्या, काहिरा)

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में अंगूर का एक गुच्छा उपहार के रूप में पेश किया। एक दूसरी रिवायत में खजूरों का गुच्छा बताया गया है। कहीं अंगूर का उल्लेख है और कहीं खजूर का। बहरहाल, उसी समय एक माँगने वाला आया तो आपने वह उसे दे दिया।

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने उस गुच्छे को उस व्यक्ति से एक दिरहम में फिर खरीद लिया। संभवतः वह बहुत अच्छी किस्म का अंगूर या खजूर था। उन्होंने उसे दोबारा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में पेश कर दिया।

फिर वही माँगने वाला दोबारा आया और आपने फिर वही गुच्छा उसे दे दिया। इसी प्रकार यह घटना तीन बार हुई। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु हर बार उसे खरीदकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को भेंट करते और वह व्यक्ति फिर आकर माँग लेता, तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उसे फिर दे देते।

आख़िर में नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बहुत नरमी से उस व्यक्ति से फ़रमाया: "ऐ फलाँ! तुम सचमुच ज़रूरतमंद हो या व्यापारी? तुम माँगने आए हो, लेकिन माँगने वाले इस तरह नहीं करते। तुम तो दिरहम भी कमा रहे हो और व्यापार भी कर रहे हो।"

(तफ़सीर रूहुल मआनी, सूरह अद्-दुहा की आयत के अंतर्गत, जिल्द 15, जुज़ 29–30, पृष्ठ 376, दारुल कुतुब अल-इल्मिय्या)

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसे मना नहीं किया, बल्कि बहुत ही बुद्धिमानी से समझाया कि जो तरीका वह अपना रहा है, वह उचित नहीं है। हज़रत अब्दुल्लाह

बिन सलाम रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि जब अल्लाह तआला ने ज़ैद बिन सअनह रज़ियल्लाहु अन्हु को हिदायत देने का इरादा किया, तो ज़ैद ने कहा: "नुबुव्वत की जितनी भी निशानियाँ थीं, वे सब मुझे मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के चेहरे में दिखाई दे गईं, केवल दो बातें ऐसी थीं जिनके बारे में मुझे अभी तक पूरा विश्वास नहीं हुआ था कि वे आपमें हैं या नहीं।" पहली यह कि: "इस नबी का धैर्य (हिल्म) उसके गुस्से पर हमेशा भारी होगा।" दूसरी यह कि: "जितनी अधिक उसके साथ अज्ञानता और कठोरता से व्यवहार किया जाएगा, उतना ही अधिक उसका धैर्य और सहनशीलता बढ़ेगी।" ज़ैद कहते हैं: "मैं अवसर की तलाश में था कि किसी दिन इन दोनों बातों की भी परीक्षा करूँ।" फिर एक दिन अवसर मिल गया। वे कहते हैं कि एक दिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम घर से बाहर आए। आपके साथ हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु भी थे। इसी दौरान एक घुड़सवार आया, जो किसी देहाती जैसा दिखाई देता था। उसने अर्ज़ किया: "ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! बनू फलाँ के गाँव बुस्रा के लोग मुसलमान हो गए हैं। मैंने उनसे कहा था कि यदि वे इस्लाम स्वीकार करेंगे तो अल्लाह उन्हें भरपूर रोज़ी देगा। लेकिन इस समय वर्षा न होने के कारण वे अकाल और कठिनाई में हैं। मुझे डर है कि कहीं वे लालच या मजबूरी में इस्लाम छोड़ न दें, क्योंकि वे अच्छी रोज़ी की आशा में मुसलमान हुए थे। यदि आप उचित समझें तो उनकी सहायता के लिए कुछ भेज दें।" आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसकी ओर देखा। उस समय हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया: "इस समय हमारे पास ऐसा कुछ नहीं है जिसे तुरंत भेजा जा सके।" ज़ैद बिन सअनह कहते हैं: मैं पास ही खड़ा था। मैंने कहा: "ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! क्या आप बनू फलाँ के बाग़ की खजूरें निश्चित मात्रा और निश्चित समय पर बेच सकते हैं?" आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "ऐ यहूदी! निश्चित मात्रा और निश्चित समय के अनुसार खजूरें बेच सकता हूँ, लेकिन यह शर्त स्वीकार नहीं कर सकता कि वे अवश्य उसी बाग़ की खजूरें होंगी।" मैंने कहा: "ठीक है।" फिर सौदा हो गया। मैंने अपनी थैली खोली और अस्सी मिस्काल सोना अग्रिम दे दिया, इस शर्त पर कि निर्धारित समय पर आप मुझे निश्चित मात्रा में खजूरें देंगे। (एक मिस्काल लगभग 4.25 ग्राम के बराबर होता है।) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने वह सारा सोना उसी व्यक्ति को दे दिया जो सहायता माँगने आया था और फ़रमाया: "इसे उन मुसीबत में पड़े लोगों में बराबर बाँट देना और इसके द्वारा उनकी सहायता करना।" ज़ैद बिन सअनह कहते हैं कि निर्धारित समय पूरा होने में अभी दो-तीन दिन बाकी थे कि मैं आपके पास आया। मैंने आपका कुर्ता पकड़ लिया, चादर खींची और गुस्से का रूप बनाकर कहा: "ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! क्या आप मेरा हक़ अदा नहीं करेंगे? अल्लाह की क़सम! मैं बनू अब्दुल मुत्तलिब को अच्छी तरह जानता हूँ। वे कर्ज़ चुकाने में अच्छे नहीं होते और मुझे आपकी टालमटोल का भी अनुभव है।" हालाँकि ऐसी कोई बात थी ही नहीं। लेकिन उस समय वह आपकी परीक्षा लेना चाहता था। ज़ैद कहते हैं कि मैंने देखा कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का चेहरा गुस्से से लाल हो गया और उनकी आँखें घूमने लगीं। उन्होंने मुझे कठोर दृष्टि से देखा और कहा: "ऐ अल्लाह के दुश्मन! तू अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से ऐसी बातें करता है जो मैं सुन रहा हूँ और ऐसी गुस्ताख़ी करता है जो मैं देख रहा हूँ! उस अल्लाह की क़सम जिसने इन्हें सत्य के साथ भेजा है, यदि मुझे इनका डर न होता तो मैं अपनी तलवार से तेरा सिर उड़ा देता।" ज़ैद कहते हैं कि उस समय रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पूरी शांति और सुकून के साथ हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की ओर देख रहे थे और मुस्कुरा रहे थे। फिर आपने फ़रमाया: "ऐ उमर! इस ग़ुस्से के बजाय तुम्हें चाहिए था कि मुझे अच्छे ढंग से कर्ज़ चुकाने की और इसे अच्छे ढंग से अपना हक़ माँगने की नसीहत करते।" फिर आपने फ़रमाया: "ऐ उमर! इसे ले जाओ और इसका पूरा हक़ अदा कर दो। बल्कि बीस सा खजूरें और अधिक दे देना।" मैंने पूछा: "ऐ उमर! यह अतिरिक्त क्यों?" उन्होंने कहा: "रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझे आदेश दिया है कि तुम्हारी कठोरता के बदले तुम्हें अधिक दिया जाए।" मैंने कहा: "क्या आप जानते हैं कि मैं कौन हूँ?" उन्होंने कहा: "नहीं, आप कौन हैं?" मैंने कहा: "मैं ज़ैद बिन सअनह हूँ।" हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने पूछा: "वही यहूदियों के बड़े विद्वान?" मैंने कहा: "हाँ।" उन्होंने पूछा: "इतने बड़े विद्वान होकर भी तुमने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ ऐसा व्यवहार क्यों किया?" मैंने कहा: "ऐ उमर! नुबुव्वत की जितनी निशानियाँ थीं, वे सब मैंने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम में देख ली थीं। केवल दो निशानियाँ रह गई थीं। पहली यह कि क्या वास्तव में आपका धैर्य आपके गुस्से पर भारी है, और दूसरी यह कि जितना अधिक आपके साथ कठोरता की जाएगी, उतना ही अधिक आपका धैर्य बढ़ेगा। आज मैंने इन दोनों बातों की परीक्षा कर ली है।" फिर मैंने कहा: "ऐ उमर! मैं आपको गवाह बनाता हूँ कि मैं अल्लाह को अपना रब, इस्लाम को अपना धर्म और मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अपना नबी मानता हूँ। और मैं आपको गवाह बनाता हूँ कि मेरा आधा माल, क्योंकि मैं एक धनवान व्यक्ति हूँ, उम्मत-ए-मुहम्मद के लिए सदक़ा है।" हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा: "सारी उम्मत के लिए नहीं, बल्कि उम्मत के कुछ लोगों के लिए कहो, क्योंकि पूरी उम्मत की गिनती ही नहीं हो सकती। तुम्हारा माल उन सबके लिए पर्याप्त नहीं होगा।" मैंने कहा: "ठीक है, उम्मत के कुछ लोगों के लिए सदक़ा है।" इसके बाद ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित हुए और अर्ज़ किया: "मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई पूज्य नहीं और मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अल्लाह के बंदे और उसके रसूल हैं। मैं आप पर ईमान लाता हूँ।" इस प्रकार ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु ने आपकी सत्यता स्वीकार की, बैअत की और कई युद्धों में आपके साथ शामिल रहे। यहाँ तक कि ग़ज़वा-ए-तबूक से वापसी के दौरान रास्ते में ही उनका देहांत हो गया।

(मुस्तद्रक अलस्सहीहैन, हाकिम, भाग 4, पृष्ठ 328–329, किताब मआरिफतुस्सहाबा, बाब ज़िक्र इस्लाम ज़ैद बिन सअनह मौला रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम, हदीस संख्या 6665, दारुल फ़िक्र, बैरूत, 2002)(https://en.wikipedia.org/wiki/Mithqal)

वे यहूदियों के बड़े विद्वान थे। उनका स्वभाव नेक था। उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को देखा, नुबुव्वत की सभी निशानियाँ देखीं और अंततः इस्लाम स्वीकार कर लिया।

यही था रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का श्रेष्ठ चरित्र। आपने केवल कर्ज़ लेकर एक पूरी क़ौम को भूख से नहीं बचाया, बल्कि अपने उत्तम आचरण के द्वारा एक यहूदी विद्वान को भी मुसलमान बना लिया।

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ

हे अल्लाह! मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और उनकी संतान पर अपनी रहमतें नाज़िल फ़रमा, उन पर बरकतें प्रदान कर और उन्हें सलामती दे। निस्संदेह तू ही सभी प्रशंसाओं का अधिकारी और अत्यंत महिमावान है।

* * *

संपूर्ण जमाअत के अहमदिया के लिए एक आवश्यक स्मरण!

अपने प्यारे इमाम, अमीरुल मोमिनीन, हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद, ख़लीफ़तुल मसीह पंचम (अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़) के मुबारक निर्देश के अनुसार, अपने आपको आध्यात्मिक लोहे के किले में सुरक्षित रखने के लिए,

क्या आज हमने निम्नलिखित दुआओं का विर्द कर लिया है?

200 बार दुरूद शरीफ़

(बड़ी आयु के व्यक्ति – 200 बार; 15 से 25 वर्ष की आयु के व्यक्ति – (कम से कम) 100 बार; बच्चे – 33 बार; छोटे बच्चे – माता-पिता के साथ 3 से 4 बार)

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ سُبْحَانَ اللّٰهِ الْعَظِيْمِ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّاٰلِ مُحَمَّدٍ

अनुवाद: अल्लाह अपनी समस्त प्रशंसा के साथ पाक है। अल्लाह पाक है, जो अत्यन्त महान है।

हे अल्लाह! हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की आल (परिवार) पर अपनी रहमतें और बरकतें नाज़िल फ़रमा।

(Holy is Allah and worthy of all praise. Holy is Allah, the Great. O Allah! bestow Your blessings on Muhammad[sa] and on the people of Muhammad[sa].)

100 बार इस्तिग़फ़ार

اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ رَبِّيْ مِنْ كُلِّ ذَنْبٍ وَّاَتُوْبُ اِلَيْهِ

अनुवाद: मैं अल्लाह से, जो मेरा रब है, अपने हर गुनाह की माफ़ी माँगता हूँ और उसी की ओर झुकता हूँ।

100 बार निम्नलिखित दुआ

رَبِّ كُلُّ شَيْءٍ خَادِمُكَ رَبِّ فَاحْفَظْنِيْ وَانْصُرْنِيْ وَارْحَمْنِيْ

अनुवाद: हे मेरे रब! हर एक चीज़ तेरी ख़िदमत करने वाली है। हे मेरे रब! इसलिए मुझे सुरक्षित रख, मेरी सहायता कर और मुझ पर रहम फ़रमा।

(O my Lord! Everything serves You. So, O my Lord, protect me and help me and have mercy on me.)

अल्लाह तआला हम सबको व्यक्तिगत और सामूहिक, हर दृष्टि से इस आध्यात्मिक लोहे के किले में प्रवेश करने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए। (आमीन)

***

जीवनी हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम धार्मिक सहिष्णुता और अंतरात्मा की स्वतंत्रता के संबंध में हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की शिक्षाएँ और आदर्श आचरण

(जलसा सालाना क़ादियान, दिसंबर 2025 का भाषण प्रस्तुतकर्ता:आदरणीय मुहम्मद इनआम गौरी साहब, नाज़िर आला, क़ादियान)

لَاۤ اِکۡرَاہَ فِی الدِّیۡنِ ۟ۙ قَدۡ تَّبَیَّنَ الرُّشۡدُ مِنَ الۡغَیِّ (البقرہ:257)

अनुवाद : धर्म में कोई ज़बरदस्ती नहीं है। निस्संदेह, हिदायत गुमराही से स्पष्ट रूप से अलग होकर सामने आ चुकी है।

وَقُلِ الۡحَقُّ مِنۡ رَّبِّکُمۡ ۟ فَمَنۡ شَآءَ فَلۡیُؤۡمِنۡ وَّمَنۡ شَآءَ فَلۡیَکۡفُرۡ (الکھف:30)

अनुवाद: और कह दो कि सत्य वही है जो तुम्हारे रब की ओर से है। फिर जो चाहे वह ईमान ले आए और जो चाहे इंकार कर दे।

"कहो, हम ख़ुदा पर ईमान लाए और उस पर भी जो हमारी ओर उतारा गया, और उस पर भी जो इबराहीम, इस्माईल, इस्हाक़, याक़ूब और उनकी संतान पर उतारा गया, तथा जो मूसा और ईसा (अलैहिमुस्सलाम) को दिया गया, और जो सभी नबियों को उनके रब की ओर से प्रदान किया गया। हम उनमें से किसी के बीच कोई भेद नहीं करते और हम उसी के आज्ञाकारी हैं।" (सूरह अल-बक़रह : 137)

(हे मुसलमानो!) तुम कह दो कि हम ख़ुदा पर ईमान लाए, और उस पर जो हमारी ओर उतारा गया, तथा उस पर जो इबराहीम, इस्माईल, इस्हाक़, याक़ूब और उनकी संतान की ओर उतारा गया। और जो मूसा तथा ईसा (अलैहिमुस्सलाम) को दिया गया, तथा उस पर भी जो सभी नबियों को उनके रब की ओर से दिया गया। हम उनमें से किसी के बीच कोई भेद नहीं करते और हम उसी के आज्ञाकारी हैं।

आदरणीय श्रोतागण! धार्मिक सहिष्णुता और अंतरात्मा की स्वतंत्रता के संबंध में पवित्र क़ुरआन ने अनेक स्थानों पर ऐसे मूल सिद्धांत और आदेश बताए हैं कि यदि उन्हें ध्यान में रखा जाए और उन पर अमल किया जाए, तो धर्म के नाम पर होने वाले झगड़े, हत्या और हिंसा जैसी घटनाओं का पूरी तरह अंत हो सकता है। बशर्ते कि इन शांति देने वाली और मेल-मिलाप सिखाने वाली शिक्षाओं को राजनीतिक स्वार्थों से अलग रखा जाए।

समय की सीमा को देखते हुए मैंने केवल तीन आयतें और उनका अनुवाद प्रस्तुत किया है। यहाँ यह मूल बात समझने और याद रखने योग्य है कि धर्म किसी राजनीतिक दल, किसी जाति या किसी देश का नाम नहीं है। बल्कि धर्म का वास्तविक उद्देश्य यह है कि वह मनुष्य की शारीरिक, नैतिक और आध्यात्मिक अवस्थाओं को सुधारता है और फिर उसे अपने वास्तविक सृष्टिकर्ता से सच्चा और मजबूत संबंध स्थापित करने का मार्ग दिखाता है।

इसी उद्देश्य के लिए सारे संसार का पालनहार ख़ुदा हर देश और हर क़ौम में अपने मार्गदर्शक, रहनुमा और पैग़म्बर भेजता रहा है। जैसा कि उसने फ़रमाया: "और हर एक उम्मत के लिए एक रसूल होता है।" (सूरह यूनुस : 48) अर्थात प्रत्येक समुदाय के लिए कोई न कोई रसूल होता है। इसी प्रकार उसने फ़रमाया: "और हर एक क़ौम के लिए एक मार्गदर्शक होता है।" (सूरह अर-रअद : 8)

इसी कारण मुसलमानों को यह शिक्षा दी गई है कि जिस प्रकार तुम हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर उतारी गई वह्यी अर्थात पवित्र क़ुरआन पर ईमान रखते हो, उसी प्रकार अपने ईमान की पूर्णता के लिए यह भी आवश्यक है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से पहले जिन नबियों पर ख़ुदा की वह्यी और उसका कलाम उतरता रहा, और जो अपने-अपने समय में उसी वह्यी और अपनी-अपनी शरीअत के अनुसार अपनी क़ौम की सुधार और मार्गदर्शन का कार्य करते रहे, उन सभी नबियों और उनकी लाई हुई शरीअतों पर भी सिद्धांततः ईमान रखो। और यह स्वीकार करो कि: "हम उसके रसूलों में से किसी के बीच कोई भेद नहीं करते।" अर्थात हम मुसलमान ख़ुदा के रसूलों के बीच कोई भेदभाव नहीं करते। यानी रसूल होने के पद के अनुसार सभी समान हैं, यद्यपि उनकी जिम्मेदारियों, कर्तव्यों और कार्यक्षेत्र के अनुसार उनके दर्जों में अंतर अवश्य है।

इस संक्षिप्त भूमिका के बाद अब धार्मिक सहिष्णुता और अंतरात्मा की स्वतंत्रता के संबंध में क़ुरआन की शिक्षाओं के प्रकाश में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के कथनों और उनके आदर्श आचरण के कुछ उदाहरण समय की सीमा को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत किए जाते हैं।

यदि बात घर से शुरू करें तो सामान्यतः यह देखा जाता है कि यदि किसी बेटे ने अपना धर्म बदल लिया, तो माता-पिता ने उसका बहिष्कार कर दिया। रिश्तेदारों और बिरादरी वालों ने भी उससे सामाजिक संबंध समाप्त कर लिए। ऐसी स्थिति में एक मुसलमान को क्या शिक्षा दी गई है?

एक बार एक व्यक्ति ने निवेदन किया, "हे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम! मेरे कुछ रिश्तेदार हैं। मैं उनसे संबंध जोड़ता हूँ, लेकिन वे तोड़ देते हैं। मैं उनके साथ भलाई करता हूँ, लेकिन वे मेरे साथ बुरा व्यवहार करते हैं। मैं नरमी और धैर्य से पेश आता हूँ, लेकिन वे उसके बदले अत्याचार और अज्ञानता का व्यवहार करते हैं।"

हज़रत नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

"यदि वे वास्तव में ऐसा ही करते हैं जैसा तुमने बताया है, तो मानो तुम उनके मुँह पर धूल डाल रहे हो। अर्थात तुम उन पर उपकार करके उन्हें इतना लज्जित कर रहे हो कि वे किसी को मुँह दिखाने योग्य नहीं रहते। और जब तक तुम अपने इस उत्तम व्यवहार पर कायम रहोगे, तब तक ख़ुदा की ओर से एक सहायक फ़रिश्ता तुम्हारी सहायता के लिए नियुक्त रहेगा।" (मुस्नद अहमद, जिल्द 2, पृष्ठ 300, मुद्रित मिस्र)

हज़रत अस्मा बिन्त अबू बक्र (रज़ि.) बयान करती हैं:

मेरी मुश्रिक (बहुदेववादी) माता मुझसे मिलने मदीना आईं। मैंने नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से पूछा कि क्या मैं उनके मुश्रिक होने के बावजूद उनके साथ अच्छा व्यवहार करूँ? आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "क्यों नहीं? आखिर वह तुम्हारी माँ हैं। अवश्य उनके साथ अच्छा व्यवहार करो।"

(सहीह बुख़ारी, किताबुल अदब, बाब: सिला अल-वलद अल-मुश्रिक)

हज़रत रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के अधिकांश रिश्तेदारों ने आपके नुबुव्वत के दावे का अत्यंत कठोर विरोध किया। लेकिन आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम फ़रमाते थे: "निस्संदेह क़ुरैश का अमुक परिवार मेरा दुश्मन हो गया है, लेकिन आखिर मेरा उनसे रक्त संबंध है। इसलिए मैं रिश्तेदारी के अधिकार हर हाल में निभाता रहूँगा।"

इसी प्रकार आपके एक सहाबी हज़रत सुमामा बिन उसाल यमामा में रहते थे और वहीं से मक्का वालों के लिए गेहूँ भेजा जाता था। जब उन्होंने इस्लाम स्वीकार कर लिया और उन्हें पता चला कि मक्का वाले नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ अत्याचार कर रहे हैं, तो उन्होंने निर्णय किया कि आज के बाद यमामा से गेहूँ का एक भी दाना मक्का नहीं जाएगा। उन्होंने मक्का वालों से कह दिया कि जब तक मेरे प्रिय रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अनुमति नहीं देंगे, तब तक यमामा से एक दाना भी नहीं भेजा जाएगा। तब मक्का वालों ने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सेवा में निवेदन किया: "आप तो रिश्तेदारी निभाने की शिक्षा देते हैं। हमारी गेहूँ की आपूर्ति बंद हो गई है और हम भूख से मर रहे हैं। हम पर दया कीजिए।" तब समस्त संसार के लिए रहमत बनकर आए उस महान रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की करुणा के कारण मक्का वालों के लिए फिर से गेहूँ भेजा जाने लगा।

(अस-सीरतुन-नबविय्यह, इब्न हिशाम)

इसी प्रकार मदीना हिजरत के बाद मक्का के लोगों पर एक भयंकर अकाल आ पड़ा। यहाँ तक कि उन्हें हड्डियाँ और मरे हुए जानवरों का मांस खाने की नौबत आ गई। मजबूर होकर अबू सुफ़ियान हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सेवा में उपस्थित हुए और कहा: "हे मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम! आप तो रिश्तेदारी निभाने का आदेश देते हैं, जबकि आपकी क़ौम नष्ट हो रही है। हमारे लिए दुआ कीजिए कि वर्षा हो और यह अकाल समाप्त हो जाए।" हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने इस बात की परवाह नहीं की कि यही मक्का वाले थे जिन्होंने आपको और आपके परिवार को लगातार तीन वर्षों तक शिअब-ए-अबी तालिब में घेरकर रखा था, यहाँ तक कि खाने-पीने की चीज़ें भी वहाँ नहीं पहुँचने देते थे। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने तुरंत दुआ के लिए अपने हाथ उठा दिए। आपकी दुआ इतनी स्वीकार हुई कि खूब वर्षा हुई और मक्का के लोगों के लिए फिर से सुख और समृद्धि के दिन लौट आए।(सहीह बुख़ारी, किताबुत-तफ़्सीर, सूरह अर-रूम तथा सूरह अद-दुख़ान)

अब अपने रिश्तेदारों से आगे बढ़कर यदि पड़ोसियों की बात करें, तो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने पड़ोसियों के साथ, चाहे वे मुसलमान हों या ग़ैर-मुस्लिम, इतना अधिक सहिष्णुता और अच्छे व्यवहार का आदेश दिया है कि यदि इस पर अमल किया जाए, तो केवल धर्म के मतभेद के कारण कभी भी आपसी झगड़े पैदा न हों।

हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) बयान करते हैं कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि

व सल्लम ने फ़रमाया: "ख़ुदा की क़सम! वह व्यक्ति मोमिन नहीं है। ख़ुदा की क़सम! वह व्यक्ति मोमिन नहीं है। ख़ुदा की क़सम! वह व्यक्ति मोमिन नहीं है।" (आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने यही शब्द तीन बार दोहराए।) आपसे पूछा गया, "हे अल्लाह के रसूल! वह कौन व्यक्ति है जो मोमिन नहीं है?" आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "वह व्यक्ति, जिसका पड़ोसी उसकी शरारतों और उसके अचानक किए गए नुकसान से सुरक्षित न हो।" (सहीह बुख़ारी)

अचानक होने वाली तकलीफ़ें कई प्रकार की होती हैं। कभी कोई व्यक्ति रात के समय रेडियो या टी.वी. बहुत ऊँची आवाज़ में चलाता है, जिससे उसका पड़ोसी चैन की नींद नहीं सो पाता। कभी घर का कूड़ा पड़ोसी के दरवाज़े के सामने डाल दिया जाता है, आदि।

हज़रत अबू ज़र (रज़ि.) बयान करते हैं कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उनसे कहा: "हे अबू ज़र! जब भी तुम कोई अच्छा सालन बनाओ तो उसका शोरबा कुछ अधिक बना लिया करो और अपने पड़ोसी का भी ध्यान रखा करो, अर्थात कभी-कभी अपने पड़ोसियों को भी सालन भेज दिया करो।" हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) बयान करते हैं कि एक व्यक्ति ने रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से निवेदन किया: "मुझे कैसे पता चले कि मैं अच्छा काम कर रहा हूँ या बुरा?" आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जब तुम अपने पड़ोसियों को यह कहते सुनो कि तुम बहुत अच्छे हो, तो समझ लो कि तुम्हारा व्यवहार अच्छा है। और जब तुम उन्हें यह कहते सुनो कि तुम बहुत बुरे हो, तो समझ लो कि तुम्हारा व्यवहार बुरा है।" (इब्न माजा)

फिर यह कि अपने धर्म या मत का प्रचार करने के लिए किसी पर ज़बरदस्ती करना या युद्ध करना हरगिज़ जायज़ नहीं है। पवित्र क़ुरआन का स्पष्ट कथन मैं आरम्भ में प्रस्तुत कर चुका हूँ:"दीन के मामले में कोई ज़बरदस्ती नहीं है।" अर्थात धर्म में किसी प्रकार का दबाव या बल प्रयोग स्वीकार नहीं है। साथ ही यह भी घोषित कर दिया गया कि सत्य तुम्हारे रब की ओर से आ चुका है। इसके बाद किसी प्रकार के बल प्रयोग का प्रश्न ही नहीं रहता, क्योंकि सत्य वही होता है जो अपनी सच्चाई और अच्छाई के बल पर लोगों के दिलों को जीत ले। उसका ज़बरदस्ती या हिंसा से कोई संबंध नहीं होता। अब लोगों को पूरा अधिकार है कि वे चाहें तो ईमान लाएँ और चाहें तो इंकार कर दें। एक दूसरी आयत में यह घोषणा की गई है: "तुम्हारे लिए तुम्हारा धर्म और मेरे लिए मेरा धर्म।"अर्थात हे काफ़िरों और इंकार करने वालो! तुम्हें अपने धर्म की स्वतंत्रता है और मुझे अपने धर्म की स्वतंत्रता।(सूरह अल-काफ़िरून : 7)

उपरोक्त आयतें धार्मिक स्वतंत्रता के चार मूल अधिकार प्रदान करती हैं।

<u>पहला</u>, किसी को ज़बरदस्ती किसी धर्म में शामिल नहीं किया जा सकता।

<u>दूसरा</u>, जो व्यक्ति अपनी इच्छा से किसी धर्म में प्रवेश करना चाहता है, उसे बलपूर्वक रोका नहीं जा सकता।

<u>तीसरा</u>, अपने विश्वास की घोषणा करने, उस पर बने रहने तथा अपने धार्मिक रीति-रिवाज और उपासना करने पर कोई रोक या ज़बरदस्ती नहीं की जा सकती।

<u>चौथा</u>, यदि कोई व्यक्ति किसी धर्म में नहीं रहना चाहता, तो उसे जबरन उस धर्म में नहीं रखा जा सकता, और जो रहना चाहता है उसे जबरन उससे निकाला भी नहीं जा सकता।

यह भी याद रखना चाहिए कि इस्लामी युद्धों पर यह जो आरोप लगाया जाता है कि वे इस्लाम का प्रचार करने के लिए लड़े गए थे, यह बिल्कुल गलत आरोप है। इस्लामी युद्ध केवल आत्मरक्षा के लिए थे या फिर फ़साद और उपद्रव को समाप्त करके शांति और सुरक्षा स्थापित करने के लिए थे।

हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का अपना आदर्श यह था कि यद्यपि अल्लाह तआला ने आपको पूरी दुनिया के लिए मार्गदर्शक और रसूल बनाकर भेजा था तथा आपको ख़ातिमुन्नबिय्यीन का सर्वोच्च दर्जा प्रदान किया था, फिर भी आपने कभी यह पसंद नहीं किया कि कोई मुसलमान बिना आवश्यकता के आपको दूसरे नबियों से श्रेष्ठ बताकर शांति का वातावरण खराब करे।

इसी संबंध में सहीह बुख़ारी में एक घटना आती है। एक बार एक यहूदी बाज़ार में सामान बेच रहा था। एक मुसलमान ने उसकी वस्तु का बहुत कम मूल्य लगाया। यह बात उस यहूदी को बुरी लगी और उसने कहा: "उस सत्ता की क़सम जिसने मूसा को सभी मनुष्यों पर श्रेष्ठता दी है।" यह सुनकर उस मुसलमान को ग़ुस्सा आ गया और उसने उस यहूदी को थप्पड़ मार दिया। वह यहूदी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सेवा में उपस्थित हुआ और बोला: "हम आपकी सुरक्षा और संरक्षण में रहते हैं, लेकिन इस मुसलमान ने मुझे थप्पड़ मारकर मेरे साथ ज़्यादती की है।" नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उस मुसलमान पर बहुत नाराज़ हुए और फ़रमाया: "मुझे नबियों के बीच श्रेष्ठता देकर विवाद का कारण मत बनाया करो।"

धार्मिक सहिष्णुता को बढ़ावा देने के लिए आवश्यक है कि धार्मिक मतभेदों के बावजूद उस बात को खोजने का प्रयास किया जाए जिस पर आपसी सहमति हो सकती हो और जिससे परस्पर घृणा समाप्त हो सके। इसीलिए अल्लाह तआला पवित्र क़ुरआन में फरमाता है— "कह दो, हे अहले-किताब! उस बात की ओर आओ जो हमारे और तुम्हारे बीच समान है कि हम अल्लाह के सिवा किसी की उपासना नहीं करेंगे, न किसी को उसका साझी ठहराएँगे, और हममें से कोई अल्लाह के सिवा किसी दूसरे को अपना पालनहार नहीं बनाएगा। फिर यदि वे मुँह फेर लें तो कह दो कि गवाह रहना, हम तो आज्ञाकारी (मुसलमान) हैं।" (सूरह आले-इमरान : 65)

देखिए, यहाँ एक ऐसी बात के आधार पर एकता की ओर बुलाया गया है जिस पर दोनों पक्ष सहमत हो सकते हैं। लेकिन यदि कोई इस सिद्धांत को भी स्वीकार करने के लिए तैयार न हो, तो उससे बहस या युद्ध करने की अनुमति नहीं है। केवल इतना कह देना पर्याप्त है कि हमारा विश्वास यही है और हम इसी पर ईमान रखते हैं।

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मक्का के काफ़िरों की लगातार विरोध और अत्याचारपूर्ण यातनाओं तथा विशेष रूप से मुसलमानों को अपने धर्म के अनुसार जीवन बिताने और उसका प्रचार करने से बलपूर्वक रोकने के कारण, ख़ुदा की अनुमति से मक्का से मदीना हिजरत की।

वहाँ कुछ नए मुसलमान परिवारों के अतिरिक्त यहूदियों के तीन क़बीले—बनू क़ैनुक़ा, बनू नज़ीर और बनू क़ुरैज़ा—तथा मुश्रिकों के दो क़बीले—औस और ख़ज़राज—रहते थे। इन पाँचों क़बीलों में किसी प्रकार की संगठित व्यवस्था नहीं थी। विशेष रूप से यहूदियों के तीनों क़बीले स्वतंत्र रूप से अपने-अपने क़िलों में रहते थे।

इन परिस्थितियों में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मदीना राज्य में धार्मिक सहिष्णुता और शांति स्थापित करने के उद्देश्य से विशेष रूप से यहूदी क़बीलों के साथ एक लिखित समझौता किया, जिसकी मुख्य शर्तें इस प्रकार थीं—

मुसलमान और यहूदी आपस में सद्भावना और ईमानदारी के साथ रहेंगे तथा एक-दूसरे पर अत्याचार नहीं करेंगे।

प्रत्येक समुदाय को धार्मिक स्वतंत्रता प्राप्त होगी।

हर प्रकार के विवाद और झगड़े के लिए हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास आया जाएगा और प्रत्येक समुदाय का निर्णय उसकी अपनी शरीअत के अनुसार किया जाएगा।

सभी नागरिकों के प्राण और संपत्ति सुरक्षित रहेंगे।

यदि यहूदियों या मुसलमानों पर कोई अन्य क़ौम युद्ध करेगी, तो दोनों एक-दूसरे की सहायता करेंगे।

यदि मदीना पर हमला होगा, तो सभी मिलकर उसका सामना करेंगे।

कोई भी पक्ष हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की अनुमति के बिना युद्ध के लिए नहीं निकलेगा।

इस समझौते के अनुसार कोई भी अत्याचारी या उपद्रवी अपने अपराध की सज़ा से नहीं बच सकेगा। आदि।

यद्यपि यहूदी क़बीले बार-बार इस समझौते का उल्लंघन करते रहे, फिर भी नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने सदैव वचन का पालन किया और उनके साथ अच्छा व्यवहार ही किया।

ऐसी कठिन परिस्थितियों में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अत्यंत बुद्धिमानी से मदीना राज्य की व्यवस्था संभाली। विशेष रूप से ऐसे राज्य में, जहाँ विभिन्न धर्मों और विभिन्न मतों के लोग रहते थे, वहाँ प्रत्येक व्यक्ति को अपने धर्म और विश्वास के अनुसार जीवन जीने, उसका प्रचार करने और शांतिपूर्ण ढंग से उसका पालन करने की स्वतंत्रता देना, और फिर स्वयं उसे व्यवहार में लागू करके दिखाना, धार्मिक स्वतंत्रता और सहिष्णुता का एक अद्वितीय उदाहरण है।

एक बार नज्रान से ईसाइयों का एक प्रतिनिधिमंडल धार्मिक विचार-विमर्श के लिए मदीना आया। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उन्हें बड़ी इज़्ज़त और सम्मान के साथ मस्जिद-ए-नबवी में ठहराया। जब वे अपनी उपासना के लिए बाहर जाने लगे, तो आपने फ़रमाया: "बाहर जाने की आवश्यकता नहीं है। आप इसी मस्जिद में अपने तरीके के अनुसार उपासना कर सकते हैं।" पवित्र क़ुरआन ने तो यहाँ तक शिक्षा दी है कि जो लोग अल्लाह के अतिरिक्त अन्य हस्तियों या वस्तुओं की पूजा करते हैं, तुम उन्हें भी बुरा मत कहो, कहीं ऐसा न हो कि वे अज्ञानता और शत्रुता में अल्लाह को बुरा कहने लगें। (सूरह अल-अनआम : 109)

ग़ज़वा-ए-उहुद के अवसर पर मक्का के मुश्रिकों ने मुस्लिम शहीदों के शवों का अंग-भंग किया था। उन्होंने उनके नाक, कान आदि काटकर उनका अपमान किया

था। लेकिन हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने कभी भी इस प्रकार का बदला नहीं लिया।

इसके विपरीत आपका आदर्श यह था कि एक बार एक यहूदी का जनाज़ा जा रहा था। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उसके सम्मान में खड़े हो गए। किसी ने कहा, "हुज़ूर! यह तो एक यहूदी का जनाज़ा है।" आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "क्या उसमें जान नहीं थी? क्या वह इंसान नहीं था?" (सहीह बुख़ारी)

हज़रत यअला बिन मुर्रह (रज़ि.) बयान करते हैं: मैंने नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ अनेक यात्राएँ कीं। कभी ऐसा नहीं हुआ कि आपने किसी मनुष्य का शव पड़ा देखा हो और उसके दफ़्न का प्रबंध न कराया हो। आपने कभी यह नहीं पूछा कि वह मुसलमान था या काफ़िर। बद्र के युद्ध में मारे गए मुश्रिक सरदारों की लाशें मक्का वाले खुले मैदान में छोड़कर भाग गए थे। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने स्वयं उन सभी को एक गड्ढे में दफ़्न कराया, जिसे क़लीब-ए-बद्र कहा जाता है। (सहीह बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी)

ग़ज़वा-ए-अहज़ाब में मुश्रिकों का एक सरदार, नौफल बिन अब्दुल्लाह मख़ज़ूमी, युद्ध में मारा गया। मक्का के मुश्रिक इस बात से स्वाभाविक रूप से डर रहे थे कि जिस प्रकार उन्होंने हज़रत हमज़ा (रज़ि.) के शव के साथ अमानवीय व्यवहार किया था, कहीं उनके सरदार के साथ भी वैसा ही व्यवहार न किया जाए।

उन्होंने रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को संदेश भेजा कि वे दस हज़ार दिरहम ले लें और नौफल का शव उन्हें लौटा दें।

रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "हम मृतकों की कीमत नहीं लिया करते। तुम अपना शव वापस ले जाओ।" (दलाइलुन्नुबुव्वह, अल-बैहक़ी, जिल्द 3)

विजित और पराजित जातियों के साथ, विशेष रूप से उन लोगों के साथ जिनके हाथों लंबे समय तक असहनीय कष्ट और अत्याचार सहने पड़े हों, उनके साथ भी अच्छा व्यवहार करना—इस्लाम के संस्थापक हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के अतिरिक्त विश्व इतिहास में कहीं और दिखाई नहीं देता।

मक्का के मुश्रिकों के सरदार अबू जहल का बेटा इकरिमा अपने पिता की तरह जीवन भर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से युद्ध करता रहा। यहाँ तक कि फ़तह-ए-मक्का के अवसर पर भी, जबकि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ओर से आम माफी की घोषणा की जा चुकी थी, उसने एक दल पर हमला करके हरम में रक्तपात कराया। अपने युद्ध अपराधों के कारण वह मृत्यु-दंड का पात्र ठहराया गया था। अपनी जान बचाने के लिए वह यमन की ओर भाग गया। उसकी पत्नी उम्मे हकीम, जो मुसलमान हो चुकी थीं, रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सेवा में उपस्थित हुईं और अपने पति के लिए क्षमा की प्रार्थना की। आपने अत्यंत कृपा और दया के साथ उसे क्षमा कर दिया। वह तुरंत अपने पति को वापस लाने के लिए दौड़ी। जब वह समुद्री जहाज़ पर सवार होने वाला था, तो उसे रोककर बोली, "वापस चलो। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने तुम्हें माफ़ कर दिया है।" लेकिन इकरिमा को अपनी क्षमा पर विश्वास नहीं हो रहा था। फिर भी पत्नी के कहने पर वह डरते-डरते मक्का वापस आया और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से पूछा, "क्या वास्तव में आपने मुझे क्षमा कर दिया है?" आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, "हाँ, मैंने तुम्हें क्षमा कर दिया है।" फिर उसने पूछा, "क्या आपने मुझे मेरे अपने धर्म पर रहते हुए भी माफ़ कर दिया है?" आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उत्तर दिया, "हाँ।" तब उस मुश्रिक इकरिमा का दिल इस्लाम के लिए खुल गया। उसने यह सहिष्णुता और उदार व्यवहार देखकर भावुक होकर कहा, "हे मुहम्मद! (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) आप तो रिश्तेदारी निभाने वाले, अत्यंत सहनशील और बहुत उदार हैं। मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई पूज्य नहीं और मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अल्लाह के रसूल हैं।" (अस-सीरतुल हलबिय्यह, जिल्द 3, पृष्ठ 92, मुद्रित बेरूत)

इसी प्रकार उन अपराधियों में अबू सुफ़ियान की पत्नी हिन्द बिन्त उत्बा भी थी। उसने ग़ज़वा-ए-उहुद में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के चाचा हज़रत हमज़ा (रज़ि.) के शव के साथ अत्यंत अमानवीय व्यवहार किया था। उसने उनके नाक, कान और अन्य अंग काटकर शव का रूप बिगाड़ दिया था तथा उनका कलेजा चबाकर अपने प्रतिशोध की आग बुझाई थी।

फ़तह-ए-मक्का के बाद जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने महिलाओं से बैअत ली, तो वह भी नक़ाब ओढ़कर आकर बैठ गई, क्योंकि उसके अपराधों के कारण उसे भी मृत्यु-दंड का पात्र घोषित किया गया था।

हज़रत मुस्लेह मौऊद(रज़ि.) फ़रमाते हैं:

"...जब महिलाएँ बैअत करने के लिए आईं, तो हिन्द भी चादर ओढ़कर उनके साथ आ गई और उसने भी बैअत कर ली। जब वह इस वाक्य पर पहुँची कि 'हम शिर्क नहीं करेंगी', तो क्योंकि उसका स्वभाव बहुत तेज़ था, उसने कहा—'या रसूलुल्लाह! क्या अब भी हम शिर्क करेंगी? आप अकेले थे और हमने पूरी शक्ति और सामर्थ्य के साथ आपका मुकाबला किया। यदि हमारे पूज्य सच्चे होते तो आप कैसे सफल होते? वे तो बिल्कुल व्यर्थ सिद्ध हुए और हम हार गए।' रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, 'क्या यह हिन्द है?' आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उसकी आवाज़ पहचान गए थे, क्योंकि आखिर वह रिश्तेदार भी थी। हिन्द ने कहा, 'या रसूलुल्लाह! अब मैं मुसलमान हो चुकी हूँ। अब आपको मुझे मारने का अधिकार नहीं रहा।' रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम मुस्कुरा पड़े और फ़रमाया, 'हाँ, अब तुम पर कोई कार्रवाई नहीं होगी।' संक्षेप में, जो लोग यह समझते थे कि आपने उनके सभी देवताओं को मिटाकर केवल एक ख़ुदा को मान लिया है, उनमें इतना बड़ा परिवर्तन आ गया कि हिन्द जैसी महिला भी यह कहने लगी कि क्या कोई यह कह सकता है कि ख़ुदा एक नहीं है?" (अनवारुल उलूम, जिल्द 20, पृष्ठ 14–15)

हे अल्लाह! मुहम्मद पर रहमत और बरकत नाज़िल फ़रमा तथा उन्हें सलामती प्रदान कर। निश्चय ही तू अत्यन्त प्रशंसनीय और महिमा वाला है।

आदरणीय श्रोतागण! इस विषय के संबंध में अंत में मैं यह निवेदन आवश्यक समझता हूँ कि धार्मिक सहिष्णुता और अंतरात्मा की स्वतंत्रता के संबंध में क़ुरआन की शिक्षाओं तथा हज़रत रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के आदर्श आचरण को पुनः जीवित और उज्ज्वल बनाने के लिए, इस युग में अल्लाह तआला ने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पूर्ण प्रतिबिंब और पूर्ण अनुयायी हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम को मसीह मौऊद और महदी मअहूद के पद पर नियुक्त करके विशेष रूप से भारत में भेजा।

इसका एक बड़ा कारण यह प्रतीत होता है कि भारत विभिन्न जातियों और समुदायों का देश है। यहाँ विभिन्न रंगों, नस्लों, भाषाओं और धर्मों के अनुयायी रहते हैं। इसलिए अल्लाह तआला ने इस्लाम की सुंदर और शांति प्रदान करने वाली शिक्षाओं के प्रचार के लिए इसी देश को केंद्र बनाया और आज इसी देश से यह संदेश संसार के 220 देशों तक पहुँच चुका है।

अन्य धर्मों के अनुयायियों के अतिरिक्त भारत में हिन्दू और मुसलमान दो बड़े समुदाय रहते हैं। इनके बीच एकता, मेल-मिलाप और धार्मिक सहिष्णुता की शिक्षा देते हुए अहमदिया जमाअत के संस्थापक हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम ने अपने जीवन के अंतिम दिनों में "पैग़ाम-ए-सुल्ह" नामक एक पुस्तिका लिखी। समय की सीमा को देखते हुए उसके कुछ उद्धरण प्रस्तुत करता हूँ।

आप (अलैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं:

हे श्रोतागण! हम सब, चाहे मुसलमान हों या हिन्दू, सैकड़ों मतभेदों के बावजूद उस ख़ुदा पर ईमान रखने में एक हैं जो सारी दुनिया का सृष्टिकर्ता और मालिक है। इसी प्रकार हम सब "मनुष्य" कहलाने में भी समान हैं। और एक ही देश के निवासी होने के कारण हम एक-दूसरे के पड़ोसी भी हैं। इसलिए हमारा कर्तव्य है कि हम साफ़ दिल और नेक नीयत के साथ एक-दूसरे के साथी बनें तथा धर्म और संसार की कठिनाइयों में एक-दूसरे की सहायता करें। ऐसी सहानुभूति रखें मानो हम एक-दूसरे के शरीर के अंग हों।

हे देशवासियो! वह धर्म, धर्म नहीं है जिसमें सबके प्रति सहानुभूति की शिक्षा न हो, और वह मनुष्य भी मनुष्य नहीं है जिसमें सहानुभूति का भाव न हो। हमारे ख़ुदा ने किसी जाति में भेदभाव नहीं किया। उदाहरण के लिए, जो शारीरिक शक्तियाँ और योग्यताएँ भारत की प्राचीन आर्य जातियों को दी गई हैं, वही शक्तियाँ अरबों, फ़ारसियों, शाम (सीरिया) के लोगों, चीनियों, जापानियों तथा यूरोप और अमेरिका की जातियों को भी दी गई हैं। सबके लिए ख़ुदा की धरती बिछौने का काम देती है। सबके लिए उसका सूर्य, चन्द्रमा और असंख्य तारे प्रकाश देने वाले दीपक हैं। वे सबके लिए समान रूप से सेवा कर रहे हैं। उसी के बनाए हुए तत्व—हवा, पानी, आग और मिट्टी—तथा उसकी बनाई हुई दूसरी सभी चीज़ें जैसे अन्न, फल, दवा आदि से सभी जातियाँ लाभ उठा रही हैं। इसलिए ख़ुदा के ये गुण हमें शिक्षा देते हैं कि हम भी अपने सभी मनुष्यों के साथ प्रेम और अच्छे व्यवहार से पेश आएँ तथा संकीर्ण हृदय और संकीर्ण विचार वाले न बनें।(पैग़ाम-ए-सुल्ह, रूहानी ख़ज़ाइन, जिल्द 23, पृष्ठ 439–440)

फिर आपसी एकता और मेल-मिलाप की बरकतों की ओर ध्यान दिलाते हुए आप फ़रमाते हैं— "यह बात किसी से छिपी नहीं कि एकता ऐसी चीज़ है कि जिन मुसीबतों को किसी भी तरह दूर नहीं किया जा सकता और जिन कठिनाइयों का कोई उपाय नहीं निकलता, वे भी एकता से समाप्त हो जाती हैं। इसलिए किसी बुद्धिमान व्यक्ति के लिए यह उचित नहीं कि वह एकता की बरकतों से स्वयं को वंचित रखे।

हिन्दू और मुसलमान इस देश की ऐसी दो जातियाँ हैं कि यह केवल कल्पना है कि कभी हिन्दू मिलकर मुसलमानों को इस देश से निकाल देंगे या मुसलमान मिलकर हिन्दुओं को देश से बाहर कर देंगे। बल्कि अब तो हिन्दू और मुसलमानों का रिश्ता चोली-दामन जैसा हो गया है। यदि एक पर कोई विपत्ति आती है तो दूसरा भी उसका भागी बनता है।

तुम दोनों जातियों में से जो व्यक्ति दूसरी जाति के विनाश की सोचता है, उसकी मिसाल उस व्यक्ति जैसी है जो जिस डाल पर बैठा हो, उसी को काट रहा हो।

आप लोग ख़ुदा के फ़ज़्ल से शिक्षित भी हो चुके हैं। अब बैर छोड़कर प्रेम में आगे बढ़ना उचित है और कठोरता छोड़कर सहानुभूति अपनाना ही आपकी बुद्धिमानी के अनुरूप है।"

आदरणीय श्रोतागण! विभिन्न धर्मों के अलग-अलग विश्वास और विचार हो सकते हैं। प्रत्येक अनुयायी को पूरा अधिकार है कि वह उन्हें समझ-बूझकर माने, उन पर चले और तर्क तथा न्यायपूर्ण प्रमाणों के साथ दूसरों को समझाए। यही धार्मिक स्वतंत्रता का वास्तविक अर्थ है।

लेकिन यदि कोई दूसरे धर्मों के धार्मिक नेताओं या उनकी मान्य धर्म-पुस्तकों का अपमान करने या उन्हें झुठलाने का प्रयास करेगा, तो यही उपद्रव और लड़ाई-झगड़े का कारण बनेगा। अन्यथा छोटे-छोटे मतभेद आपसी शांति और एकता के मार्ग में बाधा नहीं बन सकते।

इस बात को और स्पष्ट करते हुए हुज़ूर अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं—

"हे अज़ीज़ो! लंबे अनुभव और बार-बार की परीक्षा से यह बात सिद्ध हो चुकी है कि विभिन्न जातियों के नबियों और रसूलों का अपमान करना, उन्हें बुरा-भला कहना और गालियाँ देना ऐसा ज़हर है, जो अंत में केवल शरीर को ही नहीं, बल्कि आत्मा को भी नष्ट कर देता है और धर्म तथा संसार—दोनों को बर्बाद कर देता है।

वह देश कभी शांति से जीवन नहीं बिता सकता जिसके निवासी एक-दूसरे के धार्मिक नेताओं की बुराइयाँ खोजने और उनकी प्रतिष्ठा मिटाने में लगे हों।

और उन जातियों के बीच कभी सच्ची एकता नहीं हो सकती जिनमें से एक या दोनों एक-दूसरे के नबी, ऋषि या अवतार को बुरा कहते हों या उनके बारे में अपमानजनक भाषा का प्रयोग करते हों।

लेकिन हम दूसरी जातियों के नबियों के बारे में कभी अपमानजनक भाषा का प्रयोग नहीं करते। बल्कि हमारा विश्वास यह है कि संसार की विभिन्न जातियों के लिए जितने भी नबी आए, और करोड़ों लोगों ने उन्हें स्वीकार किया, तथा दुनिया के किसी भाग में उनके प्रति प्रेम और सम्मान स्थापित हो गया और यह श्रद्धा लंबे समय तक बनी रही, तो केवल यही बात उनकी सच्चाई के लिए पर्याप्त प्रमाण है। क्योंकि यदि वे ख़ुदा की ओर से न होते, तो करोड़ों लोगों के दिलों में उन्हें ऐसी स्वीकृति कभी प्राप्त न होती।"(वही संदर्भ)

अतः इस्लाम के संस्थापक हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अंतरात्मा की स्वतंत्रता और धार्मिक सहिष्णुता के संबंध में जो शिक्षाएँ दीं और अपने आदर्श जीवन से जिनका व्यावहारिक प्रमाण प्रस्तुत किया, फिर इस युग में आपके सच्चे सेवक ने उन शिक्षाओं और उस आदर्श को पुनः जीवित करके संसार के सामने रखा है। हम उसी की ओर पूरी दुनिया को बुला रहे हैं।

क्योंकि आज मानवता को जो सबसे बड़ा खतरा है, वह जाति-पाँति का भेद, रंग और नस्ल का भेदभाव तथा धार्मिक मतभेदों की वह अंधी कट्टरता है जिसने मनुष्य को मानवता से इतना गिरा दिया है कि हत्या और रक्तपात तक की नौबत आ गई है। आज हम आए दिन मानव आतंकवाद, आत्मघाती हमलों, अत्यंत विनाशकारी हथियारों और ड्रोन हमलों के कारण बच्चों, बुज़ुर्गों, महिलाओं और निर्दोष लोगों के सामूहिक नरसंहार की घटनाएँ सुनते और देखते रहते हैं।

सैय्यदना हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद, ख़लीफ़तुल मसीह पंचम (अल्लाह तआला उन्हें अपनी महान सहायता से समर्थ बनाए), अंतरात्मा की स्वतंत्रता और धार्मिक सहिष्णुता के संबंध में इस्लामी शिक्षा तथा हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के आदर्श जीवन पर प्रकाश डालते हुए फ़रमाते हैं—

"पवित्र क़ुरआन में अनेक स्थानों पर इस्लाम की इस सुंदर शिक्षा का उल्लेख मिलता है, जिसमें ग़ैर-मुस्लिमों के साथ अच्छा व्यवहार करने, उनके अधिकारों का ध्यान रखने, उनके साथ न्याय करने, उनके धर्म के मामले में किसी प्रकार का दबाव न डालने, धर्म के विषय में कठोरता न करने आदि के अनेक आदेश दिए गए हैं। ये आदेश केवल अपने लोगों के लिए ही नहीं, बल्कि ग़ैर-मुस्लिमों के लिए भी हैं।

यह सम्पूर्ण करुणा के प्रतीक, मानवता के महान उपकारी और मानव अधिकारों के महान रक्षक का यह हाल था कि युद्ध की स्थिति में भी आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ऐसा कोई अवसर हाथ से नहीं जाने देते थे जिससे शत्रु को भी सुविधा न पहुँचती हो।

आपके जीवन का प्रत्येक कार्य, प्रत्येक कर्म, आपके जीवन का प्रत्येक क्षण इस बात का साक्षी है कि आप करुणा की सजीव प्रतिमा थे। आपके सीने में ऐसा हृदय धड़कता था जो दया और करुणा के उन उच्चतम मानकों को पूरा करता था जिन्हें आपने शांति के समय भी और युद्ध के समय भी, घर में भी और बाहर भी, दैनिक जीवन में भी, दूसरे धर्मों के लोगों के साथ व्यवहार में भी और उनके साथ किए गए समझौतों में भी स्थापित किया।

आपने अंतरात्मा की स्वतंत्रता, धर्म की स्वतंत्रता और धार्मिक सहिष्णुता के ऐसे आदर्श स्थापित किए जो इतिहास में अनुपम हैं।

फिर जब आप एक महान विजेता के रूप में मक्का में प्रवेश किए, तो जहाँ आपने पराजित जाति के साथ क्षमा और दया का व्यवहार किया, वहीं उन्हें धर्म की स्वतंत्रता का भी पूरा अधिकार दिया और पवित्र क़ुरआन के इस आदेश का सर्वोत्तम उदाहरण प्रस्तुत किया— 'दीन के मामले में कोई ज़बरदस्ती नहीं है।'(सूरह अल-बक़रह : आयत 257)

अर्थात धर्म तुम्हारे दिल का मामला है। मेरी इच्छा तो यही है कि तुम सच्चे धर्म को स्वीकार करके अपना वर्तमान और भविष्य दोनों सँवार लो तथा अपनी मुक्ति का मार्ग बना लो, लेकिन इसमें किसी प्रकार की ज़बरदस्ती नहीं है।

आपका जीवन धार्मिक सहिष्णुता तथा धर्म और अंतरात्मा की स्वतंत्रता के ऐसे असंख्य उज्ज्वल उदाहरणों से भरा पड़ा है।"(संदर्भ: ख़ुत्बा-ए-जुमुआ, 24 फ़रवरी 2006)

अल्लाह तआला से प्रार्थना है कि संसार की सभी सरकारों और विशेष रूप से मुस्लिम सरकारों तथा संगठनों को भी इन इस्लामी शिक्षाओं और हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के श्रेष्ठ आदर्शों के अनुसार अंतरात्मा की स्वतंत्रता और धार्मिक सहिष्णुता को बढ़ावा देने की तौफ़ीक़ प्रदान करे। आमीन।

और हमारी अंतिम पुकार यही है कि सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जो सारे संसारों का पालनहार है।

★ ★ ★

पृष्ठ 19 का शेष

प्रतिष्ठा का प्रश्न उत्पन्न हुआ और मैदान में द्वैतवाद का जयघोष किया गया तो आपकी आत्मा व्याकुल हो उठी तथा आपने अत्यन्त जोश के साथ सहाबा की ओर देखते हुए फ़रमाया तुम लोग उत्तर क्यों नहीं देते। सहाबा ने कहा हे अल्लाह के रसूल! हम क्या कहें? फ़रमाया कहो اَللّٰہُ اَعۡلٰی وَاَجَلُّ (अल्लाहो आ'ला व अजल्ल) तुम झूठ बोलते हो कि हुबुल की शान ऊँची हुई। ख़ुदा एक है उसका कोई साथी नहीं, वह प्रतिष्ठावान है तथा बड़ी शान वाला है। और इस प्रकार आपने अपने जीवित होने की सूचना शत्रुओं को पहुँचा दी। इस वीरता और निर्भीकतापूर्ण उत्तर का प्रभाव काफ़िरों की सेना पर इतना गहरा पड़ा कि इसके बावजूद कि उनकी आशाएं इस उत्तर से मिट्टी में मिल गईं तथा इसके बावजूद कि उन के सामने मुट्ठी भर मुसलमान खड़े थे जिन पर आक्रमण करके उन्हें मार देना सांसारिक दृष्टि से बिल्कुल संभव था वे दोबारा आक्रमण करने का साहस न कर सके और उन्हें जिस सीमा तक विजय प्राप्त हुई थी उसी की खुशियां मनाते हुए मक्का को प्रस्थान किया। उहद के युद्ध में स्पष्ट विजय के पश्चात् एक पराजय का रूप देखने को मिला परन्तु यह युद्ध वास्तव में मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) की सच्चाई का एक महान चमत्कार पूर्ण प्रमाण था। इस युद्ध में रसूले करीम (स.अ.व.) की भविष्यवाणी के अनुसार मुसलमानों को पहले सफलता प्राप्त हुई फिर रसूले करीम (स.अ.व.) की भविष्यवाणी के अनुसार आप के प्रिय चाचा हम्ज़ा[रज़ि.] युद्ध में वीरगति को प्राप्त हुए, फिर रसूले करीम (स.अ.व.) की भविष्यवाणी के अनुसार स्वयं आप[स.] भी घायल हुए और बहुत से सहाबा शहीद हुए। शेष ..

पृष्ठ 21 का शेष

अधिकार नहीं है। तुम आपस में भाइयों की तरह हो।"

फिर आपने पूछा, "क्या तुम्हें मालूम है कि आज कौन-सा महीना है? क्या तुम्हें मालूम है कि यह कौन-सा क्षेत्र है? क्या तुम्हें मालूम है कि यह कौन-सा दिन है?" लोगों ने उत्तर दिया, "हाँ! यह पवित्र महीना है, यह पवित्र क्षेत्र है और यह हज का दिन है।"

हर उत्तर पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम फ़रमाते थे, "जिस प्रकार यह महीना पवित्र है, जिस प्रकार यह क्षेत्र पवित्र है, और जिस प्रकार यह दिन पवित्र है, उसी प्रकार अल्लाह तआला ने हर मनुष्य की जान और उसके माल को पवित्र ठहराया है। किसी की जान पर हमला करना और किसी के माल पर हमला करना उतना ही अनुचित और अवैध है, जितना कि इस महीने, इस क्षेत्र और इस दिन की पवित्रता का अपमान करना।"

"यह आदेश केवल आज के लिए नहीं है, केवल कल के लिए नहीं है, बल्कि उस दिन तक के लिए है जब तक तुम अल्लाह से जाकर न मिलो।"

फिर आपने फ़रमाया, "जो बातें मैं आज तुम्हें बता रहा हूँ, उन्हें दुनिया के कोनों तक पहुँचा दो, क्योंकि संभव है कि जो लोग आज मुझसे सुन रहे हैं, उनसे अधिक वे लोग इन बातों पर अमल करें जो सीधे मुझसे नहीं सुन रहे।"

(दीबाचा तफ़्सीरुल-क़ुरआन, पृष्ठ 229–228)

मुहब्बत से घायल किया आपने दलाइल से क़ाइल किया आपने
जहालत को ज़ाइल किया आपने शरीअत को कामिल किया आपने
बयाँ कर दिए सब हलाल व हराम अलैकस्सलातु व अलैकस्सलाम

★ ★ ★

हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का पवित्र जीवन

(हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद[रज़ि.] जमाअत अहमदिया के द्वितीय ख़लीफ़ा)

विजय : पराजय के आवरण में

मुसलमानों ने उन का पीछा करना आरम्भ किया। यह देख कर दर्रे की सुरक्षा पर नियुक्त सैनिकों ने अपने अफ़सर से कहा कि अब तो शत्रु पराजित हो चुका है, अब हमें भी जिहाद का पुण्य प्राप्त करने दिया जाए। अफ़सर ने उन्हें इस बात से रोका तथा रसूले करीम (स.अ.व.) का आदेश स्मरण कराया परन्तु उन्होंने कहा रसूले करीम (स.अ.व.) ने जो कुछ फ़रमाया था केवल ज़ोर देने के लिए फ़रमाया था अन्यथा आप का अभिप्राय यह तो नहीं हो सकता था कि शत्रु भाग भी जाए तो भी यहां खड़े रहो। यह कहते हुए उन्होंने दर्रा छोड़ दिया और रणभूमि में कूद पड़े। भागती हुई सेना में से ख़ालिद बिन वलीद जो बाद में इस्लाम के महान सेनापति सिद्ध हुए की दृष्टि ख़ाली दर्रे पर पड़ी जहां केवल कुछ सैनिक अपने अफ़सर के साथ खड़े थे। ख़ालिद ने अपनी (काफ़िरों की) सेना के अन्य सेनापति उमर बिन अलआस को आवाज़ दी और कहा कि पीछे पहाड़ी दर्रे पर तनिक दृष्टि डालो। उमर बिन अलआस ने जब दर्रे पर दृष्टि डाली तो समझा कि मुझे जीवन का स्वर्णिम अवसर प्राप्त हो रहा है। दोनों सेनापतियों ने अपनी भागती हुई सेना को संभाला और इस्लामी सेना को भारी क्षति पहुँचाते हुए पर्वत पर चढ़ गए, वहां दर्रे की सुरक्षा के लिए थोड़े से मुसलमान खड़े रह गए थे, उनको टुकड़े-टुकड़े करते हुए पीछे से इस्लामी सेना पर टूट पड़े। उनके विजय-नाद को सुनकर शत्रु की भागती सेना रणभूमि की ओर लौट पड़ी। यह आक्रमण ऐसा अचानक हुआ तथा काफ़िरों का पीछा करने के कारण मुसलमान इतने बिखर गए कि उन लोगों के मुक़ाबले में कोई समुचित इस्लामी सेना नहीं थी। रणभूमि में अकेला-अकेला सैनिक दिखाई दे रहा था, जिन में से कुछ को उन लोगों ने मार दिया, शेष इस असमंजस में थे कि यह हो क्या गया है पीछे की ओर दौड़े। कुछ सहाबा दौड़ कर रसूलुल्लाह (स.अ.व.) के चारों ओर एकत्र हो गए जिनकी संख्या अधिक से अधिक तीस थी[1]। काफ़िरों ने उस स्थान पर भयंकर आक्रमण किया जहां रसूले करीम (स.अ.व.) खड़े थे। सहाबा एक के बाद एक आप[स.] की रक्षा करते हुए मारे जाने लगे। कृपाणधारियों के अतिरिक्त धनुषधारी ऊँचे टीलों पर खड़े होकर रसूले करीम (स.अ.व.) की ओर अंधाधुंध वाण-वर्षा कर रहे थे। उस समय तल्हा[रज़ि.] ने जो क़ुरैश में से थे तथा मक्का के मुहाजिरों में से थे, यह देखते हुए कि शत्रु सब के सब तीर रसूले करीम (स.अ.व.) के मुख की ओर फेंक रहा है अपना हाथ रसूलुल्लाह (स.अ.व.) के मुख के आगे खड़ा कर दिया। वाण-वर्षा में जो तीर लक्ष्य पर गिरता था वह 'तल्हा[रज़ि.]' के हाथ पर गिरता था, परन्तु प्राणों की बाज़ी लगाने वाला वफ़ादार सिपाही अपने हाथ को कोई हरकत नहीं देता था। इस प्रकार तीर पड़ते गए और तल्हा[रज़ि.] का हाथ घावों से छलनी हो कर बिल्कुल बेकार हो गया और उनका एक ही हाथ शेष रह गया। वर्षों पश्चात् इस्लाम की चौथी ख़िलाफ़त के युग में जब मुसलमानों में गृह-युद्ध आरम्भ हुआ तो किसी शत्रु ने व्यंग के तौर पर तल्हा को टुण्डा कहा। इस पर एक अन्य सहाबी ने कहा हाँ टुण्डा ही है परन्तु कैसा मुबारक टुण्डा है। तुम्हें ज्ञात है तल्हा का यह हाथ रसूले करीम (स.अ.व.) के मुख की रक्षा में टुण्डा हुआ था। उहद के युद्धोपरान्त किसी व्यक्ति ने तल्हा[रज़ि.] से पूछा कि जब वाण हाथ पर लगते थे तो क्या आप को दर्द नहीं होता था और क्या आप के मुख से उफ़ नहीं निकलती थी? तल्हा[रज़ि.] ने उत्तर दिया दर्द भी होता था और उफ़ भी निकलना चाहती थी परन्तु मैं उफ़ करता नहीं था ताकि ऐसा न हो कि उफ़ करते समय मेरा हाथ हिल जाए और तीर रसूले करीम (स.अ.व.) के मुख पर आ लगे।

परन्तु ये कुछ लोग इतनी विशाल सेना का कब तक मुक़ाबला कर सकते थे क़ाफ़िरों की सेना का एक गिरोह आगे बढ़ा और उस ने रसूले करीम (स.अ.व.) के पास के जवानों को धकेला कर पीछे कर दिया। रसूले करीम (स.अ.व.) वहां अकेले पर्वत की भांति खड़े थे कि बड़े ज़ोर से एक पत्थर आप के ख़ोद (Security Cap लोहे की टोपी) पर लगा ख़ोद की कील आप के सर पर घुस गई और आप बेहोश होकर उन सहाबा[रज़ि.] के शवों पर जा पड़े जो आप के चारों ओर लड़ते हुए शहीद हो चुके थे[1]। तत्पश्चात् कुछ अन्य सहाबा[रज़ि.] आप के शरीर की रक्षा करते हुए शहीद हुए और उनके शव आप के शरीर पर जा गिरे। काफ़िरों ने आप के शरीर को शवों के नीचे दबा हुआ देख कर समझा कि आप मारे जा चुके हैं। अतः मक्का की सेना स्वयं को पुनर्गठन के उद्देश्य से पीछे हट गई। जो सहाबा आप के पास खड़े थे और जिन्हें काफ़िरों की सेना का रेला ढकेल कर पीछे ले गया था उनमें हज़रत उमर[रज़ि.] भी थे। जब आप ने देखा कि रणभूमि समस्त लड़ने वालों से साफ हो चुकी है तो आप को विश्वास हो गया कि रसूले करीम (स.अ.व.) शहीद हो गए हैं और वह व्यक्ति जिस ने बाद में एक ही समय में क़ैसर तथा किस्रा का मुकाबला बड़ी बहादुरी से किया था और उस का हृदय कभी नहीं घबराया और न भयभीत हुआ था। वह एक पत्थर पर बैठकर बच्चों की भांति रोने लग गया, इतने में मालिक[रज़ि.] नामक एक सहाबी जो इस्लामी सेना की विजय के समय पीछे हट गए थे; क्योंकि वह निराहार थे और रात से उन्होंने कुछ नहीं खाया था। जब विजय हो गई तो कुछ खजूरें लेकर पीछे की ओर चले गए ताकि उन्हें खाकर अपनी भूख दूर करें। वह विजय की ख़ुशी में टहल रहे थे कि टहलते-टहलते हज़रत उमर[रज़ि.] तक जा पहुँचे और उमर[रज़ि.] को रोते देख कर हैरान हुए और आश्चर्य से पूछा उमर आप को क्या हुआ? इस्लाम की विजय पर आप को प्रसन्न होना चाहिए या रोना चाहिए? उमर ने उत्तर में कहा मालिक! कदाचित तुम विजय के तुरन्त बाद पीछे हट आए थे, तुम्हें मालूम नहीं कि काफ़िरों की सेना पहाड़ी के पीछे से चक्कर काटकर इस्लामी सेना पर टूट पड़ी और चूंकि मुसलमान अस्त-व्यस्त हो चुके थे, उनका मुकाबला कोई न कर सका। रसूलुल्लाह (स.अ.व.) कुछ सहाबा के साथ उन के मुक़ाबले के लिए खड़े हुए और मुक़ाबला करते-करते शहीद हो गए। मालिक[रज़ि.] ने कहा उमर यदि यह बात सही है तो आप यहां बैठे क्यों रो रहे हैं, जिस लोक में हमारा प्यारा गया है हमें भी तो वहीं जाना चाहिए। यह कहा और वह अन्तिम खजूर जो आप के हाथ में थी जिसे आप मुख में डालने ही वाले थे उसे यह कहते हुए फेंक दिया कि हे खजूर! मालिक और स्वर्ग के मध्य तेरे अतिरिक्त और कौन सी वस्तु रोक है यह कहा और तलवार लेकर शत्रु की सेना में घुस गए। तीन हज़ार सेना के मुकाबले में एक व्यक्ति कर ही क्या सकता था, परन्तु एक ख़ुदा की उपासना करने वाली भावना बहुतों पर भारी होती है। मालिक[रज़ि.] इस निर्भयता से लड़े कि शत्रु स्तब्ध रह गया परन्तु अन्ततः घायल हुए, फिर गिरे तथा गिर कर भी शत्रुओं के सैनिकों पर आक्रमण करते रहे, जिस के परिणामस्वरूप मक्का के काफ़िरों ने आप पर इतना भयानक आक्रमण किया कि युद्ध के पश्चात् आप के शव के सत्तर टुकड़े मिले, यहां तक कि आप का शव पहचाना नहीं जाता था। अन्त में आप की बहन ने एक उंगली से पहचान कर बताया कि यह मेरे भाई का शव है।

वे सहाबा[रज़ि.] जो रसूलुल्लाह (स.अ.व.) के चारों ओर थे और जो काफ़िरों की सेना की बहुतात के कारण पीछे ढकेल दिए गए थे, काफ़िरों के पीछे हटते ही वे पुनः रसूलुल्लाह (स.अ.व.) के पास एकत्र हो गए। उन्होंने आपके मुबारक शरीर को उठाया तथा एक सहाबी उबैदा बिन जर्राह ने अपने दांतों से आप के सर में घुसी हुई कील को ज़ोर से निकाला जिस से उनके दो दांत टूट गए। थोड़ी देर में रसूलुल्लाह (स.अ.व.) को होश आ गया और सहाबा ने मैदान में चारों ओर लोग दौड़ा दिए कि मुसलमान पुनः एकत्र हो जाएं। भागी हुई सेना पुनः एकत्र होने लगी। रसूले करीम (स.अ.व.) उन्हें लेकर पर्वत के आंचल में चले गए। जब पर्वत के आंचल में बची हुई सेना खड़ी थी तो अबू सुफ़यान ने बड़े ज़ोर से आवाज़ दी और कहा हम ने मुहम्मद (स.अ.व.) को मार दिया। रसूलुल्लाह (स.अ.व.) ने अबू सुफ़यान की बात का उत्तर न दिया ताकि ऐसा न हो कि शत्रु वस्तु स्थिति से अवगत हो कर पुनः आक्रमण कर दे और घायल मुसलमान पुनः शत्रु के आक्रमण के शिकार हो जाएँ। जब इस्लामी सेना से इस बात का कोई उत्तर न मिला तो अबू सुफ़यान को विश्वास हो गया कि उस का अनुमान उचित है तब उसने बड़े ज़ोर से आवाज़ देकर कहा हम ने अबू बक्र[रज़ि.] को भी मार दिया। रसूलुल्लाह (स.अ.व.) ने अबू बकर[रज़ि.] को आदेश दिया कि कोई उत्तर न दें। अबू सुफ़यान ने फिर आवाज़ दी हमने उमर[रज़ि.] को भी मार दिया। तब उमर[रज़ि.] जो बहुत जोशीले व्यक्ति थे, उन्होंने उसके प्रत्युत्तर में यह कहना चाहा कि हम लोग ख़ुदा की कृपा से जीवित हैं और तुम्हारा मुकाबला करने के लिए तैयार हैं परन्तु रसूले करीम (स.अ.व.) ने रोक दिया कि मुसलमानों को कष्ट में न डालो, ख़ामोश रहो। अतः काफ़िरों को विश्वास हो गया कि इस्लाम के प्रवर्तक तथा उनके दाएं-बाएं की सेना को भी हमने मौत के घाट उतार दिया है। इस पर अबू सुफ़यान और उसके साथियों ने ख़ुशी से जयघोष किया اُعْلُ هُبَلْ اُعْلُ هُبَلْ 'हमारी सम्माननीय मूर्ति हुबुल की जय हो' कि उसने आज इस्लाम का अन्त कर दिया है। वही रसूले करीम (स.अ.व.) जो अपनी मृत्यु की घोषणा पर, अबूबकर[रज़ि.] की मृत्यु की घोषणा पर तथा उमर[रज़ि.] की मृत्यु की घोषणा पर ख़ामोश रहने का उपदेश दे रहे थे ताकि ऐसा न हो कि घायल मुसलमानों पर काफ़िरों की सेना फिर से आक्रमण न कर दे और मुट्ठी भर मुसलमान उसके हाथों शहीद हो जाएं। अब जब कि एक ख़ुदा की

शेष पृष्ठ 18 पर

सीरत-ए-नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और अंतरधार्मिक सद्भाव

मुहम्मद कलीम ख़ान मुबल्लिग़ सिलसिला, एडिशनल नज़ारत इस्लाह व इरशाद, दक्षिण भारत

हज़रत अकदस मुहम्मद अरबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का जन्म छठी ईस्वी शताब्दी में मक्का मुकर्रमा में हुआ। आपने अपनी प्राकृतिक आयु 63 वर्ष पूरी करके अपने रफ़ीक़-ए-आला (अपने परम प्रिय खुदा तआला) के पास प्रस्थान किया। अल्लाह तआला ने आपके लिए पहले ही यह तय कर रखा था कि (रफ़अना लका ज़िक्रक) अर्थात् "हमने तुम्हारा ज़िक्र बुलंद कर दिया है।" आपका शुभ उल्लेख हमेशा जारी रहेगा और उसकी महानता तथा ऊँचाई सदा बनी रहेगी। आपके महान कार्य पूरी मानवता के लिए हैं और जीवन के हर क्षेत्र में आप एक पूर्ण आदर्श और लाभदायक उदाहरण हैं। यदि विभिन्न जातियों और धर्मों के संदर्भ में बात की जाए तो इस क्षेत्र में भी आपका कोई दूसरा नहीं है। आपका स्थान सबसे ऊँचा और सबसे महत्वपूर्ण है। आपने अंतरधार्मिक सद्भाव स्थापित करने के लिए सबसे महान कार्य किए।

कहने को तो संसार में बहुत से धर्म हैं, जैसे इस्लाम, ईसाई धर्म, यहूदी धर्म, हिन्दू धर्म, ज़रथुष्ट्र धर्म, सिख धर्म आदि। इनके अलावा भी प्रत्येक देश में अनेक अन्य धर्म पाए जाते हैं। कुछ धर्मों को छोड़कर अधिकांश धर्म एक-दूसरे से किसी न किसी रूप में जुड़े हुए भी होते हैं। इसलिए यदि धर्म से आशय विचारधारा (मकतब-ए-फ़िक्र) लिया जाए तो बात अधिक स्पष्ट हो जाती है।

यदि अंतरधार्मिक सद्भाव के दृष्टिकोण से सीरत-ए-नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का अध्ययन किया जाए तो आपके श्रेष्ठ चरित्र की तुलना किसी अन्य धार्मिक नेता से की ही नहीं जा सकती।

दुनिया में जितनी भी चीज़ें बनाई गई हैं, अल्लाह तआला ने उन सबमें कोई न कोई विशेष गुण रखा है, बल्कि कई चीज़ों में अनेक विशेषताएँ होती हैं। उदाहरण के लिए लोहा, ताँबा आदि ऐसी वस्तुएँ हैं जिनमें बिजली का करंट आसानी से प्रवाहित हो जाता है। फिर पानी है, जिसकी एक विशेषता यह है कि वह गर्म भी होता है और सामान्य तापमान पर भी रहता है, फिर भाप बनकर हवा में मिल जाता है।

लोहे और ताँबे के भीतर बिजली का करंट है या नहीं, यह टेस्टर (TESTER) की सहायता से बताया जा सकता है कि देखने में तो यह केवल लोहे या ताँबे का टुकड़ा है, लेकिन इस समय इसमें करंट है या नहीं। इसी प्रकार थर्मामीटर (THERMOMETER) आदि के माध्यम से पानी की गर्मी आदि का पता लगाया जा सकता है।

इसी संदर्भ में "अशरफ़ुल मख़लूक़ात" अर्थात् मनुष्य के भीतर भी अल्लाह तआला ने अनेक विशेषताएँ रखी हैं। उसके भीतर प्रेम भी है, घृणा भी है आदि। लेकिन जब सारी सृष्टि के सार, हमारे प्यारे आका हज़रत मुहम्मद अरबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के गुणों की बात होती है, तो वास्तविकता यह है कि सभी प्रकार की श्रेष्ठ खूबियाँ और पूर्णताएँ आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के भीतर मौजूद थीं।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं—

"आपके भीतर वीरता भी थी, उदारता भी थी। उपकार भी था, वफ़ादारी भी थी, सहनशीलता भी थी, दया भी थी, धैर्य भी था, त्याग भी था, ईमानदारी भी थी, भाईचारा भी था, विनम्रता भी थी, ग़ैरत भी थी, कृतज्ञता भी थी, दृढ़ता भी थी, गरिमा भी थी, समस्त मानव जाति की भलाई की भावना भी थी, ऊँचे हौसले भी थे, सब्र भी था, करुणा भी थी, बुराई का सामना करने की शक्ति भी थी, सहन करने की क्षमता भी थी, कठिनाइयाँ झेलने की शक्ति भी थी, सादगी भी थी, रिश्तेदारों के साथ अच्छा व्यवहार भी था, सत्यवादिता भी थी, गरीबों की सहायता करने की भावना भी थी, दुखी लोगों की मदद करने की इच्छा भी थी, अतिथि-सत्कार भी था, बड़ों का सम्मान और छोटों पर स्नेह भी था, अल्लाह का प्रेम भी था, उसी पर भरोसा भी था, इबादतों की पूरी सुरक्षा और पालन भी था। संक्षेप में, ऐसी कौन-सी अच्छाई थी जो आपमें न हो, और ऐसा कौन-सा गुण था जो आपमें मौजूद न हो।"

(तफ़्सीर-ए-कबीर, जिल्द 5, पृष्ठ 400, सूरह ताहा की तफ़्सीर के अंतर्गत, प्रकाशित क़ादियान, 2004 ई.)

इन महान गुणों को पहचानने के लिए किसी बाहरी यंत्र, जैसे टेस्टर या थर्मामीटर आदि की आवश्यकता नहीं होती, बल्कि एक पारखी जौहरी की तरह समझ और पहचान रखने वाला व्यक्ति होना चाहिए।

जहाँ तक अंतरधार्मिक सद्भाव के इस महान गुण का प्रश्न है, तो यह भी आपके व्यक्तित्व में सबसे ऊँचे और श्रेष्ठ रूप में दिखाई देता है, जिसकी अनगिनत मिसालें मौजूद हैं।

चुनाँचे, जब आप अभी नुबुव्वत के पद पर नियुक्त भी नहीं हुए थे, तब आपके सामने एक बड़ा विचित्र विवाद उपस्थित हुआ। यह घटना "हजर-ए-अस्वद की स्थापना" के समय के विवाद की है। जैसा कि हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम.ए., क़मरुल-अंबिया, रज़ियल्लाहु अन्हु ने लिखा है।

"जब कुरैश काबा का निर्माण करते-करते हजर-ए-अस्वद को उसकी जगह रखने के स्थान तक पहुँचे, तो कुरैश के विभिन्न क़बीलों में इस बात पर झगड़ा हो गया कि उसे उसकी जगह पर रखने का सम्मान किस क़बीले को मिले। हर क़बीला चाहता था कि यह सम्मान उसी को प्राप्त हो। यहाँ तक कि लोग आपस में लड़ने-मरने के लिए तैयार हो गए। कुछ लोगों ने तो जाहिलियत के ज़माने की परंपरा के अनुसार खून से भरे एक प्याले में अपनी उँगलियाँ डुबोकर यह कसम भी खाई कि वे लड़ते-लड़ते मर जाएँगे, लेकिन इस सम्मान को अपने क़बीले के बाहर नहीं जाने देंगे। इस विवाद के कारण निर्माण कार्य कई दिनों तक बंद रहा। अंत में अबू उमय्या बिन मुग़ीरा ने यह सुझाव दिया कि जो व्यक्ति सबसे पहले हरम में प्रवेश करता दिखाई दे, उसी को पंच मान लिया जाए और वही निर्णय करे कि इस अवसर पर क्या किया जाए। अल्लाह की कुदरत देखिए कि जब लोगों की नज़र उठी तो उन्होंने देखा कि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम आ रहे हैं। आपको देखते ही सब पुकार उठे— 'अमीन! अमीन!' और सभी ने एक स्वर में कहा— 'हम इनके फ़ैसले पर राज़ी हैं।' जब आप निकट आए तो उन्होंने पूरी बात बताई और निर्णय चाहा। अल्लाह तआला की सहायता से आपने ऐसा निर्णय किया कि कुरैश के सभी सरदार आश्चर्यचकित रह गए और आपकी प्रशंसा करने लगे। आपने अपनी चादर बिछाई और उस पर हजर-ए-अस्वद रख दिया। फिर कुरैश के सभी क़बीलों के सरदारों को उस चादर के कोने पकड़वा दिए और उसे उठाने का आदेश दिया। सभी ने मिलकर चादर उठाई और किसी को भी कोई शिकायत न रही। यह अल्लाह तआला की ओर से प्रतीकात्मक रूप में इस बात का संकेत था कि अरब के विभिन्न क़बीले, जो उस समय आपस में लड़ रहे थे, इस पवित्र व्यक्तित्व के माध्यम से एक केंद्र पर एकत्र हो जाएँगे। जब चादर हजर-ए-अस्वद की वास्तविक जगह तक पहुँची, तो आपने अपने मुबारक हाथों से उसे चादर से उठाकर उसकी निर्धारित जगह पर रख दिया।"

(सीरत ख़ातमुन-नबिय्यीन, पृष्ठ 109, प्रकाशित यू.के., 1996 ई.)

इस प्रकार, हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के माध्यम से धार्मिक सद्भाव का एक उत्कृष्ट उदाहरण स्थापित हो गया। फिर अल्लाह तआला ने आपको नुबुव्वत और रिसालत का पद प्रदान किया। इसके साथ ही आपकी ज़िम्मेदारियाँ और भी बढ़ गईं।

धर्म के नाम पर जितने भी संप्रदाय या समूह हैं, उन सबमें एक समान बात अल्लाह तआला के अस्तित्व को मानना है। नास्तिकों या अधार्मिक लोगों को छोड़कर, सभी धर्मों के मानने वाले किसी न किसी रूप में खुदा तआला के अस्तित्व को स्वीकार करते हैं। इसके इनकार को अधार्मिकता ही कहा जा सकता है।

इस विषय में, अर्थात् खुदा तआला के अस्तित्व और उसकी एकता (तौहीद) के संबंध में, आपने कभी कोई समझौता नहीं किया। आपका कड़ा विरोध किया गया, आपको हर प्रकार की तकलीफ़ें दी गईं, आपके अनुयायियों को सताया गया, और अल्लाह तआला के अस्तित्व और उसकी एकता के विषय में समझौता कराने की कोशिश की गई। आपको धमकियाँ भी दी गईं और लालच भी दिए गए, लेकिन आपने स्पष्ट और खुले शब्दों में कह दिया कि यदि मेरे दाहिने हाथ में सूरज और बाएँ हाथ में चाँद भी रख दिया जाए, तब भी हम इस पवित्र उद्देश्य से पीछे हटने के लिए तैयार नहीं होंगे। क्योंकि तौहीद-ए-इलाही (खुदा तआला की एकता) के विषय में किसी प्रकार का धार्मिक समझौता संभव ही नहीं है।

इसी कारण आपने अपने प्रिय वतन को अलविदा कहा और हिजरत करके मदीना मुनव्वरा चले गए, जहाँ आपने धार्मिक सद्भाव का ऐसा आदर्श संसार के सामने प्रस्तुत किया जो आज भी अनुपम है।

वास्तविकता यह है कि मदीना मुनव्वरा हिजरत करने के बाद आप जिस क्षेत्र और वातावरण में रहने लगे थे, वहाँ विभिन्न धर्मों के लोग रहते थे। अलग-अलग विश्वास रखने के बावजूद शांति से जीवन बिताने की आवश्यकता थी। हज़रत मुहम्मद अरबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम मदीना के स्थानीय निवासी नहीं थे, लेकिन अल्लाह तआला ने आपको जो महान गुण दिए थे, उनमें धार्मिक सद्भाव बनाए रखने की विशेष क्षमता भी शामिल थी।

परिस्थितियों का अध्ययन करने के बाद आपने सभी धर्मों और विचारधाराओं के प्रतिनिधियों को एकत्र किया और उनके बीच एक समझौता कराया, जिसे सभी ने स्वीकार कर लिया। यह समझौता मदीना चार्टर अर्थात् मीसाक़-ए-मदीना के नाम से प्रसिद्ध है।

धार्मिक सद्भाव के संदर्भ में मदीना चार्टर के शब्द इस प्रकार हैं।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं :

"यह समझौता मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, ईमान लाने वालों और उन सभी लोगों के बीच हुआ जो अपनी इच्छा से उनके साथ मिल जाएँ। यदि मुहाजिरीन में से कोई व्यक्ति मारा जाए तो उसके खून की ज़िम्मेदारी उसी के लोगों पर होगी और वे स्वयं अपने बंदियों को छुड़ाएँगे। इसी प्रकार मदीना के विभिन्न मुस्लिम क़बीले भी इन मामलों में अपने-अपने क़बीलों के ज़िम्मेदार होंगे। जो व्यक्ति विद्रोह फैलाए, दुश्मनी पैदा करे या व्यवस्था में फूट डाले, तो समझौते में शामिल सभी लोग उसके विरुद्ध खड़े होंगे, चाहे वह उनका अपना बेटा ही क्यों न हो। यदि कोई काफ़िर युद्ध में किसी मुसलमान के हाथ से मारा जाए तो उसके मुसलमान रिश्तेदार उस मुसलमान से बदला नहीं लेंगे और न ही किसी मुसलमान के विरुद्ध ऐसे काफ़िर की सहायता करेंगे। जो कोई यहूदी हमारे साथ आ मिलेगा, हम सब उसकी सहायता करेंगे। यहूदियों को किसी प्रकार की तकलीफ़ नहीं दी जाएगी और न ही किसी दुश्मन की उनके विरुद्ध सहायता की जाएगी। कोई भी गैर-मोमिन मक्का के लोगों को अपने घर में शरण नहीं देगा, न उनकी संपत्ति को अपने पास अमानत रखेगा और न ही काफ़िरों और मोमिनों की लड़ाई में किसी प्रकार का हस्तक्षेप करेगा। यदि कोई व्यक्ति किसी मुसलमान की अनुचित रूप से हत्या कर दे, तो सभी मुसलमान उसके विरुद्ध एकजुट होकर कार्य करेंगे। यदि कोई मुश्रिक दुश्मन मदीना पर आक्रमण करे, तो यहूदी मुसलमानों का साथ देंगे और अपने हिस्से का युद्ध-व्यय वहन करेंगे। मदीना के जिन यहूदी क़बीलों ने विभिन्न क़बीलों के साथ समझौता किया है, उनके अधिकार मुसलमानों के अधिकारों के समान होंगे। यहूदी अपने धर्म पर कायम रहेंगे और मुसलमान अपने धर्म पर कायम रहेंगे। जो अधिकार यहूदियों को मिलेंगे, वही उनके अनुयायियों को भी प्राप्त होंगे। मदीना का कोई भी व्यक्ति मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की अनुमति के बिना कोई युद्ध आरम्भ नहीं करेगा। हाँ, इस शर्त के अधीन किसी व्यक्ति को उसके उचित प्रतिशोध से वंचित नहीं किया जाएगा। यहूदी अपने संगठन के खर्च स्वयं उठाएँगे, लेकिन युद्ध की स्थिति में दोनों मिलकर कार्य करेंगे। इस समझौते में शामिल सभी लोगों के लिए मदीना एक सम्मानित और सुरक्षित स्थान होगा। जो बाहरी लोग नगरवासियों का साथ देने आएँगे, उनके साथ भी वही व्यवहार किया जाएगा जो मूल नगरवासियों के साथ होगा। लेकिन मदीना के लोगों को यह अनुमति नहीं होगी कि वे किसी स्त्री को उसके रिश्तेदारों की अनुमति के बिना अपने घर में रखें। झगड़े और विवादों का निर्णय अल्लाह और उसके रसूल के पास प्रस्तुत किया जाएगा। मक्का वालों और उनके सहयोगी क़बीलों के साथ इस समझौते में शामिल लोग कोई अलग समझौता नहीं करेंगे, क्योंकि इस समझौते में शामिल सभी लोग मदीना के दुश्मनों के विरुद्ध पहले ही एकजुट हो चुके हैं। जिस प्रकार युद्ध अलग-अलग नहीं किया जाएगा, उसी प्रकार संधि भी अलग-अलग नहीं की जाएगी। लेकिन किसी को भी युद्ध में भाग लेने के लिए मजबूर नहीं किया जाएगा। हाँ, यदि कोई व्यक्ति अत्याचार करेगा, तो वह दंड का अधिकारी होगा। निस्संदेह अल्लाह नेक और धर्मपरायण लोगों का संरक्षक है और मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अल्लाह के रसूल हैं।"

(संदर्भ: दीबाचा तफ़्सीरुल-क़ुरआन, पृष्ठ 143–142, प्रकाशित क़ादियान, 2010 ई.)

धार्मिक सद्भाव के संदर्भ में आपके जीवन में सुलह हुदैबिया की घटना भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। आपने तौहीद (खुदा तआला की एकता) का संदेश देते हुए कभी किसी विरोध की परवाह नहीं की और न ही तौहीद के मामले में कभी किसी से समझौता किया। लेकिन कुछ परिस्थितियाँ ऐसी आईं जिनमें उचित सीमा तक रियायत दी जा सकती थी। आपने ऐसी रियायत दी और धार्मिक सद्भाव की भावना को बनाए रखते हुए सामने वाले पक्ष द्वारा रखी गई ऐसी शर्तों को भी स्वीकार कर लिया, जिन्हें आपके अनेक सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम भी सहज रूप से स्वीकार नहीं कर पा रहे थे। लेकिन आपकी इस सुलह ने अंततः परिस्थितियों को पूरी तरह बदल दिया।

उदाहरण के लिए, इस समझौते के दोनों पक्षों में से एक पक्ष के प्रमुख स्वयं मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम थे, लेकिन सामने वाले पक्ष ने आपके नाम "मुहम्मद" के साथ "रसूलुल्लाह" लिखना स्वीकार नहीं किया। यद्यपि आप उम्मी थे, फिर भी आपने दूसरे व्यक्ति से "रसूलुल्लाह" शब्द की पहचान करवाई और फिर अपने मुबारक हाथ से उसे मिटा दिया।

इस सुलहनामे के बारे में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं—

"अल्लाह के नाम पर मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और मक्का सरकार के प्रतिनिधि सुहैल बिन अम्र के बीच ये शांति की शर्तें तय हुईं। युद्ध दस वर्ष के लिए बंद रहेगा। जो व्यक्ति मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ मिलना चाहे या उनके साथ समझौता करना चाहे, वह ऐसा कर सकता है। और जो व्यक्ति क़ुरैश के साथ मिलना चाहे या उनसे समझौता करना चाहे, वह भी ऐसा कर सकता है। यदि कोई लड़का, जिसका पिता जीवित हो या जो अभी कम आयु का हो, अपने पिता या संरक्षक की अनुमति के बिना मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास आ जाए, तो उसे उसके पिता या संरक्षक के पास वापस भेज दिया जाएगा। लेकिन यदि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथियों में से कोई व्यक्ति क़ुरैश की ओर चला जाए, तो उसे वापस नहीं किया जाएगा। मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम इस वर्ष मक्का में प्रवेश किए बिना लौट जाएँगे। लेकिन अगले वर्ष मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और उनके साथी मक्का आ सकेंगे और तीन दिन वहाँ ठहरकर काबा का तवाफ़ कर सकेंगे। इस अवधि में क़ुरैश नगर छोड़कर पहाड़ी पर चले जाएँगे। लेकिन यह शर्त होगी कि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और उनके साथी मक्का में प्रवेश करें तो उनके पास कोई हथियार न हो, सिवाय उस हथियार के जो प्रत्येक यात्री अपने साथ रखता है, अर्थात् म्यान में रखी हुई तलवार।"

(दीबाचा तफ़्सीरुल-क़ुरआन, पृष्ठ 191)

यद्यपि धार्मिक सद्भाव का यह लचीला समझौता देखने में कुछ अन्य सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन को समझ में नहीं आया, लेकिन अल्लाह तआला ने इसी कार्य को "फ़त्ह-ए-मुबीन" अर्थात् स्पष्ट विजय बना दिया।

सुलह हुदैबिया की घटना तो मक्का के क़ुरैश या मक्का के मुश्रिकों से संबंधित थी। धार्मिक संसार का दूसरा बड़ा समूह ईसाइयों का है। ईसाइयों के साथ धार्मिक सद्भाव की मिसाल भी मानो सुलह हुदैबिया के बाद होने वाली घटनाओं और उसके परिणामों के रूप में सामने आई।

इस संक्षिप्त उल्लेख का विस्तार मौलाना दोस्त मुहम्मद साहिब शाहिद मरहूम इस प्रकार लिखते हैं :

"मक्का मुकर्रमा से यमन की ओर सात मंज़िल की दूरी पर नज़रान की ईसाई रियासत थी, जहाँ एक बहुत बड़ा गिरजाघर था। वे उसे "कअबिया-ए-नज़रान" कहते थे और उसे हरम-ए-काबा का समकक्ष समझते थे। यह कअबिया तीन सौ खालों से गुम्बद की शक्ल में बनाया गया था। अरब में ईसाइयों का कोई धार्मिक केंद्र उसका मुकाबला नहीं करता था। इस रियासत का प्रबंध तीन भागों में बँटा हुआ था। बाहरी और युद्ध संबंधी मामलों के प्रभारी को "सय्यिद" कहा जाता था। सांसारिक मामलों की ज़िम्मेदारी "आक़िब" के पास होती थी और धार्मिक मामलों का ज़िम्मेदार "उस्कुफ़" (लॉर्ड बिशप) कहलाता था। इन धार्मिक नेताओं की नियुक्ति स्वयं रोमन सम्राट किया करता था। (मुअजमुल बुलदान, जिल्द 8, पृष्ठ 963)

आनहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उन्हें अन्य बादशाहों के साथ एक प्रचारात्मक पत्र लिखा। उसके परिणामस्वरूप 7 हिजरी में नज़रान का एक भव्य प्रतिनिधिमंडल मदीना उपस्थित हुआ। यह प्रतिनिधिमंडल साठ सदस्यों पर आधारित था और उसमें रियासत के तीन प्रमुख नेता भी शामिल थे। उनके नाम ये थे: अब्दुल मसीह (आक़िब), शरजील या असीम (सय्यिद), और अबू हारिसा बिन अलक़मा (उस्कुफ़)। यह प्रतिनिधिमंडल शाही ठाठ-बाठ और सम्मान के साथ आनहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सेवा में उपस्थित हुआ। आनहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उन्हें मस्जिद-ए-नबवी में ठहराया। थोड़ी देर बाद उनकी नमाज़ का समय हुआ, तो अमन के पैग़म्बर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की अनुमति से उन्होंने मस्जिद-ए-नबवी में ही अपनी विशेष उपासना की।"

(संदर्भ: वफ़ात-ए-मसीह और इहया-ए-इस्लाम, पृष्ठ 24, प्रकाशित रब्वा, दिसंबर 1979; मौलाना दोस्त मुहम्मद साहिब शाहिद)

फिर फ़त्ह मक्का का गौरवपूर्ण दौर भी आया। उस समय आपके सामने ऐसे लोग भी थे जिन्होंने बड़े-बड़े युद्ध अपराध किए थे। उनमें से कुछ को दंड देना न्याय की दृष्टि से उचित था, लेकिन उनमें से भी कुछ को आपने अपनी महान उदारता से क्षमा कर दिया। विशेष रूप से इकरिमा बिन अबू जहल का प्रसंग उल्लेखनीय है। उन्हें भी सुरक्षा प्रदान कर दी गई। उन्हें उनके अपने धर्म पर रहते हुए भी शांति और सुरक्षा दी गई।

इसके बाद हज्जतुल विदा का अवसर आया। इस अवसर पर आपने विश्वव्यापी शांति के आदेशों की घोषणा की। फिर आपने यह भी निर्देश दिया कि इस घोषणा को आगे दूर-दूर तक, समय और स्थान की सीमाओं से परे पहुँचाया जाए।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु इस ख़ुत्बा-ए-हज्जतुल विदा का उल्लेख करते हुए फ़रमाते हैं :

"तुम सभी मनुष्य, चाहे किसी भी जाति के हो और किसी भी स्थिति के हो, मनुष्य होने के नाते एक समान दर्जा रखते हो।"

यह कहते हुए आपने अपने दोनों हाथ उठाए और दोनों हाथों की उँगलियों को आपस में मिला दिया और कहा, "जिस प्रकार इन दोनों हाथों की उँगलियाँ आपस में बराबर हैं, उसी प्रकार तुम समस्त मानव जाति भी आपस में बराबर हो। तुम्हें एक-दूसरे पर श्रेष्ठता जताने या अपना ऊँचा दर्जा दिखाने का कोई

शेष पृष्ठ 22 पर

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का ऑस्ट्रेलिया दौरा 2013

सिडनी से ब्रिस्बेन के लिए प्रस्थान। ब्रिस्बेन में जमाअत के सदस्यों द्वारा हुज़ूर अनवर का अत्यंत प्रेम और उत्साह के साथ स्वागत। ब्रिस्बेन के अहमदिया सेंटर का निरीक्षण। "मस्जिद मसरूर" (ब्रिस्बेन) के उद्घाटन के संबंध में विशेष समारोह।

यह हमारा सौभाग्य है और हमारे लिए सम्मान की बात है कि ख़लीफ़तुल मसीह हमारे पास तशरीफ़ लाए हैं।

आपका संदेश एक जीवंत संदेश है और आपकी कम्युनिटी इस संदेश को न केवल समझती है, बल्कि हर दिन अपने आचरण के माध्यम से इसे फैलाने का प्रयास भी करती है।

अहमदिया मुस्लिम कम्युनिटी, जो एक अलग संस्कृति और धार्मिक मूल्यों का प्रतिनिधित्व करती है, हमारे साथ मिलकर काम करती है और सभी लोगों के साथ सम्मानपूर्वक व्यवहार करती है। आप लोग उच्च नैतिक साहस का परिचय देते हैं।

(समारोह में कुछ विशिष्ट अतिथियों के संबोधन)

अल्लाह तआला ने मुसलमानों को लोगों के अधिकारों (हुक़ूक़ुल इबाद) की अदायगी, समस्त मानवता की सेवा और हमेशा न्याय से काम लेने का आदेश दिया है। यदि कोई व्यक्ति इन महत्वपूर्ण मूल्यों को अपने दैनिक जीवन में अपनाने में असफल रहता है, लेकिन इसके बावजूद नियमित रूप से मस्जिद आता है, तो उसकी इबादत व्यर्थ होगी और निराशा का कारण बनेगी।

सच्ची इबादत का तकाज़ा यह है कि निःस्वार्थ भाव से लोगों के अधिकारों की अदायगी की जाए। लोगों के अधिकारों (हुक़ूक़ुल इबाद) और अल्लाह तआला की इबादत के बीच एक अत्यंत सूक्ष्म और गहरा संबंध है।

हमारे दिलों में मौजूद प्रेम और मानवता के प्रति सहानुभूति ही वह भावना है, जिसके कारण अहमदिया जमाअत हर स्तर पर दुनिया के नेताओं का ध्यान विश्व में शांति और न्याय की स्थापना की ओर आकर्षित कर रही है।

("मस्जिद मसरूर" के उद्घाटन के अवसर पर आयोजित समारोह में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला का संबोधन)

इस संबोधन ने इस मस्जिद के संबंध में सभी को संतुष्ट कर दिया।

आपका आकर्षक संदेश अत्यंत बुद्धिमत्ता से परिपूर्ण था।

हुज़ूर अनवर एक वैश्विक नेता हैं। आपका संबोधन अत्यंत असाधारण था।

आपके संदेश में पूरी दुनिया के लिए आशा की एक किरण थी।

(समारोह में शामिल अतिथियों की प्रतिक्रियाएँ)

व्यक्तिगत एवं पारिवारिक मुलाकातें। मस्जिद मसरूर, ब्रिस्बेन का जुमे के ख़ुत्बे के साथ उद्घाटन। आमीन समारोह। ब्रिस्बेन के उपनगरीय क्षेत्र का भ्रमण। निकाह की घोषणा। ब्रिस्बेन से सिडनी वापसी।

21 अक्टूबर, सोमवार 2013

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ प्रातः 5 बजकर 10 मिनट पर "मस्जिद बैतुल हुदा" तशरीफ़ लाए और फ़ज्र की नमाज़ पढ़ाई। नमाज़ अदा करने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपनी रिहाइशगाह पर तशरीफ़ ले गए।

सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने दुनिया के विभिन्न देशों से प्राप्त डाक, फ़ैक्स, पत्र और रिपोर्टों का अवलोकन किया तथा आवश्यक निर्देश प्रदान किए।

11 बजकर 20 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने कार्यालय तशरीफ़ लाए। मौलवी नज़ीरुल हसन थानवी साहब हुज़ूर अनवर से मिलने के लिए आए हुए थे। अतः उन्होंने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला से मुलाकात की। यह मुलाकात लगभग 20 मिनट तक जारी रही। इसके बाद हुज़ूर अनवर अपनी रिहाइशगाह पर तशरीफ़ ले गए।

सिडनी के उपनगरीय क्षेत्र का भ्रमण

आज सिडनी जमाअत ने सिडनी शहर के एक मनोहारी स्थान पर भ्रमण का कार्यक्रम बनाया था। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ दोपहर 1 बजे अपनी रिहाइशगाह से बाहर तशरीफ़ लाए और भ्रमण के लिए प्रस्थान किया।

सिडनी शहर के एक ओर "मस्जिद बैतुल हुदा" से लगभग सवा घंटे की दूरी पर समुद्र के किनारे हरे-भरे पहाड़ों की एक लंबी श्रृंखला है। इन पहाड़ों और समुद्र के बीच अनेक बस्तियाँ बसी हुई हैं। यह पूरा क्षेत्र अत्यंत सुंदर है और मनमोहक घाटियों से भरा हुआ है। यहाँ एक ऊँचे स्थान पर स्थित Panorama House नामक रेस्तराँ में कार्यक्रम के अनुसार दोपहर का भोजन किया गया। इसके बाद वहाँ से प्रस्थान करके हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला ने विभिन्न स्थानों से इस सुंदर क्षेत्र का अवलोकन किया, उसकी वीडियो भी बनाई तथा कुछ समय तक वहाँ भ्रमण किया।

4 बजकर 45 मिनट पर वहाँ से वापसी के लिए प्रस्थान हुआ और शाम 6 बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ "मस्जिद बैतुल हुदा" तशरीफ़ लाए। इसके बाद कुछ समय के लिए अपनी रिहाइशगाह पर तशरीफ़ ले गए।

आज ख़ुद्दामुल अहमदिया ऑस्ट्रेलिया ने एक फ़ुटबॉल मैच आयोजित किया था। ख़ुद्दाम की दो टीमें बनाई गई थीं। एक टीम में 30 वर्ष से अधिक आयु के ख़ुद्दाम थे और दूसरी टीम में 30 वर्ष से कम आयु के ख़ुद्दाम शामिल थे।

6 बजकर 50 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ स्नेहपूर्वक अपने ख़ुद्दाम का यह मैच देखने के लिए तशरीफ़ लाए। हुज़ूर अनवर के आगमन पर दोनों टीमें एक पंक्ति में खड़ी थीं। हुज़ूर अनवर ने सभी खिलाड़ियों से हाथ मिलाकर उन्हें सम्मान प्रदान किया और मैच शुरू होने से पहले दुआ करवाई। मैच की अवधि लगभग आधा घंटा थी। मैच बराबरी पर समाप्त हुआ, जिसके बाद पेनल्टी शूटआउट के माध्यम से 30 वर्ष से अधिक आयु वाले खिलाड़ियों की टीम विजेता बनी।

हुज़ूर अनवर ने स्नेहपूर्वक विजेता टीम को ट्रॉफ़ी प्रदान की तथा दोनों टीमों के खिलाड़ियों को पुरस्कार भी दिए। इसके बाद दोनों टीमों के खिलाड़ियों ने एक बार फिर हुज़ूर अनवर से हाथ मिलाने का सम्मान प्राप्त किया और अलग-अलग समूहों में तस्वीरें भी खिंचवाईं। दोनों टीमें फ़िजी द्वीपसमूह और पाकिस्तान से संबंध रखने वाले उन ख़ुद्दाम पर आधारित थीं, जो अब ऑस्ट्रेलिया में ही बस चुके हैं।

मैच के दौरान एक ख़ादिम को चोट लग गई थी। वापसी के समय हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ स्नेहपूर्वक उस ख़ादिम के पास तशरीफ़ ले गए, जिसे मैदान के बाहर चिकित्सकीय सहायता दी जा रही थी, और उसका हालचाल पूछा। फ़िजी का वह ख़ादिम कितना सौभाग्यशाली था कि उसे अपने प्रिय आका की अपार ममता और प्रेम प्राप्त हुआ।

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ वहाँ से लौटते हुए लंगरखाना तशरीफ़ ले गए। हुज़ूर अनवर ने कर्मचारियों से शाम के भोजन के बारे में पूछा। भोजन में आलू-गोश्त और चावल आदि पकाए गए थे। इस अवसर पर लंगरखाने के सभी कर्मचारियों ने अपने प्रिय आका के साथ खड़े होकर तस्वीरें भी खिंचवाईं।

इसके बाद 7 बजकर 50 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ "मस्जिद बैतुल हुदा" तशरीफ़ लाए और मग़रिब तथा इशा की नमाज़ें एक साथ अदा कराईं। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपनी रिहाइशगाह पर तशरीफ़ ले गए। शेष

★ ★ ★

हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का जीवन व्यक्ति से समाज तक सुधार की एक संपूर्ण व्यवस्था

(मुहम्मद उमर तीमापुरी, मैसूर, कर्नाटक)

पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ऐसे समय में पैदा हुए जब शिर्क (अल्लाह के साथ दूसरों को साझी ठहराना) और मूर्ति-पूजा आम थी। कुफ़्र और गुमराही का हर तरफ़ बोलबाला था। भौतिकवाद और अल्लाह तआला के आदेशों से विद्रोह लोगों की आदत बन चुका था। गुमराही को ही सही रास्ता समझा जाता था और समाज में हर वह बुराई मौजूद थी जो इंसानियत के ख़िलाफ़ है। लेकिन ऐसे हालात और ऐसे वातावरण में भी हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने पूरे चालीस वर्ष अत्यंत पवित्रता, शालीनता और श्रेष्ठ चरित्र के साथ जीवन बिताया। आपकी शख़्सियत और आपका चरित्र लोगों के आकर्षण का केंद्र बने रहे। लेन-देन में आप सच्चे और भरोसेमंद थे। आम लोग आपकी बातें ध्यान से सुनते, आपसे सलाह लेते और अपनी अमानतें आपके पास सुरक्षित रखते थे। अर्थात् उत्तम चरित्र के सभी आदर्श आपकी पवित्र जीवन-चर्या में मौजूद थे।

इतिहास इस बात का गवाह है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने जन्म से लेकर अपनी वफ़ात तक अरब समाज और उसके आसपास के वातावरण की बुराइयों का ज़रा भी प्रभाव अपने ऊपर नहीं पड़ने दिया। बल्कि इसके विपरीत, आपने लगातार चालीस वर्षों तक समाज की बुराइयों और भ्रष्टाचार को देखा और मन ही मन सोचते रहे कि इन बुराइयों और भ्रष्टाचार को कैसे समाप्त किया जाए। स्पष्ट है कि एक बेहतर और उपयोगी जीवन तथा एक पवित्र समाज की स्थापना के लिए एक क्रांति की आवश्यकता थी, और वही क्रांति आपने पैदा की। इसलिए आपने ऐसे संपूर्ण और सर्वश्रेष्ठ सुधारात्मक व्यवस्था की नींव रखी जिसकी कोई मिसाल नहीं मिलती। ऐसी व्यवस्था जो केवल पूरी दुनिया के लिए स्वीकार करने योग्य ही नहीं बल्कि व्यवहार में लाने योग्य भी है। यह मानव स्वभाव के बिल्कुल अनुकूल है और इस पर अमल करना सभी के लिए आसान है। यदि इस पर अमल किया जाए तो न केवल बुराइयाँ समाप्त हो जाएँगी बल्कि पूरी मानवता को शांति और सुरक्षित जीवन जीने का अवसर मिलेगा।

आपके पवित्र प्रकट होने से पहले पूरी दुनिया में मालिक और ग़ुलाम के बीच बहुत बड़ा अंतर था। राजा और शासक स्वयं को ख़ुदा तआला की छाया कहलवाते थे। वे ख़ुदा तआलीय अधिकार अपने हाथों में लिए हुए थे। वे जीवन और मृत्यु तक के मालिक बने बैठे थे। उनके मुँह से निकला हर शब्द कानून माना जाता था। उनके हर आदेश का पालन करना आवश्यक था। समाज विभिन्न वर्गों में बँटा हुआ था। ऊँचे और प्रतिष्ठित वर्ग के लोग हर प्रकार के कानून से ऊपर समझे जाते थे। जबकि कमज़ोर, गरीब और असहाय लोग गरीबी और अभाव का जीवन जीने पर मजबूर थे। इंसानियत लगभग समाप्त हो चुकी थी। जाति-पाँति की बनाई हुई दीवारों और ऊँच-नीच के झूठे भेदभाव की जंजीरों में समाज जकड़ा हुआ था।

मानवता के उपकारक पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने इन सभी सीमाओं और भेदभावों को समाप्त कर दिया और लोगों को उनकी छीनी हुई इज़्ज़त और सम्मान वापस दिलाया। इंसानियत को सम्मान मिला, मानव समानता को बढ़ावा मिला और आपने खुले शब्दों में यह घोषणा की—

"लोगो! सावधान हो जाओ। तुम्हारा पालनहार एक है। तुम्हारे आदि पिता हज़रत आदम अलैहिस्सलाम एक ही हैं। ध्यान से सुन लो, किसी अरबी को किसी गैर-अरबी पर, किसी गैर-अरबी को किसी अरबी पर, किसी गोरे को किसी काले पर और किसी काले को किसी गोरे पर कोई श्रेष्ठता नहीं है।

'इन्ना अकरमकुम इन्दल्लाहि अत्क़ाकुम'।

अर्थात् अल्लाह के निकट वही सबसे अधिक सम्मानित है जो सबसे अधिक धर्मपरायण और परहेज़गार है।"

श्रेष्ठता न तो जाति, रंग, भाषा, देश, धन-दौलत या गरीबी-अमीरी पर निर्भर करती है। अल्लाह के निकट अच्छी नीयत, अच्छे कर्म और अच्छा चरित्र ही महानता और सम्मान का आधार हैं।

आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि कानून की नज़र में छोटा-बड़ा, नौकर-मालिक, ग़ुलाम-स्वामी, गरीब-अमीर, प्रजा-शासक—सभी बराबर हैं। सभी पर अल्लाह की बंदगी और उसकी आज्ञाकारिता समान रूप से आवश्यक और अनिवार्य है। किसी सेनापति, शासक या धार्मिक नेता को यह अधिकार नहीं कि वह लोगों को अल्लाह के बजाय अपनी आज्ञा का पालन करने पर मजबूर करे।

सभी इंसान बराबर हैं।

"कुल्लुकुम अबनाऊ आदम, व आदमु मिन तुराब।"

अर्थात् तुम सब आदम की संतान हो और आदम को मिट्टी से पैदा किया गया था।

सच्चे मार्गदर्शक ने अपने प्राणों के दुश्मनों को भी भाईचारे और प्रेम के सूत्र में बाँध दिया तथा इस्लाम स्वीकार करने वालों को आपस में भाई बना दिया। द्वेष, शत्रुता और वैरभाव का अंत कर दिया। इंसानों के साथ दया और करुणा का व्यवहार करने का संदेश दिया। मानव जीवन, संपत्ति और सम्मान की पवित्रता का पाठ पढ़ाया। युद्ध के मैदान में भी मुसलमानों को अत्याचार से बचने की ताकीद की। असहाय और निर्दोष लोगों की हत्या करने तथा युद्धबंदियों को सताने से मना किया।

पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के आने से पहले समाज में स्त्री को कोई सम्मान या स्थान प्राप्त नहीं था। हर जगह स्त्री को तुच्छ समझा जाता था। उसे केवल दासी का दर्जा दिया गया था। वह केवल बाज़ार में बिकने और लोगों को आकर्षित करने की वस्तु समझी जाती थी। आपने स्त्री को अपमान और हीनता की गहराइयों से निकालकर पुरुष के बराबर सम्मान का स्थान दिया। उसे मानवता का आधा भाग घोषित किया। उसे अपनी कमाई का अधिकार दिया और संपत्ति में हिस्सा दिलाया। माँ, पत्नी, बेटी और बहन—हर रूप में उसके सम्मान को बढ़ाया। आपने पुरुष और स्त्री दोनों को एक-दूसरे की आवश्यकता और मानसिक शांति का साधन बताया। स्त्री की पवित्रता और सम्मान की रक्षा करना सिखाया। धार्मिक और सांसारिक शिक्षा प्राप्त करने में स्त्री को पुरुष के समान अधिकार दिया। आपने नेक कार्यों और भलाई के मामलों में पुरुष और स्त्री के बीच का भेद मिटा दिया। आपने फ़रमाया कि अल्लाह तआला धर्मपरायणता और परहेज़गारी को देखता है, यह नहीं देखता कि कौन पुरुष है और कौन स्त्री।

हज्जतुल विदा (विदाई हज) के अवसर पर आपने फ़रमाया

"औरतों के बारे में अल्लाह से डरो। तुम्हारा उन पर अधिकार है और उनका तुम पर अधिकार है।"

इसी प्रकार आपने दासों और दासियों को आज़ाद करने तथा उनके साथ अच्छा व्यवहार करने की ताकीद की। सदियों से चली आ रही इस पुरानी प्रथा को समाप्त कर दिया। आपने अपने ही समय में पर्दे की व्यवस्था को बढ़ावा दिया। गैर-महरम पुरुषों और स्त्रियों के मिश्रित जमावड़ों को पसंद नहीं किया जाता था। फिर भी स्त्रियाँ पर्दे का ध्यान रखते हुए सामाजिक कार्यों में भाग लेती थीं। वे केवल मस्जिदों में ख़ुत्बे (उपदेश) ही नहीं सुनती थीं बल्कि आवश्यकता पड़ने पर युद्धों में भी भाग लेती थीं।

पैग़म्बरी मिलने से पहले अरब समाज की धार्मिक स्थिति भी अत्यंत खराब थी। वहाँ 360 मूर्तियों की पूजा की जाती थी। सबसे बड़ा और महान सुधारात्मक कार्य जो आपने किया, वह यह था कि लोगों के दिलों में एकेश्वरवाद (तौहीद) का विश्वास स्थापित किया। आख़िरत में जवाबदेही का विश्वास आम किया। लोगों के दिलों और आत्माओं को पवित्र बनाया। लोगों को अल्लाह के आदेशों का पालन करने के लिए तैयार किया। उनके दिलों को नेकी और भलाई की ओर झुकाया। एकमात्र अल्लाह की उपासना और उसके बंदों की सेवा का भाव पैदा किया। बुरे और नापसंद कामों से घृणा करना सिखाया। शर्म, हया, पवित्रता और चरित्र की रक्षा को ईमान का आवश्यक भाग बताया। इस प्रकार एक पवित्र समाज के निर्माण में आपने उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की।

आपने व्यक्ति के अधिकारों और कर्तव्यों के साथ-साथ पारिवारिक जीवन को बेहतर बनाने के सिद्धांत भी बताए। परिवार की स्थापना में पुरुष और स्त्री के कर्तव्यों तथा माता-पिता, पुत्र, पुत्री, भाई और बहन के बीच संबंधों को स्पष्ट किया। विवाह को एक उत्तम और पसंदीदा कार्य घोषित किया। इन कदमों से समाज के वातावरण पर अत्यंत सकारात्मक प्रभाव पड़ा।

इस अद्वितीय और विश्वविख्यात सफलता के बावजूद आपने कभी स्वयं को एक स्वतंत्र सम्राट के रूप में प्रस्तुत नहीं किया। यह आपकी अमर महानता का एक ऐसा प्रमाण है जिसे नकारा नहीं जा सकता। एक नबी के रूप में आपने शासन का जो आदर्श प्रस्तुत किया, वह एक कल्याणकारी राज्य का सर्वोत्तम संविधान था। इस्लामी समाज को एक संगठित राज्य का रूप देने तथा उसके निर्माण और विकास के लिए आपने जो कदम उठाए, वे क़यामत तक आने वाले शासकों के लिए मार्गदर्शक बने रहेंगे। आपने अरबों की क़बीलाई संकीर्णताओं को समाप्त करके उन्हें सीसे की तरह मज़बूत और एकजुट दीवार बना दिया। उनके सामने जीवन का सर्वोच्च उद्देश्य रखा और उस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए उन्हें सक्रिय भी किया।

अल्लाहुम्मा सल्लि अला मुहम्मद व अला आले मुहम्मद व बारिक व सल्लिम।

हे अल्लाह! मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और उनकी आल (परिवार) पर अपनी रहमतें नाज़िल कर, उन पर बरकत प्रदान कर और उन्हें सलामती अता फ़रमा।

★ ★ ★

Editor: Shaikh Mujahid Ahmad
Dy. Editor: Syed Mohiuddin Farid
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.akhbarbadr.in

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2026-2028 Vol. 11 Thursday 23-30 July 2026 Issue No. 30-31

Act. Manager
Athar Ahmad Shamim
Mobile : +91-9815639670
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com
www.alislam.org/badr

सीरतुल-महदी

(लेखक: हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब एम.ए रज़ियल्लाहु अन्हु)

{78}बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम।

यह विनम्र निवेदन है कि जिन दिनों हमारे छोटे भाई मुबारक अहमद बीमार थे, एक बार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हज़रत मौलवी नूरुद्दीन साहिब, ख़लीफ़ा-ए-अव्वल को उन्हें देखने के लिए घर बुलाया। उस समय हुज़ूर आँगन में एक चारपाई पर विराजमान थे और आँगन में कोई फ़र्श आदि नहीं बिछा था।

मौलवी साहिब आते ही आपकी चारपाई के पास ज़मीन पर बैठ गए। हज़रत साहिब ने फ़रमाया, "मौलवी साहिब, चारपाई पर बैठिए।" मौलवी साहिब ने अर्ज़ किया, "हुज़ूर, मैं बैठा हूँ।" और थोड़ा-सा ऊपर होकर अपना हाथ चारपाई पर रख लिया। लेकिन जब हज़रत साहिब ने दोबारा फ़रमाया तो मौलवी साहिब उठकर चारपाई के एक किनारे, पायंती की ओर बैठ गए। यह विनम्र निवेदन है कि हज़रत मौलवी साहिब में आज्ञापालन और आदर का भाव सर्वोच्च स्तर पर था।

{79}बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी अय्यदहुल्लाहु तआला ने बयान फ़रमाया कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के समय में जमाअत अहमदिया कपूरथला और वहाँ के ग़ैर-अहमदियों के बीच एक मस्जिद के संबंध में मुक़दमा चल पड़ा।

जिस न्यायाधीश के पास यह मुक़दमा गया, वह स्वयं ग़ैर-अहमदी था और विरोधी भी था। उसने इस मुक़दमे में पक्षपातपूर्ण रवैया अपनाना शुरू कर दिया।

इस स्थिति में कपूरथला की जमाअत घबरा गई और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को पत्र लिखकर दुआ की प्रार्थना की। हज़रत साहिब ने उन्हें उत्तर लिखा:

"यदि मैं सच्चा हूँ, तो मस्जिद तुम्हें मिल जाएगी।" लेकिन न्यायाधीश ने अपना विरोधपूर्ण रवैया जारी रखा। अंततः उसने अहमदियों के विरुद्ध फ़ैसला लिख दिया।

जिस दिन उसे फ़ैसला सुनाना था, उस दिन वह सुबह कपड़े पहनकर अपनी कोठी के बरामदे में निकला और अपने नौकर से कहा कि उसे जूते पहनाए। वह एक कुर्सी पर बैठ गया। नौकर ने जूते पहनाकर उनके फीते बाँधने शुरू किए ही थे कि अचानक उसे "खट" जैसी आवाज़ सुनाई दी। उसने ऊपर देखा तो पाया कि उसका मालिक सहारे के बिना कुर्सी पर औंधा गिर पड़ा है। जब उसने हाथ लगाकर देखा तो मालूम हुआ कि वह मर चुका है। अचानक उसका हृदय रुक गया था और उसकी मृत्यु हो गई थी। उसके स्थान पर एक हिंदू न्यायाधीश नियुक्त किया गया। उसने पहले न्यायाधीश द्वारा लिखे गए फ़ैसले को काट दिया और अहमदियों के पक्ष में निर्णय दे दिया। यह विनम्र निवेदन है कि मौलवी मुहम्मद इस्माईल साहिब, मौलवी फ़ाज़िल ने मुझसे उल्लेख किया कि मैं एक बार कपूरथला गया था। वहाँ मैंने देखा कि वहाँ की जमाअत ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का यह वाक्य—

"यदि मैं सच्चा हूँ, तो मस्जिद तुम्हें मिल जाएगी।" बहुत सुंदर और बड़े अक्षरों में लिखवाकर उसी मस्जिद में लगवा रखा है।

यह विनम्र निवेदन है कि कपूरथला की जमाअत बहुत पुरानी जमाअत है और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पुराने और सच्चे अनुयायियों में से है।

मैंने यह भी सुना है कि उनके पास हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की एक लिखित पर्ची है, जिसमें लिखा है : "मुझे आशा है कि जिस प्रकार कपूरथला की जमाअत ने संसार में मेरा साथ दिया है, उसी प्रकार जन्नत में भी वह मेरे साथ होगी।"

{80}बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम।

मौलवी रहीम बख़्श साहिब एम.ए. ने मुझसे बयान किया कि मेरे दादा, जिन्हें लोग सामान्य रूप से "ख़लीफ़ा" कहा करते थे, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बहुत बड़े विरोधी थे। वे आपके बारे में बहुत अपशब्द कहा करते थे और मेरे वालिद साहिब को भी बहुत तंग करते थे। वालिद साहिब उनसे परेशान होकर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को दुआ के लिए पत्र लिखा। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की ओर से उत्तर आया

"हमने दुआ कर दी है।" वालिद साहिब ने यह पत्र पूरे मोहल्ले के लोगों को दिखाया और कहा : "हज़रत साहिब ने दुआ कर दी है। अब देख लेना, ख़लीफ़ा गालियाँ नहीं देगा।"

दूसरे या तीसरे दिन जुमा था। हमारे दादा अपनी आदत के अनुसार ग़ैर-अहमदियों के साथ जुमे की नमाज़ पढ़ने गए। लेकिन जब वहाँ से लौटे तो असाधारण रूप से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बारे में बिल्कुल चुप रहे। जबकि उनकी आदत थी कि जुमे की नमाज़ पढ़कर घर आने के बाद विशेष रूप से बहुत गालियाँ दिया करते थे।

लोगों ने उनसे पूछा, "आज तुम मिर्ज़ा साहिब के बारे में चुप क्यों हो?"

उन्होंने उत्तर दिया, "किसी के बारे में बुरा-भला कहने से क्या लाभ? आज मौलवी साहिब ने भी जुमे के ख़ुत्बे में कहा है कि चाहे कोई व्यक्ति कितना ही बुरा क्यों न हो, हमें उसके बारे में अपशब्द नहीं कहने चाहिए।"

लोगों ने कहा, "अच्छा! यह बात है? हमेशा तो तुम गालियाँ देते थे और आज तुम्हारा यह विचार कैसे हो गया? असल बात तो यह है कि बाबू (मेरे वालिद को लोग बाबू कहा करते थे) कल ही एक पत्र दिखा रहे थे कि वह क़ादियान से आया है और कह रहे थे कि अब ख़लीफ़ा गाली नहीं देगा।"

मौलवी रहीम बख़्श साहिब कहा करते थे कि इसके बाद, विरोधियों ने कई बार मेरे दादा को भड़काने की कोशिश की, लेकिन उन्होंने फिर कभी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बारे में अपशब्द नहीं कहे और न ही कभी मेरे वालिद साहिब को अहमदियत की वजह से तंग किया।

(इस रिवायत के संबंध में यह बात ध्यान देने योग्य है कि इसके रावी साहिब ने बाद में हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह के निर्देश के अनुसार अपना नाम "अब्दुर्रहीम" रख लिया था और सामान्यतः वे मौलवी अब्दुर्रहीम साहिब दर्द के नाम से जाने जाते हैं।)

{81}बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम।

मेरी वालिदा साहिबा ने मुझसे बयान किया कि जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को दौरे पड़ने शुरू हुए, तो उस वर्ष आपने पूरे रमज़ान के रोज़े नहीं रखे और उनका फ़िदया अदा कर दिया।

अगला रमज़ान आया तो आपने रोज़े रखने शुरू किए, लेकिन आठ-नौ रोज़े रखने के बाद फिर दौरा पड़ा। इसलिए बाकी रोज़े छोड़ दिए और उनका फ़िदया अदा कर दिया। इसके बाद जो रमज़ान आया, उसमें आपने दस-ग्यारह रोज़े रखे थे कि फिर दौरे की वजह से रोज़े छोड़ने पड़े और आपने उनका फ़िदया अदा कर दिया।

फिर जो रमज़ान आया, उसमें आपका तेरहवाँ रोज़ा था कि मग़रिब के क़रीब आपको दौरा पड़ा। आपने रोज़ा खोल दिया और उसके बाद शेष रोज़े नहीं रखे तथा उनका फ़िदया अदा कर दिया। इसके बाद जितने भी रमज़ान आए, आपने सभी रोज़े रखे। लेकिन फिर अपनी वफ़ात से दो-तीन वर्ष पहले कमज़ोरी के कारण आप रोज़े नहीं रख सके और उनका फ़िदया अदा करते रहे। मैंने पूछा कि जब आपने शुरू-शुरू में दौरे पड़ने के समय रोज़े छोड़े थे, तो क्या बाद में उनकी क़ज़ा की थी?

वालिदा साहिबा ने फ़रमाया, "नहीं, केवल फ़िदया अदा कर दिया था।"

यह विनम्र निवेदन है कि जब प्रारम्भ में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को सिर में चक्कर आने और हाथ-पैरों में कमजोरी के दौरे पड़ने शुरू हुए, तो उस समय आप बहुत कमज़ोर हो गए थे और आपका स्वास्थ्य भी ठीक नहीं रहता था। इसलिए जब आप रोज़े छोड़ते थे, तो ऐसा लगता था कि अगले रमज़ान तक भी उन्हें पूरा करने की शक्ति नहीं पाते थे। लेकिन जब अगला रमज़ान आता, तो इबादत के उत्साह में फिर रोज़े रखना शुरू कर देते थे। किंतु फिर दौरा पड़ जाता, तो रोज़े छोड़ देते थे और शेष रोज़ों का फ़िदया अदा कर देते थे। वल्लाहु आलम।

(अल्लाह ही सबसे अधिक जानता है।) शेष ..

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad